|| श्री शासनपति महावीराय नमः ||
|| गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरि गुरुभ्यो नमः ||

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | मार्च-2019

दिव्याशीष-लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

पुण्य सम्राट

गुरु भक्ति का अनमोल अवसर...

द्वितीय वार्षिक

पुण्य सप्तमी पर्वोत्सव

शुभ दिन-26 अप्रैल 2019

अ.भा. श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ
अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् परिवार

पूज्य श्री गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. व जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में आयोजन

विस्तृत सूचनाओं के लिए कवर पेज 3 व 4 देखें ।

3122

Received
10/3/19

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला-जालोर (राज.)
12. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट. सरसी जिला-रतलाम (म.प्र.)
13. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा, म.प्र.)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

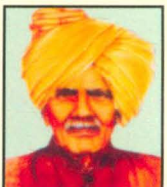

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

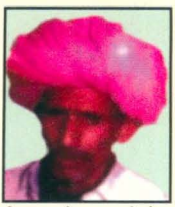

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा
दाधाल

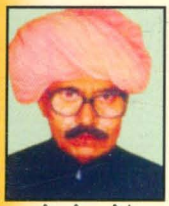

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

33979

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्दूर

कबदी जीतमलजी कुंदमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खींमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

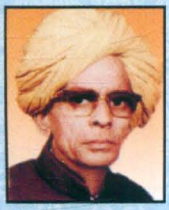

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

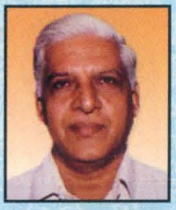

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. धेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्दुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

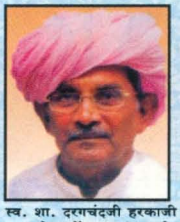

स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

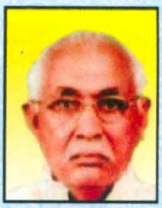

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी बीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

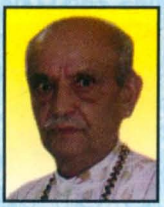

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा-थलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

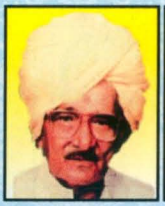

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

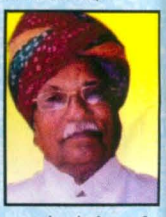

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

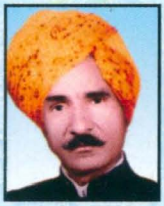

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

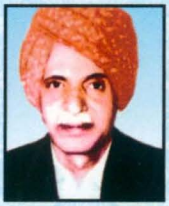

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धानसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाणाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री चेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आतासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

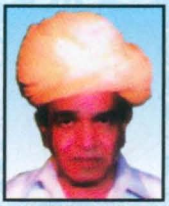

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
कोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तोलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाथाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सचु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डुंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी पुनीलालजी छाजेड़
नैनारा

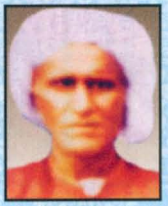
वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

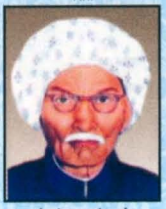
वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
मोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

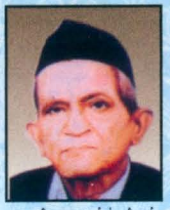
शाह श्री राजमल भाई डुंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नगतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थाद

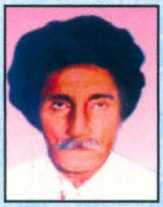
संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

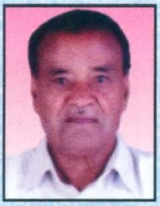
मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

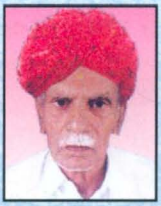
श्री मफतलालजी हंसराज वागिया, (वड़गामड़ा) डीसा

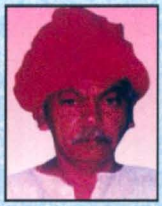
अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तहेरा कर्मडवाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी सेठिया, कुशलगढ़

दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी मेहता, कुशलगढ़

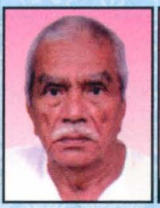
श्री मानसिंहजी राजगढ़

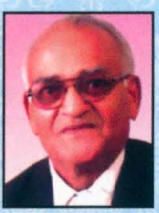
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय खाचरौद

कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

स्व.श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी सवनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपड़ा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी धभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

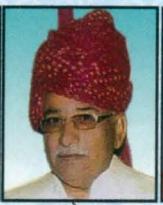

शाह सोहनलाल
मिश्रीचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोधा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
मार्च-2019 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 67 अंक 3
वीर सं. 2541 राजेन्द्र सं. 109 विक्रम सं. 2073

इस अंक का मूल्य	-	15 रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150 रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600 रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100 रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

मैं तो एक हूँ – वह मेरी आत्मा

मिथिला नरेश नमि के
शरीर पर दाहज्वर ने अधिपत्य कर लिया ।

इससे उसकी देह जलने लगी। वैद्यों ने चन्दन लेप की सलाह दी। रानियाँ स्वयं चन्दन घिस कर लेप तैयार करने लगी ।

चन्दन घिसते समय रानियों के हाथों में पहिने कंगन टकराकर शोर करते थे। इससे नमि की पीड़ा बढ़ जाती थी। नमि के दर्द को देखते हुए ।

मंत्री ने रानियों को सलाह दी कि –

हाथों में एक-एक कंगन रखकर शेष उतार देवें तो शोर नहीं होगा। ऐसा ही किया गया। नमि ने शोर बन्द होने पर पूछा। मंत्री से वास्तविकता जानकर

नमि के अन्तर की चिन्तनधारा ने एकदम दिशा पलट दी।

वह सोचने लगा

जहाँ अनेक है– वहां पीड़ा है। धन, राज्य, शरीर, परिवार अनेक को अपना मानने से यह दर्द है। मैं तो एक आत्मा हूँ। इसे भूल रहा हूँ अतएव दुःखी हूँ। एक की आराधना करूं तो मुझे कुछ नहीं । जो कुछ है वह शरीर को है जो मेरा नहीं है ।

नमि मुनि बन गये। इन्द्र तक ने उनके त्याग की प्रशंसा की।

नमि उग्र तपस्या से राजर्षि नमि बन गये। उनने सर्व कर्मों का क्षय कर केवलज्ञान प्राप्त कर लिया।

ये सिद्ध-बुद्ध-मुक्त-अगुरुलघु-अरूपी बन गये।

– सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1.	श्री जयंतसेन जयनाद (साध्वी श्री रुचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	9
2.	जयंतसेन जीवन झलक (5) (साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	11
3.	जयंतसेन जीवन झलक (7) (साध्वी रुचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	13
4.	गणधरवाद (लेखांक-63) (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	15
5.	अशुभ वचन योग (26) (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	18
6.	लघु कथाएँ (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	21
7.	प्रश्नोत्तरी	23
8.	जो संगठित है, वही जीवित है (जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	24
9.	शाकाहार दे सकता है सभी प्रोटीन (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा.)	25
10.	अध्यक्षीय पाती (वाघजीभाई वोरा)	27
11.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	28
12.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	29
13.	महाराजा श्रेणिक (मुनिराज डॉ. सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)	33
14.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	35
15.	मोक्षेण योजनाद योग (पुण्य सम्राट गुरुदेव श्री के शिष्यरत्न मुनिश्री निपुणरत्न विजय म.सा.)	36
16.	गुरु सप्तमी आगामी 25 वर्ष तक (संशोधक-मुनिश्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	39
17.	कालचक्र तथा उसके आरे (मुनिराज श्री प्रशमसेन विजयजी म.सा.)	40
18.	उमास्वाति और उनका तत्वार्थ सूत्र (डॉ. सागरमल जैन)	42
19.	उपाध्याय यशोविजयजी एवं द्वात्रिंशद द्वात्रिंशिका ग्रंथ (साध्वी श्री रुचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	44
20.	शास्त्रवार्ता समुच्चय ग्रंथ में सर्वज्ञता की सिद्धि (2) (साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	45
21.	गुजराती संभाग	49-61
22.	कुमकुम सने पगलिये	61-64
23.	श्रीसंघ सौरभ	66-71
24.	परिषद् प्रांगण से	72-81
25.	जैन विश्व	82
26.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	83-84

शांतिलाल रामानी
(संयोजक)

श्री जयंतसेन अपनी धुन में

(साध्वी- रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

ममता-वैभव को ठोकर मार
जयंतसैन अपनी धुन में
सत्य को खोजने चल पड़े हो
तुम आत्मा के आंगन में

उपसर्ग-परिषह की परवा नहीं
तुम विहरते निर्भय वन में
असिधार पर निकल पड़े हो
समता को ले संग में

कंचन-कामिनि का क्या जोर चले
तुम अटल अपने प्रण में
इक्कीसवीं सदी का उत्थान-पतन देख
तुम चले भारतीय संस्कृति के सर्जन में

भरते पशुओं की चित्कार
गूंज रही विश्व प्रांगण में
सर्व जीवों के रक्षक बन
तुम चले साधना-सदन में

बुझे हुए दीप की पीड़ा
भांप जाते तुम अपने मन में
पियुषवाणी बरसा करके
भरते हो अमृत अबोध जीवन में

जयंतसेन हस्ताक्षर

(भक्तों को पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रसादी रूप भेजे गये पत्रों का यहाँ क्रमशः प्रकाशन किया जायेगा)

सुश्रावक श्री पारसजी, विजया लोढ़ा सपरिवार।

धर्मलाभ। पत्र मिला।
पू. प्रा. गुरुदेव श्री की परम पावनी कृपा से मुनिमंडल सह हम सुखशाता में हैं।
संघ में उत्साह, उमंग का वातावरण है।
बेंगलोर प्रवेश भारी उल्लास पूर्ण वातावरण में हुआ था। भारतवर्ष के गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु से हजारों गुरुभक्तों ने आकर गुरुगच्छ की गरिमा में अभिवृद्धि की।
मुनिश्री चारित्ररत्नविजयजी को आज ४० वां उपवास है। सुखशाता से आगे बढ़ रहे हैं।
साध्वीजी भक्तिरसाश्रीजी को सिद्धितप चल रहा है। नगर में मासखमण, सिद्धितप ५० ऊपर भाविक कर रहे हैं। सभी सुखशाता में हैं।
परदेशी नृप तप ६६५ भावुक कर रहे हैं।
सांकली तेला निरंतर चल रहे हैं।
श्रमणोपासक श्रावकों में २५ लोच हो गये हैं। ५ वर्ष के छोटे बच्चों ने लोच करवा कर सभी को प्रेरणा दी। आगे भी लोच करवाने वालों की संख्या बढ़ रही है। मुनिमंडल, साध्वीमंडल सुखशाता में हैं। सभी के तरफ से धर्मलाभ बोल करें। सभी को धर्मलाभ कहें। महापर्व आराधना दि. ११।९ से शुरु हो [illegible] हुई।
धर्म उद्यम रखें।

बेंगलोर दि. [illegible]।२००६ [illegible]

चातुर्मास - 2006 : श्री यतीन्द्र भवन
२१०/२११, रंगस्वामी टेम्पल स्ट्रीट, जोधपुर स्वीट के पास, बेंगलौर-५६००५३ (फोन : (080) 2225 4080)

सपना हुए साकार

(साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

जे मार्ग नी महिमा वदे तीर्थंकरों निज वाणीमां ।
जे मार्ग नी महिमा गुंथे श्री गणधरो निज ग्रंथमां ।
जे मार्ग नी महिमा कहे सौ मुनिवरों उपदेशमां ।
ए परम संयम धर्म ने हौजो सदा मुज वंदना ।।

जिस मार्ग की महिमा तीर्थंकर भी अपनी देशना में बताते हैं, गणधर भगवंत अपने ग्रंथ में गूंथते हैं, मुनिवर भी जिसका उपदेश देते हैं ऐसा परम, पवित्र, मिष्पा, आनंदमय मार्ग है सर्वविरति... दीक्षा...चारित्र...संयम मार्ग...

संयम जीवन यानी आत्म उद्धार का मार्ग...

संयम जीवन यानी मनुष्य भव रूपी वृक्ष का शुभ और सुगंधी पुष्प...

संयम जीवन यानी सामने चलकर कष्टों को सहन करने का मार्ग...

संयम जीवन यानी पुद्गल की कम से कम अपेक्षा रखने का मार्ग...

संयम जीवन यानी संचित किये हुए कर्मों को खाली करने का मार्ग...

संयम जीवन यानी मैं और मेरा भूल जाने की साधना

संयम जीवन यानी अनुकूल और प्रतिकूल परिषहों पर विजय प्राप्त करने का सुन्दर मार्ग....

संयम जीवन यानी अनन्त सुख का मार्ग...

संयम जीवन यानी अपने मन को गुरु चरणों में समर्पित करने का मार्ग

जहाँ संसारी जीवों की आत्मा विषय-वासना, भोग-सुख रूपी गटर में डूब रही है... तुच्छ, मूल्यहीन, क्षणभंगुर, नाशवान, अशाश्वत ऐसे नश्वर पदार्थों के पीछे तथा पौद्गालिक सुखों को प्राप्त करने के पीछे पागल हो रही है। इन्द्रियों में आसक्त हो रही है...और दुर्लभ ऐसे मनुष्य भव को बर्बाद कर रही है और यहाँ इन मुमुक्षु आत्माओं ने मोह-दुख से ठसा-ठस भरे हुए इस संसार में लेशमात्र भी सुख नहीं है...सांसारिक सुख अशाश्वत है...दुखमय है...दुर्गति में ले जाकर गिराने वाला है... भव-भव में भटकाने

वाला है ऐसे असार संसार की स्वरूप की असारता का चिंतन करके, कर्मों को खपाकर शुद्ध-बुद्ध, निरंजन, निरूपम, चिदानंद, शाश्वत सुख, सिद्ध सुख को प्राप्त करने की तीव्रतम भावना भायी है।

आचाराङ्ग, निर्युक्ति में बताया है- लोक का सार है धर्म एवं धर्म का सार है ज्ञान, ज्ञान का सार है संयम और संयम का सार है मोक्ष (निर्वाण) इन आत्माओं ने वैराग्य से अपने मन को वासित करके, आत्मउद्धार करने के लिए उत्कृष्ट साधना मार्ग पर चलने का, सर्वविरति ग्रहण करके गुरु चरणों में अपना जीवन समर्पित करने का निर्णय किया।

पिपलौदा नगरी की पावनतम भूमि पर मुमुक्षुओं सहपरिवार दीक्षामुहूर्त ग्रहण करने के लिए परम उपकारी, गच्छाधिपति, दीक्षा दानेश्वरी राष्ट्रसंत आचार्य जयंतसेनसूरिजी गुरुदेव के पास आये। जब गुरुदेव ने श्री चतुर्विध संघ के समक्ष 11 मुमुक्षु आत्माओं को थराद नगरी में दीक्षा हेतु दिनांक 19.2.2017 का मुहूर्त प्रदान किया और गुरुदेव श्री ने फरमाया कि 15 दीक्षाएँ होने की संभावना है। उसके लगभग एक-दो दिन बाद मुझे स्वप्न आया कि गुरुदेव श्री 27 मुमुक्षुओं को मुहूर्त प्रदान कर रहे हैं। जब मैंने मेरे गुरुजी को यह सपना बताया तब गुरुजी ने कहा इतने सीमित समय में यह कैसे संभव है, 27 दीक्षाएँ यूँ ही हो जाए क्या ?? दीक्षा कोई खेल थोड़ी है ?? थोड़े ही दिन बाद समाचार मिलते हैं कि 15 दीक्षार्थी का मूहुर्त निकल गया... उसके बाद 21 दीक्षार्थियों का मुहूर्त निकला...फिर कुछ दिनों में 24, 25 तक की संख्य हो गयी। 2 मूहूर्त और निकले ऐसे करके गुरुदेव के प्रबल पुण्योदय से 27 मुमुक्षुओं का दीक्षा का मुहूर्त निकला। और गुरुदेव की कृपा से आज मेरा सपना साकार हुआ।

'गुरु जयंतसेन का गच्छ बढ़ा
वीर प्रभु का वंश बढ़ा
त्रिस्तुतिक में आनंद छाया
राजेन्द्र गुरु का नाम दिपाया
आज सपना साकार हुआ
गुरुदेव की कृपा से मेरा....'

जयन्तसेन जीवन झलक (7)

(साध्वी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

सन् 2012 खिमेल गाँव (राज.) में भगवान मुनिसुव्रत स्वामी की प्रतिष्ठा निष्पल की। देवविमान सदृश उस जिनमंदिर का निर्माण एवं प्रतिष्ठा श्री किशोरजी खिमावत की ओर से किया गया था। श्री किशोरजी त्रिस्तुतिक संघ के अध्यक्ष होने के साथ ही शासन भक्त और संघ के वफादार श्रावक भी थे। उन्होंने इस प्रतिष्ठा के अवसर पर विभिन्न वादक कलाकारों एवं चित्र-विचित्र झांकियों से सुसज्जित पू. गुरुदेव का अद्‌भूत और भव्य नगर प्रवेश करवाया। 500 वर्ष पूर्व पेथड़शाह मंत्री ने अपने गुरु पं. हेमचन्द्राचार्य महाराज का ऐसा भव्य नगर प्रवेश करवाया था। उन्होंने प्रतिष्ठामहोत्सव में खिमेल गाँव के आसपास के बावन गाँव की छत्तीस कौम को आमंत्रित किया। उनके लाने - लेजाने की सादर व्यवस्था की। लक्ष-लक्ष मानवों ने भगवान मुनिसुव्रत स्वामी की प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रसाद ग्रहण किया। इतना ही नहीं उन्होंने अपने गुरु श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरि म. की प्रेरणा से पाँच लाँख नीम के पेड़ लगाकर सम्पूर्ण राजस्थान की धरती को हरियाली चुनर ओढ़ाई। त्रिमूर्तिमंदिर कामरेज सूरत में श्री सीमंधरस्वामी की प्रतिष्ठा रूकी हुई थी वहां की शर्त थी कि, प्रतिष्ठा करने वाले आचार्य के नाम का उल्लेख नहीं किया जाएगा। वहां के सच्चिदानंद के ट्रस्टी एवं मंदिर निर्माता ने पू. गुरुदेव से विनन्ति की। पू. गुरुदेव ने सहर्ष स्वीकार कर प्रभु प्रतिष्ठा सम्पन्न की। अंजनशलाका, प्रतिष्ठा, संयम उत्सव, छःरि पालित संघ यात्रा, उपधान, 99 यात्रा ऊजमना, ओली आदि अनुष्ठान में प्रतिवर्ष निश्रा देते थे।

15 प्रांत आपके विहारक्षेत्र रहे। भारत के मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, उड़ीसा, बिहार, बंगाल, यू.पी. पांडिचेरी आदि प्रदेश में घुम कर आपने जैनध्वजा लहराई पू. गुरुदेव ने अपने जीवन काल में लगभग डेढ़ लाख कि.मी. का विहार किया। कड़कड़ाती ठंडी हो या आग उगलती गर्मी हो शारीरिक कष्टों की अवगणना करते हुए उनके चरण युगल संघ विकास के लिए सतत प्रवाहमान रहते थे। पू. गुरुदेव की सत्प्रेरणा से कोई 25 तीर्थों का निर्माण किया गया। श्री राजेन्द्रनगर तीर्थ नेल्लोर (एम.पी.) श्री महाविधेहधाम तीर्थ - चेन्नई (तमिलनाडु), श्री महाविदेहधाम तीर्थ डीसा (गुज.), श्री गुरुराज नवकार तीर्थ -

छत्राल (गुज.), श्री राजेन्द्रसूरि नवकार मंदिर शंखेश्वर तीर्थ (गुज.), श्री जयन्तसेन म्यूजियम श्री माहेनखेड़ा तीर्थ (म.प्र.), श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मंदिर ट्रस्ट- श्री भरतपुर (राज.) आदि आपकी शुभ प्रेरणा से महातीर्थ के रूप में रूपायित हुए। पूरे भारतभर में गाँव-गाँव में 200 से अधिक श्री राजेन्द्रसूरि गुरुमंदिरों का निर्माण करवाया गया। 25 महान तीर्थों के कुल 68 बार छः रि पालित संघ यात्रा आपके सान्निध्य में निष्पन्न हुई।

पू. गुरुदेव ने तीर्थों की रक्षा के लिए भी बहुत प्रयत्न किये। श्वेताम्बर - दिगंबर के विवाद में श्री सम्मेत शिखर तीर्थ का फैसला दिगंबर के पक्ष में होने वाला था। पू. गुरुदेव ने अखिल भारतीय नवयुवक परिषद को आह्वान किया। सभी सदस्यों ने भारत के राष्ट्रपति के नाम पत्र लिखे। राष्ट्रपति भी अपनी टेबल पर 10,000 पत्र देखकर आश्चर्य चकित हो गये कि यह ऐसी कौनसी संस्था है कि, जिसके इतने सदस्य हैं। फिर गुरुभक्त श्री चेतन्यजी काश्यप, पू. गुरुदेव का आशीर्वाद एवं पत्र लेकर राष्ट्रपति के पास पहुँचे एवं अपनी वाक् पटुता से श्री सम्मेतशिखर तीर्थ को बिहार राज्य से झारखण्ड में करवा लिया जिससे फैसला नहीं हो पाया।

पू. गुरुदेव ने दादा गुरुदेव राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की स्मृति में उज्जैन में राजेन्द्रसूरि शताब्दि शोध संस्थान की स्थापना की और उसके पश्चात् वहाँ राजराजेन्द्र जयंतसेनसूरि शिक्षा महाविद्यालय की स्थापना भी की।

कुक्षी, राणापुर, खाचरौद, बदनावर, पारा, अलीराजपुर एवं मंदसौर में आपकी प्रेरणा से राजेन्द्रसूरि महाविद्यालय एवं विद्यालय स्थापित किए गए जो आज सफलतापूर्वक चल रहे हैं। नवनीत के समान कोमल हृदय वाले पूज्य गुरुदेव किसी भी जीव को पीड़ित नहीं देख सकते थे। पू. गुरुदेव की सत्प्रेरणा से कई गौशालाओं का निर्माण किया गया। जिसमें सायला (राज.) की गौशाला बहुत विशाल है। सन् 2013 में जब महाराष्ट्र में दुष्काल पड़ा तब पू. गुरुदेव ने श्री जयन्त बांठिया को जीव रक्षा हेतु प्रेरित किया उनके प्रयत्नों से केटल केम्प लगाए गए। जिसमें सरकार ने 1500 करोड़ रु. खर्च किये एवं पशुओं को आहार-पानी और चिकित्सा की व्यवस्था की गई। उसमें 3 लाख पशुओं की जान बची। फलाकांक्षा से दूर रहकर अनपेक्ष भाव से कर्तव्य करते जाना यही पू. गुरुदेव के जीवन का लक्ष्य था।

(क्रमशः)

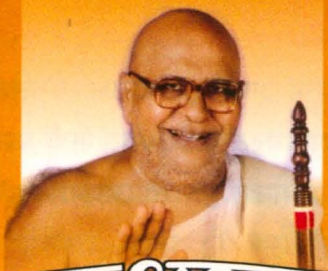

गणधरवाद

प्रवचनकार

स्वर्गीय मनीषी लोकसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

व्यक्त- वस्तु के न होने पर भी वह अविद्याजन्य भ्रांति से दिखती है, तो इससे क्या वस्तु की सत्ता सिद्ध नहीं हो सकती ? कहा भी है -

कामवासना, स्वप्न, भय, उन्माद और अविद्याजन्य भ्रांति से मनुष्य अविद्यमान अर्थ को भी केशेन्दुक की तरह देखता है।

महावीर- आयुष्मन् ! यदि ऐसा ही हो, तो फिर शून्यता समान रूप से होने पर भी कछुए के बाल की सामग्री क्यों नहीं दिखती ? और इसके विपरीत वचन की ही सामग्री क्यों दिखती है । दोनों की सामग्री दिखनी चाहिए अथवा किसी की भी नहीं दिखनी चाहिए, क्योंकि तुम्हारे मतानुसार दोनों समान रूप से शून्य हैं ।

इसके अलावा छाती, मस्तक, कंठ, ओंठ, तालु, जीभ आदि सामग्री रूप वक्ता और उसका वचन सत् है या नहीं ? यदि वह सत् हो, तो सर्व शून्य है, ऐसा कैसे कहा जा सकता है ? और यदि वक्ता या वचन असत् हो, तो यह सब शून्य है, ऐसा किसने कहा ? और किसने सुना ? क्योंकि सर्व शून्य मानने पर तो कोई वक्ता नहीं रहेगा और न सुनने वाला श्रोता भी रहेगा ।

व्यक्त- आर्य आपका कथन ठीक है कि वक्ता भी नहीं है, वचन भी नहीं है और वाचनीय पदार्थ भी नहीं है। इसीलिए तो सर्व शून्य ही सिद्ध होता है।

महावीर- परन्तु मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुमने कहा कि वक्ता, वचन और वचनीय का अभाव होने से सर्व शून्य ही है, तुम्हारा यह वचन

सत्य है या मिथ्या ? यदि तुम अपने इस वचन को सत्य मानते हो, तो वचन का सद्भाव सिद्ध होने से सर्व वस्तु का अभाव नहीं बन सकता और यदि तुम अपने इस वचन को मिथ्या मानते हो, तो अप्रमाण होने से वह सर्व शून्यता सिद्ध करने में असमर्थ ही हैं।

व्यक्त- भले ही यह वचन शून्यता को सिद्ध न कर सके, लेकिन हम तो शून्यता को ही स्वीकार करते हैं।

महावीर- तब भी ऐसा प्रश्न हो सकता है कि तुम्हारा यह मानना अभ्युपगम- स्वीकार करना सत्य है या मिथ्या ? कुछ भी उत्तर दो, लेकिन उत्तर में शून्यता स्वीकार नहीं की जा सकती, यही फलित होता है तथा अभ्युपगम भी तभी घटित होता है, जब तुम अभ्युपगम- स्वीकार करने वाला, अभ्युपगम-स्वीकार और अभ्युपगमनीय-स्वीकारणीय वस्तु इन तीनों का सद्भाव मानो। किन्तु सर्वशून्यता मानने पर तो अभ्युपगम भी घटित नहीं होता। इसलिए सर्वशून्यता का आग्रह छोड़ देना चाहिए।

इसके अतिरिक्त यदि सर्व शून्य ही हो, तो लोक में जो व्यवहार की व्यवस्था है, वह समाप्त-लुप्त हो जाएगी। भाव और अभाव दोनों को समान ही मानना पड़ेगा। तो फिर रेती के कण में तेल क्यों नहीं होता और तेल की सामग्री में ही वह क्यों होता है ? तथा सभी कार्य आकाश कुसुम की सामग्री से ही क्यों न ही सिद्ध हो जाएँ, ऐसा होता तो नहीं, किन्तु प्रतिनियत कार्य का प्रतिनियत कारण होता है। इसलिए मानना चाहिए कि सर्वशून्य नहीं है।

संसार में ऐसा कोई एकान्त नियम भी तो नहीं है कि सभी कुछ सामग्री से उत्पन्न होता है। यद्यपि द्वयणुक आदि जैसे स्कन्ध सावयव होकर दो आदि परमाणु सामग्री से उत्पन्न होने के कारण सामग्रीजन्य कहलाते हैं, किन्तु निरवयव परमाणु तो किसी से उत्पन्न नहीं होता। अतः वह भी द्वयणुकादि की तरह सामग्री जन्य कैसे कहला सकता है ?

व्यक्त- परमाणु भी सप्रदेश- सावयव ही है। इसलिए वह भी

सामग्रीजन्य ही कहलाता है ।

महावीर- किन्तु उस परमाणु के भी जो अवयव होंगे अथवा उन अवयवों के भी जो अवयव होंगे और इस प्रकार जो अंतिम निरवयव -अप्रदेश अवयव होगा, उसे तो सामग्रीजन्य माना ही नहीं जा सकता। अतएव सभी सामग्रीजन्य है, ऐसा एकान्त नियम नहीं है ।

व्यक्त- मान लो कि ऐसा कोई परमाणु ही न माने तो ?

महावीर- परमाणु का सर्वथा अभाव नहीं माना जा सकता, क्योंकि उसका कार्य दिखता है। इसलिए कार्य के द्वारा कारण का अनुमान हो सकता है। कहा भी है कि-

मूर्त वस्तु के द्वारा परमाणु का अनुमान किया जा सकता है। वह परमाणु अप्रदेशी है, निरवयव है, अन्त्य प्रमाण कारण है, नित्य है और उसमें एक रस, एक वर्ण, एक गंध और दो स्पर्श हैं। उसका कार्य द्वारा अनुमान हो सकता है।

(क्रमशः)

सभी प्रकार के मांस पर प्रतिबंध हो

कन्नड़ के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. एस.एल. भैरप्प ने कहा कि सिर्फ गौमांस पर ही नहीं, अपितु सभी प्रकार के मांस और मांसाहार पर प्रतिबंध होना चाहिये। 20 जनवरी 2019 को मैसूर में भैरप्प साहित्योत्सव के समापन समारोह में पद्मश्री भैरप्प ने कहा कि शाकाहार का महान विचार जैन दर्शन के जरिये समाज में प्रतिष्ठित है। पश्चिम में पशुओं को इंसान के भोजन के रूप में देखा जाता है। लेकिन भारत में हम पशु-पक्षियों को आत्मा और प्राणों से युक्त मानते हैं।

हर जानवर सुख और दुःख-दर्द का अनुभव करता है। इसलिए मैं मांसाहार के पूर्ण निषेध का समर्थन करता हूँ। उन्होंने यज्ञ और होम में पशु-बलि की खिलाफत में जैन धर्म के तर्कों और युक्तियों को पूर्ण न्यायसंगत बताया और कहा कि उन्हें लिखने के वक्त अनेक वैचारिक चुनौतियाँ झेलनी पड़ी ।

– डॉ. दिलीप धींग, उदयपुर

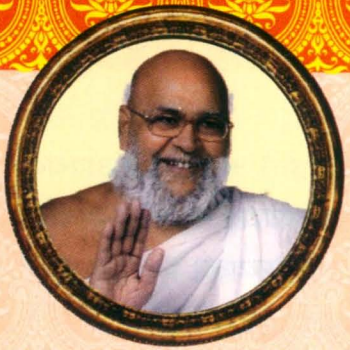

प्रवचन

अशुभ वचनयोग (26)

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

'उत्तराध्ययनसूत्र' के रूप में शिष्यों को अपने अन्तिम सारगर्भित महत्त्वपूर्ण उपदेश का उपक्रम करते हुए वीतराग प्रभु फरमा रहे हैं :-

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्सभिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुव्विं सुणेह मे ।।

संयोगों से मुक्त (रहित) अनगार भिक्षुओं को मैं विनय का स्वरूप बताने वाला हूँ। मुझे क्रमशः सुनें।

अपने अपवित्र संयोग से आत्मा को कलुषित करने वाले अशुभ वचनयोग का यहाँ विवेचन चल रहा है।

शुभ-वचन को सुभाषित कहते हैं और संक्षिप्त सुभाषित को सूक्ति। 'योगवसिष्ठ' नामक ग्रन्थ में वसिष्ठ ऋषि लिखते हैं -

अपूर्वाह्लाददायिन्यः उच्चैस्तरपदाश्रयाः ।
अतिमोहापहारिण्यः, सूक्तयो हि महीयसाम् ।।

महापुरुषों की सूक्तियाँ अपूर्व आनन्द देने वाली, उच्चस्तर पद पर पहुँचाने वाली और प्रगाढ़ मोह का अपहरण (नाश) करने वाली होती हैं।

सूक्तियों के लाभ (प्रयोजन) का जिक्र करते हुए 'ज्ञानार्णव' ग्रन्थ में लिखा है :-

प्रबोधाय विवेकाय, हिताय प्रशमाय च ।
सम्यक्त्वोपदेशाय, सतां सूक्तिः प्रवर्त्तते ।।

सत्पुरुषों की सूक्तियाँ प्रवृत्त होती हैं लोगों को प्रतिबोध देने के लिए, उनका विवेक जगाने के लिए, उनका कल्याण (हित) करने के लिए और उन्हें ठीक तत्व का उपदेश करने के लिए। जैसे

गाय का दूध निकलता है, वैसे ही सरस्वती से सूक्ति निकलती है :-

या दुग्धापि दुग्धेव, कविदोग्धृभिरन्वहम् ।
हृदि नः सन्निधत्तां सा, सूक्तिधेनुः सरस्वती ।।

'जो दोहने वाले कवियों के द्वारा निरन्तर दुही जाने पर भी नहीं दुही गई' जैसी (अपरिमित या असीम दूध वाली) बनी रहती है, वह सूक्तियों की धेनु (गाय) सरस्वती सदा हमारे हृदय में विराजती रहे ।

सुभाषितों को सुन-समझकर उससे लाभ उठाने वाले बहुत कम होते हैं, ऐसा बड़े खेद के साथ प्रकट करते हुए भर्तृहरि लिखते हैं :-

बौद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः ।
अबोधोपहताश्चान्ये, जीर्णमङ्गे सुभाषितम ।।

जो समझदार हैं वे मत्सर (ईर्ष्या) से भरे हुए हैं, धनी लोग अभिमान से दूषित हैं और अन्य लोग बेसमझ हैं (जो सूक्ति को समझने में असमर्थ हैं) इस प्रकार सुभाषित अपने आप में जीर्ण होता रहता है।

इसी 'उत्तराध्ययनसूत्र' में चौबीसवें अध्ययन में प्रभु महावीर ने उपदेश दिया है :-

असावज्जंमियं काले, भासं भासिज्ज पन्नवं ।।

प्रज्ञावान (समझदार) व्यक्ति को समय के अनुसार सीमित निर्दोष भाषा में अपनी बात कहनी चाहिये।

परिस्थिति का विचार करके कम शब्दों में (संक्षेप में) निर्दोष बात जो कहते हैं, वे ही समझदार वक्ता होते हैं- यह प्रभु की सूक्ति का आशय है। 'विवेकविलास' नामक पुस्तक में ऐसी एक सूक्ति मिलती है-

वाक्यं प्रियहितं वाच्यं, देशकालानुगं बुधैः ।।

विद्धानों को देशकालानुसार हितकारी प्रिय वचन बोलना चाहिए। 'तत्त्वामृत' नामक ग्रन्थ में लिखा है-

निरवद्यं वदेद्वाक्यम्, मधुरं हितमर्थवत् ।।

मधुर, हितकर, सार्थक और निर्दोष वाक्य बोलना चाहिए।

(क्रमशः)

बोलने को तो कौआ भी बोलता है, परन्तु लोग कोयल की बोली ही सुना करते हैं क्योंकि उसमें मधुरता होती है-

कोयल काकों देत है, कौआ कासों लेत ?
मीठे बोल सुनाइकै, मन बस में करि लेत ।।

कोयल किसी को कुछ देती नहीं और कौआ किसी से कुछ लेता नहीं, परन्तु कोयल मीठी बोली से सबका मन वश में कर लेती है, इसी प्रकार जो लोग मीठा बोलते हैं वे लोकप्रियता अर्जित करते हैं। एक अन्य सुभाषित के द्वारा नीतिकार कहते है :-

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः, को भेदः पिककाककायोः ।
वसन्तसमये तात ! काकः काकः पिकः पिकः ।।

कौआ काला होता है और कोयल भी काली होती है। दोनों में अन्तर क्या है ? (कुछ नहीं) फिर भी हे तात ! बसन्त ऋतु आने पर (लोग पहचान लेते हैं कि) कौआ, कौआ है और कोयल, कोयल है (बोली से समझ लेते हैं कि कौआ कौनसा है और कोयल कौनसी है । नीतिकार शिरोमणि श्री विदुरजी का कथन इस विषय में किया जा सकता है ।

(क्रमशः)

जयंत सेन हस्ताक्षर

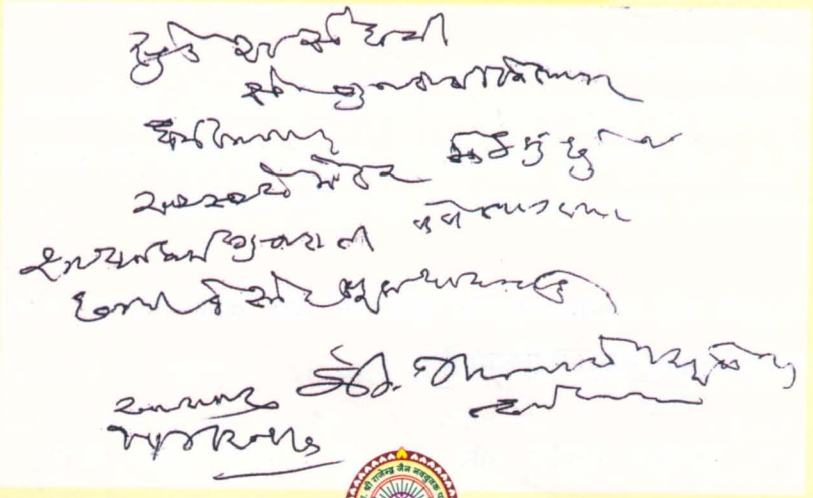

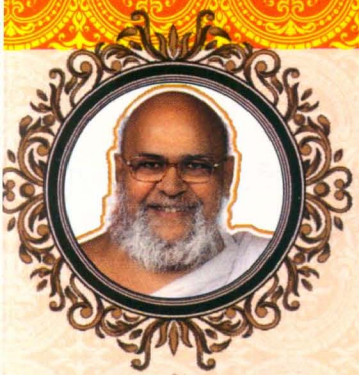

लघु कथाएँ

मैं जानता हूँ

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

दृश्य एक : विचार अनेक

एक ही वस्तु को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखना अनेकान्त दृष्टि है। वस्तु तो केवल वस्तु होती है। जो उसे जिस भाव से देखता है, उसे वह वैसी ही दिखाई देती है।

एक नगर में सड़क के किनारे एक नर्तकी नृत्य कर रही थी। उस नृत्य को देखकर एक बालक, एक युवक, एक वृद्ध और एक साधु के मन में जो विचार आये, वे इस प्रकार हैं।

बालक-यह औरत तो अकेली ही खेल रही है। कभी उछलती है, कभी हाथ ऊपर नीचे करती है, कभी घूँघट निकालती है तो कभी घूँघट हटा लेती है।

युवक-वाह ! यह तो बड़ा सुन्दर नृत्य कर रही है। यह बड़े आकर्षक हाव-भाव दिखाती है। इसने तो मेरा मन मोह लिया है।

वृद्ध-आज यह नर्तकी अपने रूप और यौवन पर इतरा रही है, पर इसे यह पता नहीं है कि इसके बाद अवश्य ही बुढ़ापा आने वाला है।

साधु-परिपूरन पाप के कारन ही, भगवन्त कथा न रुचे जिनको।
इक नारि बुलाई नचावत है, नचवावत है निसि को दिन को।
मिरदंग कहे धिक है, धिक है, सुरताल कहे किनको किनको।
तब हाथ उठाई के नारि कहे, धिक धिक है, इनको इनको ।।

बुद्धिमान चरवाहा

एक पण्डितजी थे। एक बार वे प्रातः भ्रमण करके घर लौट रहे थे। चलते-चलते उन्होंने एक दोहा बनाया और वे गुनगुनाने लगे-

भ्रात सरीखो भउ नहीं, तेज न नेत्र समान ।
दूध गाय के सम नहीं, भूप न भोज समान ।।

पंडितजी दोहा गुनगुना रहे थे। वहीं पास में एक चरवाहा भेड़ बकरियाँ चरा रहा था। एक बकरी को देखकर वह बोला-

चाल म्हारी टूँटी, चाल म्हारी टूँटी ।

पंडितजी के कान में ये शब्द पड़े पर उन्होंने कुछ गलत सुना। उन्होंने सुना-

चार बाताँ झूठी, चार बाताँ झूठी ।

पंडितजी को लगा कि यह चरवाहा अपनी चारों बातों को गलत बता रहा है। वे उससे उलझ पड़े। मामला राजा के पास पहुँचा ।

चरवाहे ने कहा- महाराज ! मैं तो मेरी बकरी से कह रहा था- चाल म्हारी टूँटी ।

पंडितजी ने कहा- महाराज ये चरवाहा तो मेरे दोहे की चार बातों को झूठी कह रहा था।

इतना कहकर पंडितजी ने अपना दोहा राजा को सुना दिया।

तब चरवाहा बोला- महाराज ! यदि आप आज्ञा दें तो मैं इस दोहे की चारों बातों को झूठी सिद्ध कर सकता हूँ ।

राजा ने चरवाहे को इजाजत दे दी। तब चरवाहा बोला-

भुजा सरीखो भउ नहीं, तेज न सूर्य समान ।
दूध मात के सम नहीं, भूप न इन्द्र समान ।।

दोहा सुनते ही पंडितजी बगलें झाँकने लगे। राजा ने चरवाहे को विजयी घोषित किया ।

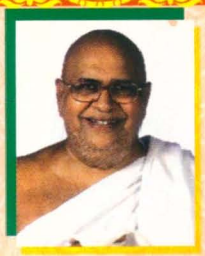

प्रश्नोत्तरी

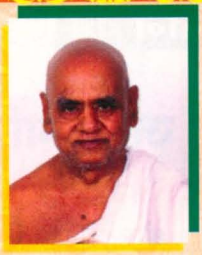

उत्तरदाता
स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय
जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्नकर्ता
जैनाचार्य श्रीमद् विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्र. उपनयनाभास किसे कहते हैं ?

उ. साध्य का पक्ष में उपसंहार करना या साधन का दृष्टान्त में उपसंहार करना, जैसे शब्द परिणामी हैं क्योंकि कृतक है। जो कृतक् होता है वह परिणामी होता है जैसे घट शब्द भी कृतक है, ऐसा कहना चाहिए किन्तु शब्द भी परिणामी है ऐसा कहना था या घट कृतक है ऐसा कहना उपनयाभास है।

प्र. निगमनाभास किसे कहते हैं ?

उ. साधन का पक्ष में या साध्य का दृष्टान्त में उपसंहार करना निगमनाभास है। जैसे उसी अनुमान में शब्द कृतक है या घट परिणामी है ऐसा कहना।

प्र. आगमाभास किसे कहते हैं ?

उ. अनाप्त पुरुष के वाक्य को जैसे अंगुली पर सैकड़ों हाथी हैं या सुई के छेद में हाथी तो पार हो गया किन्तु दुम (पूंछ) अटक गई, ऐसा वचन आगमाभास है।

प्र. नय किसे कहते हैं ?

उ. अनन्त धर्मात्मक वस्तु के एक धर्म को सापेक्ष जानने वाले ज्ञान को नय कहते हैं।

प्र. नय के कितने भेद हैं ?

उ. 1. द्रव्यार्थिक 2. पर्यायार्थिक।

प्र. द्रव्यार्थिक किसे कहते हैं ?

उ. जो द्रव्यमात्र को ग्रहण करे उसे द्रव्यार्थिक कहते हैं।

प्र. पर्यायार्थिक किसे कहते हैं ?

उ. जो विशेष अर्थात् गुण और पर्याय को ग्रहण करे उसे पर्यायार्थिक नय कहते हैं।

प्र. द्रव्यार्थिक नय के कितने भेद हैं ?

उ. तीन भेद हैं- नैगम, संग्रह और व्यवहार।

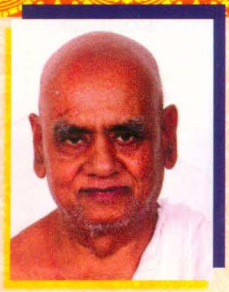

जो संगठित है, वही जीवित है

गच्छाधिपति जैनाचार्य
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

शुक्रवार 1998

संगठन के बिना किसी भी समाज या समूह में शक्ति उत्पन्न नहीं हो सकती। 'संघ शक्तिः कलियुगे' के अनुसार कलियुग में केवल संगठित होकर ही जीवित रह सकते हैं। व्यक्ति समाज से पृथक नहीं रह सकता एवं समाज संगठन के बिना जिन्दा कौम नहीं कही जाती । व्यक्ति का हित समाज में निहित है। समाज का सुव्यवस्थित होना आवश्यक है लेकिन कोई भी समाज, देश, समुदाय या समूह तभी विकास कर सकता है जबकि वह एकता से जुड़ा हुआ हो। समाज का प्रत्येक व्यक्ति पुष्प की तरह अपनी योग्यता तथा क्षमता के सौरभ से युक्त हो एवं एकता के धागे से पिरोया हुआ हो। समाज पुष्पमाला के समान हो। पुष्पमाला ही सम्मानजनक स्थान पर शोभा पाती है, बिखरी पंखुड़ियां अथवा अकेला पुष्प नहीं । जो समाज संगठित होता है, उसमें उर्जा संग्रहित होती। यह उर्जा सकारात्मक दिशा में प्रवृत बनकर बड़ी से बड़ी चुनौती को स्वीकार कर सकती है। विगठित अथवा मुंह-मुंह समाज का कोई अस्तित्व नहीं है। उसकी वाणी में कोई वजन नहीं है, उसके आकार में कोई प्राण नहीं है, उसकी स्थिति में कोई चेतना नहीं है, उसका विश्व में कोई स्थान नहीं है। यह देश पर भी लागू होता है। एकता के सूत्र में जुड़ा हुआ छोटा से छोटा देश किसी को भी चुनौती दे सकता है। अनेकता से ग्रस्त विशाल देश भी अक्षम है। एक परिवार भी तभी अपने गौरव को बनाए रख सकता है जबकि वह संगठित हो। संगठन वह दिव्यमंत्र है जिसकी आराधना कर व्यक्ति, समूह या देश हर प्रकार की सिद्धि प्राप्त कर सकता है।

शुक्रवार 1998

अरे मानव ! तू भटक जाता है कि समाज या श्रीसंघ या समुदाय हमारे कारण ही चल रहा है। यह भ्रम है। पत्ते की कद्र तभी तक है जबकि वह वृक्ष से जुड़ा रहता लगा रहता है। अहं में आकर टहनी से अलग हो जाने वाले पत्ते का कोई ठिकाना नहीं होता। हवा के झोंके उसे उड़ाते रहते हैं। उस पत्ते का कोई अस्तित्व नहीं बनता। इसी तरह समाज से छिटक जाने वाला व्यक्ति कहीं का नहीं रहता। अतएव समाज हमारा है, हम समाज के हैं, हमारा जीना मरना समाज में है, हम समाज से सदैव जुड़े रहेंगे, यह भाव हममें होना चाहिये। ऐसे भाव के अनुकूल हमारी विनम्रता तथा त्याग भावना हमें समाज के पूरक बना देती है ।

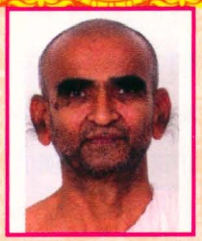

शाकाहार दे सकता है सभी प्रोटीन

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

क्या शाकाहारी भोजन उस मात्रा में सारे तत्व दे पाएगा जो नॉनवेज देता है? कई बार यह सवाल भी उठता है कि अंडा, मीट आदि को छोड़कर कौन-सा शाकाहारी भोजन लिया जाए तो किसी तत्व की कमी शरीर में न होने दे। यदि आप दिए जा रहे इन तथ्यों पर गौर करेंगे तो समझ जाएंगे कि शाकाहार क्यों लाभकारी है।

शाकाहार का क्रेज इतना बढ़ रहा है कि पश्चिमी देशों में भी वेज डाइट को अपनाने पर जोर दिया जा रहा है। नॉनवेजीटेरियन भी अपनी पसंद बदल रहे हैं। ऐसे लोगों को यह जानकारी होना चाहिए कि शाकाहारी भोजन में भी काफी प्रोटीन मौजूद रहते हैं। यह कहना है कि डायटिशियन संगीता जैन का। वे कहती हैं कोई व्यक्ति इसकी जगह अनाज, दालें, फल, सब्जियां आदि ले सकते हैं। यही नहीं, फाइबर रिच डाइट लेने से डायबिटीज व हाइपरटेंशन की आशंका बहुत कम रहती है।

वैसे तो जो मीट लेते हैं, उस एनिमल के लीवर में आयरन की मात्रा, छोटी फिश की बोंस में कैल्शियम की मात्रा अधिक रहती है और कार्ड लीवर ऑइल में विटामिन ए होता है। इनकी उच्च बायोलॉजिकल वैल्यू होती है लेकिन फिर भी इनकी पूर्ति दूध, फ्रूट्स, गन्ने का रस आदि से की जा सकती है। डायटीशियन मुनीरा हुसैन के अनुसार नॉनवेज में वेसिकली प्रोटीन होता है । एक प्लेट नॉनवेज की जगह दो कटोरी दाल ले सकते हैं। इसके अलावा विटामिन व मिनरल्स की पूर्ति के लिए 250-500 ग्राम दूध प्रतिदिन लिया जा सकता है।

नानवेज से होने वाली बीमारियाँ :-

जिस एनिमल का मीट लेते हैं उस एनिमल की बीमारियां हमारे शरीर में जर्म्स के द्वारा पहुंच जाती हैं। नानवेज में कोल्स्ट्रॉल ज्यादा होता है जिससे कॉर्डियक डिसीज होने के चांस अधिक होते हैं। इतना ही नहीं नानवेज से शरीर में यूरिक एसिड की मात्रा भी बढ़ जाती है ।

अंडे की बजाय केला खाएँ:-

* एक अंडे की जगह एक केला

खाएं, 2. टेबलस्पून कॉनस्टार्च या अरारोट का स्टार्च लें। (केक्स और पैनकेक्स की जगह यह अच्छा है।

* एक अंडा यानी एक चौथाई कप तो फूभी हो सकता है (तोफू को अच्छी तरह ब्लैंड कर इसमें तरल इनग्रेडिएंट्स मिलाएं) सोया मिल्क, पनीर, दाल, सोया मार्गरिन, सोया दही और राइस मिल्क ले सकते हैं।

ले सूखा मेवा:- * फिश की जगह दूध, दाल, खसखस, फली, तिल और सूखा मेवा ले सकते हैं । * प्रोटीन, विटामिन के लिए पपीता व येलो फ्रूट्स लेना चाहिए।

स्टू व सूप्स में मीट का विकल्प :-

* सोया, नट्स, तोफू, व्हीट ग्लूटन । * चिकन, मटन में उपस्थित प्रोटीन का विकल्प । * शरीर को 20-30 ग्राम प्रोटीन की आवश्यकता होती है जो डेली डाइट से पूरी हो जाती है, फिर भी कुछ मात्रा में घी या ऑइल लिया जा सकता है।

गलत धारणा दूर करो ?

कई लोग कहते हैं किसी को कैसे माफ करें ? प्रीति का धागा टूट जाना सरल है, जुड़ना सरल नहीं है। यदि एक बार धागा टूट जाता है तो उसे जोड़ने पर गांठ पड़ जाती है। ऐसी ही बात प्रीति के विषय में है । पर...सज्जन व्यक्ति का विश्वास ऐसा नहीं होता है। ऐसी गलत धारणा को पकड़े रहने से जीवन में जहर घुल जाता है। इन गलत बातों को पकड़कर अपनी वैर वृत्ति को मजबूत बनाना अच्छा नहीं है। आप यह क्यों भूल जाते है कि आज जो फटे हुए दूध से भी मिठाई बनाई जाती है। अरे ! मिठाई बनाने के लिए दूध को विशेष रूप से फाड़ा जाता है । बंगाली मिठाई, रसगुल्ले कैसे गटागट गले उतर जाते हैं। मतलब फटा दूध भी उपयोगी हो गया। यदि खरा मोती टूटता है तो वह और भी उपयोगी हो जाता है। उसकी खाक (भस्म) या पिष्टी बन सकती है। पूर्ण मोती यदि पहना जाता तो शरीर की शोभा मात्र बढ़ती, शरीर में शक्ति नहीं आती, परन्तु खाक या पिष्टी का प्रयोग किया जाता है तो शरीर स्वस्थ होता है। इसी प्रकार ज्ञानी फटे मन को भी कर्मक्षय करके, आत्मस्थ बनाने के लिये उपयोगी बना सकते हैं क्षमा से परिपूर्ण करके रसमय बना सकते हैं। इसलिये मन की यह भ्रमणा दूर कीजिये कि फटा मन सिल नहीं सकता है।

अध्यक्षीय पाती

बन्द करें व बंद कराएँ यह पाप कार्य

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

जैन संस्कृति का आधार सम्यग्दर्शन सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् चारित्र तीनों की त्रिवेणी का संगम तथा इन्हें जीवन में अंगीकार किया जाना है। सम्यग्दर्शन सर्वोपरी है ही, बिना सच्ची श्रद्धा के आत्मोत्थान की दिशा में एक कदम भी यथार्थ नहीं कहा जा सकता लेकिन ज्ञान एवं चारित्र दोनों की अनिवार्यता को भी उतनी ही महत्ता दी गई है। केवल ज्ञान लुला है तथा केवल चरित्र लंगड़ा है । ये दोनों (ज्ञान व चारित्र) मिलकर एक रथ के दो चक्र बनते हैं जिनसे रथ की गतिशीलता संभव है । यह दुर्भाग्य है कि संघ (समाज) में बहुत-सा ज्ञान होते हुए भी आचरण चारित्र में शुण्यता है। इस कारण कई दोष सामूहिकता में भी आ गये हैं। इनके प्रति सजग होकर समाज को इनका सुधार करना चाहिये।

जैन आचरण ने नरक के चार द्वारों में अभक्ष्य याने कन्दमूल का भक्षण भी सम्मिलित किया है। कन्दमूल साधारण वनस्पति में आते हैं जिनके एक कण में असंख्य जीव हैं। तीर्थंकर वचन में नरक से भी अधिक वेदना निगोद के जीवों की दर्शित की है। हालांकि ये स्थावर जीव होने के कारण इनका त्रास अव्यक्त है। इनके अंतर्गत आलु, मूली, प्याज, हरी हल्दी, शकरकंद, गराडु, लहसुन, गाजर, मशरूम आदि आते हैं। इनका त्याग प्रत्येक जैन के लिये कर्त्तव्य है, अगले भव की दृष्टि से आवश्यक है। सुश्रावक के निजी घरों में भी ये दूर रखे जाते हैं।

खेद है कि जैन समाज में विवाह, जन्मदिवस, विवाह की वार्षिकी आदि पर आयोजित प्रीतिभोजों में कन्दमूल का प्रचलन सामान्य है। यह पापकार्य है । हमारे संघ में प्रीतिभोजों में इनका प्रयोग होना ही नहीं चाहिये। कई स्थानों पर समाज ने निर्णय कर इनका उपयोग प्रतिबन्धित कर रखा है लेकिन हर जगह यह पाबंदी पूरी तरह कारगार नहीं हुई है। लुकछिपकर उपयोग होता है या 'जैन ढाबा' पृथक कर नियम के पालन का नाटक किया जाता है। जैन परिवारों के प्रीतिभोज में पूरा भोजन ही जैन मर्यादाओं के अनुसार होना आवश्यक है-'जैन ढाबे' का क्या तात्पर्य है ? अतएव कन्दमूल के उपयोग से हमारे रीतिरिवाजों पर आयोजित भोजन कार्यक्रमों को मुक्त रखने का प्रत्येक श्रीसंघ को अभियान चलाते हुए जैन आचार संस्कृति की रक्षा करनी एवं पापकृत्यों से बचना चाहिये।

अध्यक्षीय संदेश

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

आओ, मनाएँ हीरक जयन्ती

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की स्थापना ईस्वी सन् 1959 की कार्तिक पूर्णिमा को श्री मोहनखेड़ा तीर्थ के पवित्र प्रांगण में गुरुदेव जैनाचार्य तथा संगठन के लिये सन्नद्ध सम्पोषक श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने करते हुए उद्घोष किया था कि 'परिषद की प्रगति ही समाज की प्रगति है।' जो परिषद है वही समाज है । उस समय गुरुदेव जैनाचार्यश्री ढलती आयुष्य की स्थिति में थे। उनने संगठन को तब मुनिराज श्री जयन्तविजयजी म. 'मधुकर' को सौंपते हुए आशा प्रकट की थी कि यह संगठन उत्तरोत्तर प्रगति कर समाज का प्रतिनिधित्व करेगा। पू. मुनिराजश्री (बाद में जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.) ने इसका पालन पोषण किया। अपने मानसपुत्र की भांति इसे दुलार तथा स्नेह से सिंचित कर युवावस्था की देहलीज तक पहुँचाया। उनने सम्पूर्ण जीवन का समर्पण गुरु आज्ञा का पालन कर परिषद को सुदृढ बना ने में प्रयुक्त कर दिया। आज जो अंकुरित पौधा वटवृक्ष की तरह विस्तृत तथा विशाल दिखाई दे रहा है, यह पूज्यश्री जयंतबाबजी सा. की देन है। इस गाथा की रचना होते हुए साठवां वर्ष आ गया है। परिषद इस वर्ष को हीरक जयन्ती वर्ष के रूप में मना रही है।

हीरक जयंती वर्ष याने संकल्पों की प्राप्ति तथा विकास के शिखर के लिये छलांग लगाने का अवसर ! वर्तमान में नवयुवक परिषद् विस्तृत होकर महिला परिषद, तरुण परिषद, श्री जयन्त ज्योति वधू परिषद, बालिका परिषद्, बाल परिषद आदि इकाइयों में व्यापक बन चुकी है। श्री यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ के माध्यम से यह धार्मिक शिक्षा एवं नई पीढ़ी में संस्कारपूर्ण जीवन पल्लवित करने के लिये पाठशालाओं को सुदृढ बना रही है। परिषद के चार दिव्य उद्देश्य समाज, संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रचार, समाज सुधार तथा कमजोर वर्ग का आर्थिक विकास समाज को नया उजाला देने एवं उसे खुशियों से भरने के लिये गतिशील हैं।

हीरक जयंती वर्ष के पूरे वर्ष के कार्यक्रम तथा संकल्प केन्द्रीय कार्यालय के द्वारा प्रसारित कर दिये गये हैं, प्रत्येक शाखा को भेजे गये हैं। आशा है प्रत्येक परिषदजन इनकी संप्राप्ति में तन-मन-धन से जुट जायेगा।

संपादकीय

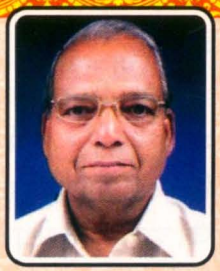

श्री सिद्धाचलतीर्थ को बचाना होगा

जैन वर्ग सम्पूर्ण भारतवर्ष की जनसंख्या की तुलना में चाहे न्यून याने एक प्रतिशत से भी कम हो, लेकिन अपने बुद्धिकौशल तथा धनशक्ति के आधार पर प्रभावशाली समाज है। देश के प्रत्येक क्षेत्र में इसका प्रभाव है। इस कारण इसकी इस स्थिति के प्रति कुछ वर्गों में द्वेषभाव भी व्याप्त है। आज लगभग प्रत्येक जैन तीर्थ को किसी न किसी विवाद ने घेर रखा है। और नहीं तो कोई न कोई राज्य शासन ही तीर्थों की स्वायत्तता में हस्तक्षेप करने का दुस्साहस कर लेता है। श्री सम्मेतशिखर तीर्थ पर श्वेताम्बर तथा दिगम्बर समाज के मध्य विवाद दुर्भाग्यपूर्ण है लेकिन वहाँ (पूर्व में बिहार, अब झारखण्ड) की राज्य सरकार जंगल विकास या पर्वत विकास के नाम पर कोई न कोई खेल करती रहती है। गिरनार में पांचवीं टूंक पर जैनों का जाना खतरनाक हो गया है, दूसरे शब्दों में वहाँ बाबा-जोगियों ने कब्जा कर लिया है जो वहाँ जैनों को देखते ही भड़क उठते हैं, जैनों से झगड़ते हैं, मारपीट करते हैं। राजगृह में पाँचवी टूक के मार्ग पर आतंकवादियों का अधिपत्य है, जैनयात्री इस टूंक पर जाना टाल रहे हैं। केशरीयाजी के मंदिर की स्थिति सर्वज्ञात है, सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के पश्चात् भी वह जैनों के अधीन नहीं है। श्री बद्रीनारायण पर्वत पर जैन मन्दिर बनाने के प्रयास की हुई छिछालेदारी छिपी हुई नहीं है। श्री बद्रीनारायणजी के मूल मंदिर तथा तिरुपति बालाजी के मंदिर में मूल प्रतिमाएँ जैन हैं। हम कुछ नहीं कर सकते। श्री जगन्नाथ में प्रवेश द्वार के किंवाड़ पर जैन प्रतिमा लगी हुई है। मदुरै में श्री मीनाक्षी के मंदिर में तलघर में जैन मुनियों के विकृत चित्र बने हुए हैं। उदयगिरी-खंडागिरी की गुफाएँ जैन हैं, वहाँ जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ भी उत्कीर्ण हैं, लेकिन इतिहासकार इनको कोई आधार देने के लिये तैयार नहीं हैं। पश्चिम बंगाल, उड़ीसा तथा बिहार में जो स्वयं तीर्थंकर भगवान श्री महावीरस्वामी का विचरण क्षेत्र रहा है, सैंकड़ों स्थानों पर जैन प्रतिमाएँ तैल व सिन्दूर से सनी हुई हैं, अजैन देवीदेवताओं के नाम से अजैन समूहों द्वारा पूजी जा

रही हैं।

एक सिद्धाचल तीर्थ (पालीताना) श्वेताम्बर जैन तीर्थ ऐसा था जहाँ कोई विवाद/ झगड़ा/ मतभेद/संघर्ष नहीं था। जैन यात्री शांति से पूजा/ दर्शन/उपासना के लिये पहुंचकर आत्मकल्याण की राह प्राप्त करते रहे हैं लेकिन वहाँ वातावरण को भी हिंसक/अशान्त/उपद्रवी बनाने का लगातार कुप्रयास/षड़यंत्र हो रहा है। श्री सिद्धाचल तीर्थ को शाश्वत तीर्थ माना जाता है उसका कण-कण पूजनीय है, उसकी यात्रा करने से 'जीवन सफल हो गया' की धारणा सुदृढ़ बनती है। लाखों यात्री प्रतिवर्ष श्री सिद्धाचल/ सिद्धगिरी/ शत्रुंजय/ पालीताना की यात्रा कर धन्य होते हैं परन्तु वहाँ अब वैसी स्थिति नहीं रही हैं। डोलीवालों ने यूनियन बना ली है, वे मनमाना किराया यात्रियों से वसूल करते हैं, होटल व अन्य खाद्य पदार्थ बेचने वालों ने खूब धन कमा लिया है, वे यात्रियों से अभद्रता करते हैं, वहाँ हर क्षेत्र में असामाजिक तत्वों की भरमार हो गई है।

विगत 11 जनवरी 2019 को दो मुनिगणों तथा कुछ यात्रियों के साथ मना राठौड़ नामक व्यक्ति ने गाली गुफ्तार की। यह डोलीवालों की यूनियन का अध्यक्ष है। पहिले बाबू के मंदिर में चौकीदार था यह प्रगटनाथ महादेव ट्रस्ट का अध्यक्ष भी है। अवैधानिक दबाव डाल कर तथा अतिक्रमण कर पैसे वाला बन गया। यह उक्त दिनांक को चिल्लाया तथा धमकी दी कि पूरा पालीताना जला दूंगा। डोलीवालों आओ इकट्ठे होओ इन जैनों को मारना है, इन्हें पालीताना से भगाना है, इनकी धर्मशालाओं में आग लगानी है। उसके इस व्यवहार से सभी भागने लगे, महिलाएँ तथा बच्चे रोने लगे खेद है, हमारी उपासना का केन्द्र शांत क्षेत्र नहीं आतंक का अड्डा बनाया जा रहा है। आचार्य श्री विमलसागरसूरिजी म. ने तलहाटी से धर्मशाला पहुंचकर पुलिस को घटना से अवगत किया। पुलिस अधीक्षक भावनगर से चर्चा की। तीन श्रावकों ने पुलिस में रिपोर्ट की। अंततः पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया। इनकी जमानत पर रिहाई हुई। ये हिन्दू जनता का नारा लगाकर एवं धर्म-सम्प्रदाय के नाम पर अबोध व भोले लोगों को भड़काकर जैनों के विरुद्ध अप्रिय स्थिति उत्पन्न करते रहे हैं।

प्रश्न यह है कि क्या हमें अपने तीर्थ को इस प्रकार की गुण्डागिर्दी का अड्डा बनने देना है ? पूर्व में भी डोलीवालों ने प्रदर्शन निकाला था जैनों के विरुद्ध भद्दे-भद्दे नारे लगाये थे। तलहटी पर होटलें लगाने वालों ने मनमानी लूट मचा रखी है, वे यात्रियों से झगड़ते भी हैं। इन सभी की ड्यौंटी ठिकाने लाने के लिये जैनों को एक होकर डोली का उपयोग तथा दुकानों पर नाश्ता या

खाद्य पदार्थों की खरीद बन्द कर देना चाहिये। अशक्त, बीमार या बुजुर्ग यात्रियों को जय तलेटी पर पूजा, पाठ, जप कर भावना से आदेश्वर दादा के दर्शन मान लेना चाहिये।

भावना ही सबसे ऊंची है। साथ ही यात्रियों को भाताखाने को प्राप्त नाश्ते से संतोष करना चाहिये। यात्रा का मतलब खाओ, पिओ, मजाखोरी करो नहीं होता है। अपने आचरण को कठोर बनाना आवश्यक है। यदि यात्री उचित आचरण एवं व्यवहार में आते हैं तो श्री सिद्धाचलतीर्थ बचाया जा सकता है अन्यथा यह भी हमारे हाथ से जाने के कगार पर है। हमारे हर तीर्थ तो ठीक सामान्य ग्रामों तथा नगरों के धर्मस्थलों पर या उनके निकट बाधाएँ खड़ी कर दी जाती हैं। हमारी कम संख्या को मन मसोस कर बैठना पड़ता है। कई स्थानों पर जैन समाज की भय, डर तथा आतंक में दबा रहना पड़ता है। पालीताना स्थित श्री सिद्धाचलजी तीर्थ पर हो रही घटनाओं को गंभीरता के साथ नहीं लिया गया तो यह जैन समाज के लिये एक चूक होगी। हमें सावधान, जागृत, संगठित एवं सामना कर सकने की शक्ति से परिपूर्ण होना चाहिये।

सुरेन्द्र लोढ़ा
(संपादक)

दोष क्षम्य नहीं

एक छह खण्ड के अधिपति चक्रवर्ती अपने अखूट ऋद्धि वैभव को छोड़कर अनगार बनते हैं। वे अनगार कुछ स्खलंना करते हैं। तब सामान्य स्थविर मुनि भी उन्हें दोष सेवन का निषेध कर सकते हैं। क्या उस समय वे त्यागी चक्रवर्ती अपने दोष के बचाव के लिये अपने त्याग की दुहाई देंगे ? कोई चौदह पूर्वधर मुनिराज किसी श्रमणोपासक के समक्ष स्मृति दोष से अन्यथा कथन कर गये और वह श्रावक उन्हें प्रायश्चित लेने का कहे। तब क्या वे चौदह पूर्वधर मुनि अपने दोष के बचाव के लिये अपने अधीन ज्ञान की दुहाई देंगे ?

कोई कितनी ही ऋद्धि का त्यागी हो और कितना बड़ा ही ज्ञानी हो, उन्हें भी मोक्षमार्ग में दोष सेवन करने से, संघ की निर्मलता और उनके आत्महित के लिये रोका जाना अनिवार्य है। यदि वे आत्मा भी सच्चे साधक होते हैं तो वे अपने त्याग और ज्ञान की दुहाई देकर अपने अंश-मात्र दोष को भी न तो क्षम्य मानते हैं और न मनवाते हैं, क्योंकि ऐसा करने से उनका आचरित त्याग और अधीन ज्ञान तो दूषित होता ही है। किन्तु आगे का मार्ग भी अवरुद्ध हो जाता है और संघ में भी उनके निमित्त से हीनता आ सकती है। साधक को सदैव साधना की ओर ही दृष्टि रखना चाहिये। बड़ों के द्वारा किए हुए अनुशासन का दी हुई व्यवस्था का पालन करना ही छोटों का कर्त्तव्य है। आज्ञा में अपील नहीं समर्पणता में सवाल नहीं।

गुंहली

अहो प्राणि पुन्य उदय दशा जागी रे. ए राह

चालो सखि मुनिवर उद्याने आव्या रे, साथे चेला चेली घणा लाव्या ।। चा. ।। टेर।। मुनिमोहन दृष्टिये देखो रे, धन्य मरुधरे आहोर लेखो रे, गान 'सांवूजो' प्रीतथी पेखो ।।चा. ।।1।। ज्ञाति 'ब्राह्मण' बहु बुद्धिशाली रे, सिद्धि राजगुरुनी रूपाली रे, श्रया संयमी संयम पाली ।। चा ।।2।। बढीचंदजी तात छे तेना रे, माता 'लक्ष्मी' लायक एना रे, काका गोमाजी गुण मजेना ।।चा.।।3।। जन्म उगणीसे बावीश जाणुं रे, वदी भादरवानी दखाणुं रे, तिथि त्रीज गुरु शुभ टाणुं ।।चा.।।4।। नाम 'मोहन' अर्भक आवे रे, खंते खूबजी आहोर लावे, 'सूरिप्रमोद' भावे भणावे ।। ।।चा. ।।5।। अब्द अग्यारना थया ज्यारे रे, गुरु 'सूरिराजेन्द्रने' धारे रे, सुदि बीज माह गुरुवारे ।। ।।चा.।। 6।। देश मालव जावरा जाणुं रे, बड़ा जैनी दानाजी वखाणुं रे, करयो महोत्सव खरची नाणुं ।।चा.।।7।। सुदि पंचमी प्रतिष्ठा कीधी रे, साथे अं-जनशलाका विधी रे, 'छोटमलजीनी' छे रूडी रिद्धी ।।चा.।।8।। आव्या उगुणसाठे सीयाणे रे, मुनिमोहन जन सहु जाणे रे, लेख 'लल्लुनो' लोक वखाणे ।।चा.।।9।।

* **राणापुर ।** पुण्य सम्राट आचार्य जयंतसेनसूरिजी के 36 वें पाटउत्सव के उपलक्ष्य में श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद राणापुर ने श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय यतीन्द्र ज्ञान मन्दिर में सामूहिक प्रतिक्रमण का आयोजन किया। जिसमें 25 श्रावक - श्राविकाओं और पाठशाला के बच्चों ने प्रतिक्रमण किया। प्रतिक्रमण के पश्चात् पुण्य सम्राट की आरती हुई। शाम को श्री राजराजेन्द्र गौपाल गौशाला में परिषद की ओर से गायों को गौग्रास खिलाया गया। इस अवसर पर समाज के वरिष्ट मदनलाल नाहर, लक्मीचन्द नाहर, विमल कटारिया, दिनेश नाहर, परिषद अध्यक्ष पवन नाहर, प्रकाश सालेचा, कमलेश कटारिया, अर्पित कटारिया, जितेन्द्र सालेचा, पूर्वेश सालेचा, ललित सालेचा, शैलेन्द्र कटारिया, रजनीश नाहर, अरविंद मोगरा, अमीत बबलू कटारिया, अनिल नाहर आदि उपस्थित थे। पुण्य सम्राट के दीक्षा दिवस और पाटमहोत्सव दिवस के उपलक्ष्य में 12 निर्बल, बीमारू गायों को लाभार्थियों के माध्यम से गौशाला भेजा गया।

महाराजा श्रेणिक

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

सभी ब्राह्मणों ने एक साथ खड़े होकर अभयकुमार से निवेदन किया कि 'हे कुमार! हमें बताइए, कि कैसे इस समस्या से छुटकारा पाएं ?' अभय कुमार ने कहा कि 'आप इस बकरे को दिनभर खिलाया पिलाया करें। और शाम के समय इस बकरे को एक भेड़िये के सामने बांध दीजिये। भेड़िये के डर से खाया-पिया सब हजम हो जाएगा।' इस उपाय को सुनकर सभी ने अभय कुमार का आभार प्रकट किया और कहा कि आपके बारे में तो हमें कुछ नहीं पता पर हम जान गये हैं कि आप प्रज्ञाशील हैं। उनने निवेदन किया कि हमारे गाँव पर राजप्रकोप हो गया है, और जब तक हमारे गाँव की दशा (स्थिति) सुधर नहीं जाती आप इसी गांव में रहकर हमारी रक्षा कीजिए।

ब्राह्मणों की समस्याएँ सुनकर अभयकुमार ने कहा कि 'ठीक है, जब तक राजप्रकोप शान्त नहीं हो जाता तब तक इस गाँव में रहकर आप लोगों की हर एक आपत्ति का निवारण करूँगा।' अभयकुमार के कहे अनुसार ब्राह्मणों ने एक भेड़िये को पकड़ लिया और शाम के समय बकरे को भेड़िये के सामने बांध देते। भेड़िये की गुर्राहट सुनकर बकरा बेचारा भय से कांपता रहता। सात दिन बाद बकरे को सम्राट के पास भेज दिया। सम्राट ने बकरे का वजन करवाया तो आश्चर्य हुआ कि उसका वजन अपरिवर्तित था। यह देख सम्राट को नन्दीग्राम के ब्राह्मणों की बुद्धिमत्ता पर संदेह हुआ और एक दूसरा उपाय सोचकर अपने सेवकों को नन्दीग्राम जाकर ब्राह्मणों को सूचित करने को कहा कि 'मेरे पास एक मुर्गा है जिसे अकेले लड़ाकर दिखाएं। अगर ऐसा नहीं कर पाए तो इस गाँव (नगर) को छोड़कर दूसरी जगह चले जाएँ।' राजसेवक का यह संदेश सुनकर ब्राह्मणों को आश्चर्य हुआ कि अकेले मुर्गे को कैसे लड़ाया जाए ? वे उदास होकर अभय कुमार के पास आये और कहा कि कोई रास्ता दिखाइए वरना हमें इस गाँव को छोड़कर जाना पड़ेगा। अभय कुमार ने अपने शांत स्वभाव से कहा कि शांत मन से सोचें कुछ न कुछ उपाय तो दिख (सूझ) ही जायेगा।

दूसरे दिन अभय राजकुमार ने अपने शांत स्वभाव से ब्राह्मणों को बताया कि अगर एक बड़ा-सा दर्पण मुर्गे के सामने रख दिया जाए तो वह अपने प्रतिबिंब को दूसरा मुर्गा समझकर उससे लड़ने लग जाएगा और राजा को उसके प्रश्न का उत्तर भी मिल

जाएगा।' अगले दिन राज दरबार में राजा ने मुर्गा ब्राह्मणों के सामने रखकर कहा कि अब इसे अकेले को लड़ाइए। ब्राह्मणों ने अभयकुमार ने जैसा कहा था वही किया। मुर्गे के सामने बड़ा-सा दर्पण रख दिया। मुर्गा दर्पण में अपनी परछाई (प्रतिबिंब) को दूसरा मुर्गा समझकर लड़ने लगा। जब राजा ने यह सब देखा तो वह हतप्रभ हो गया। राजा श्रेणिक ने ब्राह्मणों को परेशान करने के लिये फिर से एक योजना बनाई। और अपने सेवकों द्वारा ब्राह्मणों तक सूचना पहुँचाई कि 'महाराज ने बालू की रस्सी मँगाई है, जल्दी ही रस्सी तैयार करके भेजो वरना तुम्हारे लिये सही नहीं रहेगा। यह सूचना सुनकर ब्राह्मणों के पैरों के नीचे से मानों धरती खिंसक गई हो। वे तुरन्त अभय कुमार के पास गए और सारा किस्सा सुनाते हुए कहा कि अब तो आप ही हमारी सहायता कर सकते हैं। इस पर अभयकुमार ने कहा कि बुद्धिबल द्वारा हम असंभव कार्य को भी संभव बनाकर बड़ी सरलता से कर सकते हैं।

(क्रमशः)

माँ का आशीर्वाद....

परम गुरु भक्त थीं हमारी माँ
स्नेह, वात्सल्य की मूर्ति थी माँ
धर्मनिष्ठ और आदर्शों से जानी जाती थी माँ
घर सूना है आपके बिना, बहुत याद आ रही हो माँ

सारा जहाँ तुझमें ही छुपा है माँ
सही गलत का भेद बताने वाली थी माँ
सुरक्षित रखती थी हमको तेरे आँचल में माँ
घर सूना है आपके बिना, बहुत याद आ रही हो माँ

संवेदना, भावना, एहसासों से जुड़ा था रिश्ता तुमसे माँ
ये आँखे आपकी याद में कभी भी बरस जाती है माँ
दुंआओं और आशीष का खजाना थी माँ
घर सूना है आपके बिना, बहुत याद आ रही हो माँ

कोई शब्दों का रूप नहीं ले सकती माँ की महिमा
हर पल, हर क्षण, नजर में दिल में हो माँ
आज हम सब जहाँ हैं आपका ही आशीर्वाद है माँ
घर सूना है आपके बिना, बहुत याद आ रही हो माँ

– प्रियंका प्रवीण डूंगरवाल, नयागांव

गतांक के आगे

साध्वी श्री रूद्रसोमा (वीर की छठी शती)

संशोधक– मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.

आर्यरक्षित ने शिक्षा आचार्यश्री वज्रस्वामी से प्राप्त की। उनने अपने परिश्रम से नौ पूर्वों का ज्ञान पूर्ण कर लिया। आर्यरक्षित खूब परिश्रम करते थे।

उधर आर्यरक्षित के पिता सोम तथा माता रूद्र को अपने पुत्र की याद सताने लगी। विशेषतः माता विभिन्न कल्पनाओं के द्वारा शंका–कुशंकाओं से घिर गई। यह भी तथ्य है कि विद्याध्ययन के लिये माता रूद्रसोमा ने ही आर्यरक्षित को प्रेरित किया था। रूद्रसोमा जैन धर्म की उपासिका आदर्श महिला थी। वे जीवन की सार्थकता आत्मोत्थान से ही मानती थी लेकिन पुत्र का बिछोह दीर्घ समय से था। इस कारण उनके हृदय में समाया पुत्र प्रेम प्रबल हो गया था।

उनने अपने पति सोमदेव को भी तैयार किया कि यदि आर्यरक्षित हम दोनों की प्रवज्या की शर्त पर लौटता है, तो हमें वैसा करने को राजी होना है। दोनों ने अपने छोटे पुत्र फल्गुरक्षित को सभी तथ्य समझाकर आर्यरक्षित के पास भेजा। फल्गुरक्षित आर्यरक्षित के पास आया। उसने माता के तीव्र आग्रह का हवाला देकर आर्यरक्षित से लौटने की विनती की।

साथ ही माता–पिता के संकल्प की जानकारी भी दी। इस पर आर्यरक्षित ने फल्गुरक्षित से कहा कि– 'यदि माता–पिता मुझसे संयम ग्रहण करना चाहते हैं तो उनके संकल्प के प्रतीक रूप में भैया आप प्रवज्या ग्रहण कर लीजिये।' फल्गुरक्षित ने स्वीकृति देकर प्रवज्या ग्रहण कर ली। दोनों भाई ज्ञान की आराधना करने लगे।

आर्यरक्षित ने दसवें पूर्व का अध्ययन प्रारंभ कर दिया था। फल्गुरक्षित ने उन्हें माता–पिता के पास दशपुर चलने का आग्रह किया। आर्यरक्षित ने आचार्य वज्रस्वामी से अनुमति मांगी।

वज्रस्वामी ने कुछ समय और ठहरकर विद्याध्ययन पूर्ण करने का निर्देश दिया। आर्यरक्षित पुनः अध्ययन में जुट गये। फल्गुरक्षित उन्हें बराबर दशपुर चलने का स्मरण करवाता रहा। दुबारा आर्यरक्षित ने गुरु के पास जाकर दशपुर जाने की आज्ञा मांगी। इस बार वज्रस्वामी ने दशपुर जाने की अनुमति दे दी। दोनों भाइयों ने पैदल विहार कर दिया।

(क्रमशः)

मोक्षेण योजनाद् योग

(पुण्य सम्राट् गुरुदेवश्री के शिष्यरत्न मुनिश्री निपुणरत्नविजय)

मंगलाचरण....

कितना सुन्दर शब्द है।

भाव भी इतना ही सुंदर है। अनेक धर्मग्रन्थों के प्रारंभ में मंगल हेतु इष्टदेवों का स्मरण किया जाता है। मंगलाचरण के तीन कारण हैं 1. शिष्टाचार पालन 2. विघ्न विनाश यह विद्वान प्रवृत्ति। शिष्ट पुरुष इष्ट प्रवृत्ति प्रारंभ करने से पूर्व मंगलाचरण करते हैं, यह उनका सहज सिद्ध स्वभाव-आचार है। कोई भी शुभ कार्यों में विघ्नों की संभावना रहती है, अतः विघ्नों के विनाश हेतु मंगलाचरण करते हैं। जिन कार्यों में मंगलाचरण आदि नहीं किया जाता, ऐसे कार्यों में विद्वान, सुज्ञ पुरुष प्रवेश नहीं करते। इसीलिये मंगलाचरण किया जाता है। जिस तरह यात्रादि शुभ कार्य के पूर्व भी तिलक, गुड सेवन आदि द्रव्य मंगल किया जाता है, वैसे परमात्मा की स्तुतिरूप स्मरण द्वारा भाव मंगल किया जाता है।

योगदृष्टि ग्रन्थ की प्रथम गाथा में परमात्मा को **'योगीगम्य'**, ध्यान शतक ग्रंथ की प्रथम गाथा में **'योगीश्वर'**, योगशास्त्र ग्रन्थ की प्रथम गाथा में **'योगीनाथ'**, योगबिन्दु ग्रन्थ की प्रथम गाथा में **'योगीन्द्रवन्दितम्'** एवं योगशतक ग्रन्थ की प्रथम गाथा में **'जोगिणाहं'** विशेष लिखा गया है। इसके अलावा भी

* **योगीश्वरं विदित-योगमनेकमेकं (भक्तामर स्तोत्र)**
* **सर्वयोगरहस्याय, परमयोगीन्द्राय (वर्द्धमान शक्रस्तव)**
* **यो ध्येयः सर्वयोगिनाम् (अष्टक प्रकरण) (वीतराग स्तोत्र)।**
* **योगेसात्म्यमदृष्टिपि (वीतराग स्तोत्र)**

उक्त ग्रन्थों-स्तोत्रों में परमात्मा का इन विशेषणों द्वारा स्मरण किया गया है। 'योग' शब्द बहुत गहन है। जिसका स्वरूप योगदृष्टि, योगविंशिका, योगबिन्दु,

योगशतक, योगसार, ज्ञानसार, अध्यात्मसार आदि अनेक ग्रन्थों में विस्तृत रूप से बताया गया है।

हमें भी योगी बनने के लिये 'योग'का स्वरूप समझना होगा।

*** मोक्षेण योजनाद् योगः सवोऽप्याचार इष्यते (ज्ञानसार)**

मोक्ष के साथ आत्मा का सम्बन्ध कराने वाला सर्व आचार योग कहा जाता है। योग की प्राप्ति चरमावर्त काल में ही होती है। प्रारंभिक योग से लेकर योग की पराकाष्ठा स्वरूप समझने के लिये योग ग्रन्थों का अध्ययन जरूरी है। योगदृष्टि ग्रन्थ में आ. श्री हरिभद्रसूरिजी ने आठ दृष्टि के द्वारा योगी जीवों की स्थिति बताई है। आत्माभिमुखी साधना का विकासक्रम इन दृष्टियों के परिशीलन से ज्ञात हो सकता है। योग की शुरुआत व्यवहार से अनपुनर्बंधक अवस्था से एवं निश्चय से ग्रन्थिभेदजनित सम्यग्दर्शन से होती है। योग साधना के द्वारा ही मोक्ष प्राप्ति हो सकती है। आत्मस्वरूप में स्थिरता-रमणता-तन्मयता होकर वीतरागता तक की यात्रा बिना योग के संभव नहीं है।

योगी मन-वचन-काया के द्वारा वही प्रवृत्ति करता है, जो मोक्षमार्ग में आगे बढ़ाये। भोगी जीवों की त्रियोगप्रवृत्ति संसारवृद्धि का कारण बनती है। विषयों में रागादिभावों से लिप्त होकर भोगी जीव निरंतर आत्मा को मलिन करता है । भोगों के संस्कार अनादि से जुड़े होने से जीव उसी के प्रति आकर्षित रहकर उसी में डूबा रहता है। क्षणिक सुखों को वास्तविक सुख मानकर भवों में भटकता रहता है। भोगी जीव योगी के सुखों का अनुभव नहीं कर सकता। योगी जीव भी अपने सुखों को शब्दों में नहीं बता सकता, क्योंकि वह सुख अनुभवगम्य होते हैं। योगी जीवों को क्षणिक सुखों के प्रति कोई आकर्षण नहीं रहता। वो तो हमेशा अपने आत्मिक सुखों का ही भोग करते हैं ।

परमात्मा के योग विषयक विशेषणों की गहनता भी अद्भूत है। मंगलाचरण की गाथाओं में लिखे गये विशेषणों का चिन्तन करना चाहिये। वो योगी कैसे हैं ? जिनके स्वामी परमात्मा हैं, जिनके द्वारा परमात्मा स्मरणीय है। जानने के लिये आगे पढ़ें ।

।। शास्त्रवचनम् ।।

विनयः - किंस्वरूपम् ?

(पुण्यसम्राट ज्ञानञ्जनम् पर्व-पारण)

1. **विनयमृते शास्त्रं नास्ति**– विनय बिना शास्त्र नहीं होते ।
2. **सर्वेषां कल्याणां भाजनं विनयः** – सर्व कल्याण का आधार विनय है ।
3. **विणओ सासणे मूलं**– विनय धर्म का मूल है ।
4. **विणीओ संजओ भवे**– विनयवान संयमी बनता है ।
5. **विणओ आवहइ सिरिं**– विनय सर्व सम्पत्ति को प्राप्त करवाता है।
6. **लहइ विणीओ जसं च कितिंच** – विनयवान यश एवं कीर्ति को प्राप्त करवाता है ।
7. **विणय समो नत्थि गुणो**– विनय समान कोइ गुण नहीं है ।
8. **विणीआण पुरिसाणं नत्थि असज्झं कज्जं** – विनयवान पुरुषों को कुछ असाध्य नहीं है।
9. **धम्मस्स विणओ मूलं परमो से मुक्खो**– विनय धर्म का मूल है, मोक्ष उसका फल है।
10. **विवत्ति अविणीयस्स सपत्ति विणीयस्स**– अविनीत को आपत्ति होती है, विनीत को संपत्ति होती है।
11. **विनयेन दोषाः किल तमांसीव क्षीयन्ते**–सभी दोष अंधकार की तरह विनय द्वारा नष्ट हो जाते हैं ।
12. **तम्हा विणयमेसिज्जा, सीलं पडिलभेज्जओ**–विनयधर्म के पालन से शीलधर्म की प्राप्ति होती है।
13. **गुरु विनयः श्रुतगर्भो मूलश्चाक्ष्या अपिज्ञेय**– श्रुतगर्भित गुरु विनय विराधना त्याग का मूल है।

* वीसस्थानक में 10 वां स्थान 'विनय' का है।
* समकित के 67 भेद में 10 भेद 'विनय' के हैं।
* 6 आभ्यन्तर तप में द्वितीय 'विनय'है।
* विनय-5 प्रकार-लोकोपचार, अर्थ, काम, भय, मोक्ष।
* मोक्ष विनय- 5 प्रकार-दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप, औपचारिक ।
* औपचारिक विनय- 2 प्रकार 1. प्रतिरूप 2. परिहार
* मन प्रतिरूप-8 भेद, वचन प्रतिरूप- 4 भेद, काया प्रतिरूप-2 भेद
* आशातना परिहार विनय = 52 भेद

(आधार-प्रशमरति, उपदेशमाला, पुष्पमाला, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन सूत्र, द्वात्रिंशद् - द्वात्रिंशिका, षोऽशक आदि)

गुरु सप्तमी आगामी 25 वर्ष तक

संशोधक– मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.

वि.सं. 2075	पोष सुदि 7	दि. 13 जनवरी 2019, रविवार
वि.सं. 2076	पोष सुदि 7	दि. 2 जनवरी 2020, गुरुवार
वि.सं. 2077	पोष सुदि 7	दि. 20 जनवरी 2021, बुधवार
वि.सं. 2078	पोष सुदि 7	दि. 9 जनवरी 2022, रविवार
वि.सं. 2079	पोष सुदि 7	दि. 29 दिसम्बर 2022, गुरुवार
वि.सं. 2080	पोष सुदि 7	दि. 17 जनवरी 2024, बुधवार
वि.सं. 2081	पोष सुदि 7	दि. 06 जनवरी 2025, सोमवार
वि.सं. 2082	पोष सुदि 7	दि. 27 दिसम्बर 2025, शनिवार
वि.सं. 2083	पोष सुदि 7	दि. 15 जनवरी 2027, शुक्रवार
वि.सं. 2084	पोष सुदि 7	दि. 04 जनवरी 2028, मंगलवार
वि.सं. 2085	पोष सुदि 7	दि. 23 दिसम्बर 2028, शनिवार
वि.सं. 2086	पोष सुदि 7	दि. 11 जनवरी 2030, शनिवार
वि.सं. 2087	पोष सुदि 7	दि. 31 दिसम्बर 2030, मंगलवार
वि.सं. 2088	पोष सुदि 7	दि. 18 जनवरी 2032, रविवार
वि.सं. 2089	पोष सुदि 7	दि. 07 जनवरी 2033, शुक्रवार
वि.सं. 2090	पोष सुदि 7	दि. 28 दिसम्बर 2033, बुधवार
वि.सं. 2091	पोष सुदि 7	दि. 16 जनवरी 2035, मंगलवार
वि.सं. 2092	पोष सुदि 7	दि. 06 जनवरी 2036, रविवार
वि.सं. 2093	पोष सुदि 7	दि. 25 दिसम्बर 2036, गुरुवार
वि.सं. 2094	पोष सुदि 7	दि. 12 जनवरी 2038, मंगलवार
वि.सं. 2095	पोष सुदि 7	दि. 01 जनवरी 2039, शनिवार
वि.सं. 2097	पोष सुदि 7	दि. 08 जनवरी 2041, मंगलवार
वि.सं. 2096	पोष सुदि 7	दि. 20 जनवरी 2040, शुक्रवार
वि.सं. 2098	पोष सुदि 7	दि. 29 दिसम्बर 2041, रविवार
वि.सं. 2099	पोष सुदि 7	दि. 17 जनवरी 2043, शनिवार
वि.सं. 2100	पोष सुदि 7	दि. 07 जनवरी 2044, गुरुवार

कालचक्र तथा उसके आरे

(मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.)

श्री पद्मप्रभ भगवान

साधुओं में वैक्रियलब्धि धारी	16 हजार 108	12 हजार	केवली
अवधिज्ञानी	10000	10300	मनः पर्यवज्ञानी
चौदह पूर्वधारी	2300	9600	चर्चावादि
केवली साध्वीजी	24 हजार	2 लाख 76 हजार	श्रावकों की संख्या
श्राविकाओं की संख्या	5 लाख 5 हजार	अजितसेन	मुख्य श्रावक
प्रथम देशना का विषय	संसार भावना	250 धनुष	शरीर प्रमाण
चैत्यवृक्ष की ऊँचाई	डेढ़ गाउ	मगसर वदि 11	मोक्ष-तिथि
मोक्ष-स्थान	सम्मेत शिखर	1 उपवास	मोक्ष के दिन तप

दीक्षा बाद प्रथम पारणे में मिला	खीर	6 मास	छद्मावस्था
केवल ज्ञान तिथि	चैत्र सुदि 15	कोशांबी	केवल ज्ञान भूमि
जिस वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान हुआ	छत्र वृक्ष	चित्रा	केवल ज्ञान नक्षत्र
केवल ज्ञान के दिन तप	चौथ मुक्त	चैत्र सुदि 15	शासन स्थापना
शासन यक्ष	कुसुम	अच्युता	शासन यक्षिणी
केवल ज्ञान पर्याय	6 मास16 पूर्वांगन्यून 1 लाख पूर्व	107 गणधर	गणधरों की संख्या
प्रथम गणधर	सुव्रत	330000	साधुओं की संख्या
साध्वियों की संख्या	4 लाख 20 हजार	सुव्रत	प्रथम शिष्य

उमास्वाती और उनका तत्वार्थ सूत्र

(डॉ. सागरमल जैन)

यह सत्य है कि उच्चैर्नगर शाखा का सम्बन्ध किसी ऊँचानगर से ही हो सकता है। इस सन्दर्भ में हमने इससे मिलते-जुलते नामों की खोज प्रारंभ की। हमें ऊँचाहार, ऊँचडोह, ऊँचोबस्ती, ऊँचौलिया, ऊँचाना, ऊँच्चेहरा आदि कुछ नाम प्राप्त हुए। हमें इन नामों में ऊँचहार (उ.प्र.) और ऊँचेहरा (म.प्र.) ये दो नाम अधिक निकट प्रतीत हुए। ऊँचाहार की सम्भावना भी इसलिए हमें उचित नहीं लगी कि उसकी प्राचीनता के सन्दर्भ में विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है। अतः हमने ऊँचेहरा को ही अपनी गवेषणा का विषय बनाना उचित समझा। ऊँचेहरा मध्यप्रदेश के सतना जिले में सतना रेडियो स्टेशन से 11 कि.मी. दक्षिण की ओर स्थित है। ऊँचेहरा से 7 कि.मी. उत्तर-पूर्व की ओर भरहत का प्रसिद्ध स्तूप स्थित है, इससे इस स्थान की प्राचीनता का भी पता लग जाता है। वर्तमान ऊँचेहरा से लगभग 2 कि.मी. की दूरी पर पहाड़ के पठार पर यह प्राचीन नगर स्थित था, इसी से इसका ऊँचानगर नामकरण भी सार्थक सिद्ध होता है। वर्तमान में यह वीरान स्थल 'खोह' कहा जाता है। वहाँ के नगर निवासियों ने मुझे यह भी बताया कि पहले इसे 'उच्चकल्पनगरो' कहा जाता था और यहाँ से बहुत सी पुरातात्त्विक सामग्री भी निकली थी। यहाँ से गुप्त काल अर्थात् ईसा की पाँचवी शती के राजाओं के कई दानपत्र प्राप्त हुए हैं। इन ताम्रदानपत्रों में उच्चकल्प (उच्छकल्प) का स्पष्ट उल्लेख है, ये दान-पात्र गुप्त सं. 156 से गुप्त सं. 209 के बीच के हैं। (विस्तृत विवरण के लिये देखें ऐतिहासिक स्थानावली-विजयेन्द्र कुमार माथुर, पृ. 260-261)। इससे इस नगर की गुप्तकाल में तो अवस्थिति स्पष्ट हो जाती है। पुनः जिस प्रकार विदिशा के समीप सांची का स्तूप निर्मित हुआ है उसी प्रकार इस उच्चैनगर (ऊँचहरा) के समीप भरहुत का स्तूप निर्मित हुआ था और यह स्तूप ई.पू. दूसरी या प्रथम शती का है। इतिहासकारों ने इसे शुंग काल का माना है। भरहुत् के स्तूप के पूर्वी तोरण पर 'वाच्छिपुत धनभूति का उल्लेख है। पुनः अभिलेखों में सुगनं रजे' ऐसा उल्लेख होने से शुंगकाल में इसका होना सुनिश्चित है। अतः उच्चैनगिर शाखा का स्थापना काल (लगभग ई. पू. प्रथम शती) और इस नगर का सत्ताकाल समान ही है। अतः इसे उच्चैनगिर शाखा का उत्पत्ति स्थल मानने में काल दृष्टि से कोई बाधा नहीं है। ऊँचेहरा (उच्चकल्पनगर) एक प्राचीन नगर था, इसमें अब कोई संदेह नहीं रह जाता है। यह नगर वैशाली या पाटलीपुत्र से वाराणसी होकर भरूकच्छ को जाने वाले अथवा श्रावस्ती से कौशाम्बी

होकर विदिशा, उज्जयिनी और भरुकच्छ जाने वाले मार्ग में स्थित है। इसी प्रकार वैशाली-पाटलिपुत्र से पंपावती (पँवाया), गोपाद्रि (ग्वालियर) होते हुए मथुरा जाने वाले मार्ग पर भी इसकी अवस्थिति थी। उस समय पाटलीपुत्र से गंगा और यमुना के दक्षिण से होकर जाने वाला मार्ग ही अधिक प्रचलित था, क्योंकि इसमें बड़ी नदियाँ नहीं आती थीं, मार्ग पहाड़ी होने से कीचड़ आदि भी अधिक नहीं होता था। जैन साधु प्रायः यही मार्ग अपनाते थे।

प्राचीन यात्रा मार्गों के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि ऊँचानगर की अवस्थिति एक प्रमुख केन्द्र के रूप में थी। यहाँ से कौशाम्बी, प्रयाग, वाराणसी आदि के मार्ग थे। पाटलीपुत्र को गंगा-यमुना आदि बड़ी नदियों को बिना पार किये जो प्राचीन स्थल मार्ग था, उसके केन्द्र-नगर के रूप में उच्चकल्प नगर (ऊँचानगर) की स्थिति सिद्ध होती है।

यह एक ऐसा मार्ग था, जिसमें कहीं भी कोई बड़ी नदी नहीं आती थी। अतः सार्थ निरापद समझकर इसे ही अपनाते थे। प्राचीन काल से आज तक यह नगर धातुओं के मिश्रण के बर्तनों हेतु प्रसिद्ध रहा है। आज भी वहाँ कांसे के बर्तन सर्वाधिक मात्रा में बनते हैं। ऊँचेहरा का उच्चैर शब्द से जो ध्वनि-साम्य है वह भी हमें इसी निष्कर्ष के लिए बाध्य करता है कि उच्चैर्नगर शाखा की उत्पत्ति इसी क्षेत्र से हुई थी।

(क्रमशः)

सद्गुरु समर्पणम्

सद्गुरु समर्पणम्-संयोजक-मुनि श्री निपुणरत्नविजयश्री म., प्रकाशक-चेतन्य काश्यप फाउंडेशन, रतलाम, प्राप्ति स्थान-जयन्त मो. 09444333444 तथा मो. 09425960772, पृष्ठ - कव्हर सहित 76, पूरी पुस्तक आर्ट कार्ड पर बहुरंगी-मूल्य-उल्लेख नहीं छपाई-सफाई- उत्तम।

प्रस्तुत पुस्तक मोबाइल आकार में तथा उसकी डिजाईन में प्रकाशित किये जाने का प्रयोग किया गया है। गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म. की स्मृति में उनके ही शिष्य ने भावनाओं का उद्रेक कर इसकी रचना की है तथा उन्हें समर्पण किया है। गुरु शिष्य को संयम, संस्कार व सन्मार्ग प्रदान करते हैं। इसकी अभिव्यक्ति तथा गुरु के प्रति समर्पण की सराहनीय सूक्ति इस पुस्तक में है। मुनिराजश्री का प्रयास उनके हृदय के श्रद्धाभाव से संपूरित है। पुस्तक का अधिकारिक प्रचार सद्गुणों के विकास में सहायक होगा।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

उपाध्याय यशोविजयजी एवं द्वात्रिंशद् द्वात्रिंशिका ग्रन्थ (2)

(साध्वी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

उद्भट मनीषी महान ग्रन्थकार सरस्वती पुत्र उपाध्याय यशोविजयजी के नाम से साहित्य जगत में कौन अनभिज्ञ होगा ? उपाध्याय यशोविजयजी को आचार्य हरिभद्र तथा हेमचन्द्राचार्य की परम्परा का अंतिम तेजस्वी विद्वान माना जाता है। यशोविजयजी जैसे प्रकांड विद्वान एवं समर्थ सर्जक को कई विद्वानों ने हरिभद्र लघु बांधव इस बिरुद से नवाजा है। उपाध्याय यशोविजयजी एक ऐसे धृतिसंपन्न अनुपम मनीषी थे जिन्होंने जिनवाणी रूपी समुद्र में गहरी डुबकी लगाकर अनेक ग्रन्थ रूपी सुन्दर मोती उपलब्ध किये हैं। वे आज विद्यमान नहीं हैं किन्तु उनकी ज्ञान सौरव से आज भी सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय महक रहा है।

एक दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य यह है कि, जैन धर्म के परम प्रभावक, महान दार्शनिक और तार्किक उपाध्याय यशोविजयजी जैसे महापुरुष का क्रम बद्ध जीवन वृत्त हमें उपलब्ध नहीं होता है। उनके किसी सहपाठी अथवा शिष्य के द्वारा इस प्रकार की रचना का कोई कार्य नहीं किया गया। किसी पट्टावली के द्वारा भी उनकी विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती है। कांति विजयजी नाम के एक मुनिवर ने उनके कुछ वर्षों पश्चात् सुजसवेलीभास नाम की एक छोटी सी कृति की रचना की। जिसमें उ. यशोविजयजी का जीवनवृत्त उपलब्ध होता है किन्तु इस कृति से भी पर्याप्त जानकारी प्राप्त नहीं होती है।

सुजसवेलीभास के अनुसार मां सोभागदे की पवित्र कुक्षि से उपाध्याय यशोविजयजी का जन्म हुआ। इनके बचपन का नाम जसवंत था। यशोविजयजी का जन्म स्थान गुर्जर देश में कनोडु नामक गाँव है।

विक्रम संवत् 1663 में यशोविजयजी के गुरु नयविजयजी ने स्वयं वस्त्रपट पर मेरूपर्वत का आलेखन किया था। यह चित्रपट वर्तमान में सुरक्षित रखा है। इस चित्रपट में उपाध्याय विजयजी का भी उल्लेख 'गणि' के विशेषण से किया गया है।

इस चित्रपट के अनुसार हम विचार करें तो 1963 में यशोविजयजी गणि थे तो यह मानना होगा कि, सं. 1953 के लगभग उनकी दीक्षा निष्पन्न हुई होगी। अगर वे बालदीक्षित हों तो आठ वर्ष की सुकुमारवय में वे श्रामण्य के मार्ग पर चल पड़े होंगे अतः वि. संवत् 1645 के तकरीबन इनका जन्म हुआ होगा। यशोविजयजी का

स्वर्गवास वि. संवत् 1743-44 में हुआ था। अतः संवत् 1645 से संवत् 1744 तक का इनका जीवन काल सौ वर्ष का रहा होगा। ऐसा इस पट के आधार पर निश्चित किया जा सकता है।

सुजलवेलीभास के अनुसार संवत् 1688 में नयविजयजी कनोडु पधारे थे और इसी वर्ष यशोविजयजी की बड़ी दीक्षा पाटन में सम्पन्न हुई थी।

'संवत् सौल अठ्यासियैजी रही कुणगिरि चौमासी
श्री नयविजयजी पंडितवरुजी आण्याकन हौड़े उल्लासि
विजयदेवगुरु हाथनीजी बड़ी दीक्षा हुई खास
संवत् सौल अठ्यासियैजी करता योग अभ्यास

दीक्षा और बड़ी दीक्षा एक वर्ष में संवत् 1688 में सम्पन्न हुई एवं दीक्षा के समय उनकी उम्र कम थी ऐसा सुजसवेलीभास के अनुसार प्रतीत होता है। उसमें लिखा है-

'लघुता पण बुद्धि आलगोजी नामे कुंवर जसवंत'

इस पंक्ति से प्रतीत होता है कि दीक्षा के समय उनकी उम्र 8-9 वर्ष की होगी अतः इस आधार पर इनका जन्म 1679-80 में होना चाहिए। इनका स्वर्गवास 1743-44 में उबोई में हुआ था इस आधार पर आयुष्य 64-65 वर्ष का माना जा सकता है।

इन दोनों श्रोतों में किसको प्रमाण माना जाय, यह एक प्रश्न उपस्थित होता है। चित्रपट के विषय में तो निश्चित है कि, वह उनके गुरु नयविजयजी के द्वारा तैयार की हुई मूल वस्तुओं में से एक है। सुजसवेलीभास के कर्ता ने अपनी हस्तप्रति में अपने हस्ताक्षर नहीं किये हैं। वह प्रति बाद में लिखाई गई प्रतीत होती है। अतः इस नकल में दीक्षा वर्ष लिखने में कोई त्रुटि संभव हो सकती है। इस आधार पर हम चिंतन करे तो चित्रपट की विश्वनीयता अधिक प्रतीत होती है।

(क्रमशः)

श्री शत्रुंजय महातीर्थ

* सिद्धाचल तीर्थाधिराज श्री आदिनाथ भगवान का जो व्यक्ति 108 पानी के कलश भरकर स्नात्र महोत्सव करता है, उस व्यक्ति का अगर मघा, मूल विगेरे अशुभ नक्षत्र में जन्म हुआ हो तो भी सभी दोष नष्ट हो जाते हैं। * 500 वर्ष पहले देव मंगल मणि ने चंदन तलावड़ी के पास में अट्ठम किया था उस समय कपर्दि यक्ष ने आदिनाथ की रत्नमय प्रतिमा बतायी, जिससे तीसरे भव में मोक्ष में जायेंगे।* भरत चक्रवर्ती के जीर्णोद्धार कराने के बाद 10 लाख खेचर (विद्याधर) ने ऐसा अभिग्रह किया कि हम यहाँ पर हमेशा जिनपूजा करेंगे । * देवदत्त ने जब पुण्डारिक गणधर के पास संयम लिया तब 10, 000 जैन श्रावकों ने संयम लिया। - आत्मोद्धारक

शास्त्रवार्त्ता समुच्चय ग्रन्थ में सर्वज्ञता की सिद्धि (2)

(साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

केवल ज्ञान विश्व के समस्त द्रव्य-पदार्थों को एक साथ जानने वाला ज्ञान केवल ज्ञान है। यह ज्ञान सकल प्रत्यक्ष होता है। विश्व के सकल चराचर पदार्थों को जानने वाला, देखने वाला होने के कारण केवल ज्ञानी को सर्वज्ञ-सर्वदर्शी कहा जाता है। जब आत्मा के ज्ञानगुण को आच्छादित करने वाले समस्त आवरणों का सर्वथा समूल क्षय हो जाता है तब निरावरण आत्मा की विशुद्ध ज्ञान-ज्योति अपने सहज स्वरूप में जगमगाने लगाती है। उस निर्मल विशुद्ध ज्ञान-दर्पण में त्रिभुवन के समस्त पदार्थों एवं समस्त भूतभावी और वर्तमान पर्यायें प्रतिबिम्बित होने लगती हैं।

यह ज्ञान सकल-परिपूर्ण एवं एक रूप होने के कारण इसके कोई भेद नहीं हैं। नन्दीसूत्र में कहा है-

'अह सव्व दव्व परिणाम भाव विण्णति कारणमणंतं ।
सासयमप्पडिवाइ एगविहं केवल नाणं ।।66।।

केवल ज्ञान समस्त द्रव्य एवं पर्यायों के ज्ञान का कारण है। वह अनन्त, शाश्वत, अप्रतिपाती और एक ही प्रकार का है। केवल ज्ञान समस्त द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के अस्तित्व का परिच्छेदक है। ज्ञेय वस्तु की अनन्तता के कारण उनको ग्रहण करने वाला यह ज्ञान भी अनन्त है। यह ज्ञान प्रकट होने के पश्चात् सदा बना रहता है, अतः शाश्वत है। यह एक बार आर्विभूत हो जाने के पश्चात् जाता नहीं है, अतएव अप्रतिपाती है। आवरणों के सर्वथा एवं निर्मूल रूप से क्षय हो जाने के पश्चात् आविर्भूत होने से यह न्यूनाधिक नहीं होता, अतएव यह एक ही रूप है अर्थात इसके भेद नहीं हैं। क्षायोपशमिक ज्ञानों में न्यूनाधिकता हो सकती है, किन्तु क्षायिक होने से इसमें न्यूनाधिकता सम्भव नहीं है। यह ज्ञान अन्य ज्ञानों की अपेक्षा न रखने से निरपेक्ष है। यह ज्ञान केवल है अर्थात् परिपूर्ण, एक है। केवल ज्ञान हो जाने के बाद मति आदि क्षायोपशमिक ज्ञान नहीं रहते। अकेला केवल ज्ञान ही रहता है। जिस प्रकार सर्वशुद्ध पट में देवशुद्धि नहीं होती, उसी तरह सर्वशुद्ध केवल ज्ञान हो जाने पर देश शुद्ध गति आदि क्षायोपशमिक ज्ञान का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं रहता।

सर्वज्ञता की सिद्धि :

ज्ञान आत्मा का स्वभाव है, अतएव घने से घने आवरणों के होने पर भी वह किसी न किसी अंश में बना रहता है। ज्ञान को जब आत्मा का स्वभाव मान लिया जाता है और आवरणों के कारण न्यूनाधिक रूप में उसका आच्छन्न और आवृत्त होना स्वीकार किया जाता है, तो यह भी स्वीकार करना होगा कि उन आवारक आवरणों के सर्वथा हट जाने पर ज्ञान अपने सहज एवं परिपूर्ण स्वरूप में प्रकट हो उठता है। ज्ञान का परिपूर्ण प्राकट्य ही सर्वज्ञता है।

सर्वज्ञता की सिद्धि करते हुए हरिभद्रसूरि ने शास्त्रवार्त्ता समुच्चय में कहा है –

दोषाणां ह्रासदृष्टेयह तत्सर्वक्षय संभवत् ।
तत्सिद्धौ ज्ञायते त्राङ्गैस्तस्थातिशय इत्यपि ।।63।।

एक व्यक्ति में दोषों का कम होते जाना हम देखते ही हैं और इसलिए एक व्यक्ति में दोषों का सर्वथा नष्ट होना एक संभव घटना सिद्ध होती है, ऐसी दशा में विद्वानों को यह पता चल ही गया कि एक व्यक्ति में असाधारण विशेषता (अर्थात् सर्वज्ञता) कैसे आती है। चरित्र दोषों के सर्वथा क्षय की अवस्था ही सर्वज्ञता की अवस्था है।

'हृद्गताशेषसंशीतिनिर्णयादिप्रभावतः'

एक सर्वज्ञ व्यक्ति अपने समय में अपने श्रोताओं के हृदय की समस्त शंकाओं का निवारण करने में समर्थ होता था और उनके ऐसे सामर्थ्य से सिद्ध होता था कि वह व्यक्ति सर्वज्ञ है, तथा सर्वज्ञ व्यक्ति की कृति में कही गई बातें आज भी गलत होती नहीं और इससे आज यह सिद्ध होता है कि वह व्यक्ति सर्वज्ञ था।

किसी सर्वज्ञ व्यक्ति का दर्शन हमें आज न होने पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि एक सर्वज्ञ व्यक्ति का अस्तित्व ही असंभव है– उसी प्रकार जैसे किसी चक्रवर्ती राज्य का दर्शन हमें आज न होने पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि एक चक्रवर्ती राज्य का अस्तित्व ही असंभव है।

इसी प्रकार अतिन्द्रिय पदार्थों के विषय में प्रतिभाजन्य ज्ञान का संबंध है वह उत्तम वैद्य, आत्मसंयमी योगी आदि व्यक्तियों द्वारा आज भी यथार्थ भाव से प्राप्त किया जाता है। हरिभद्र का कहना है कि जिस प्रकार वे व्यक्ति प्रतिभा की सहायता से इन उन अतीन्द्रिय पदार्थों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं उसी प्रकार एक सर्वज्ञ व्यक्ति प्रतिभा की सहायता से सभी अतीन्द्रिय पदार्थों की वस्तुतः सभी पदार्थों की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

(क्रमशः)

पूण्य सम्राट लोकसन्त श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. की 23 वीं मासिक पूण्य तिथि पर जापान में पूज्य गुरुदेव के भक्तों द्वारा कार्यक्रम आयोजित कर पूजा अर्चना के

कार्यक्रम की चित्रमय झलकियाँ

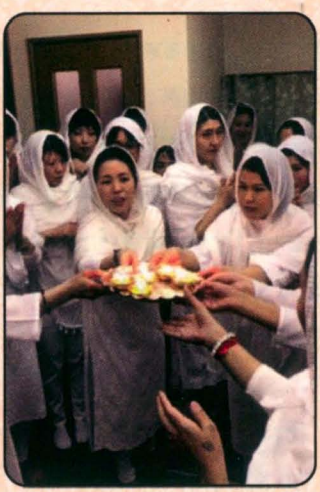
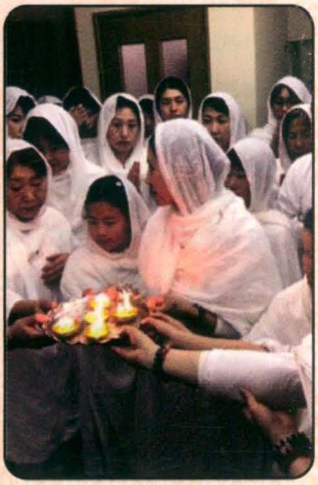
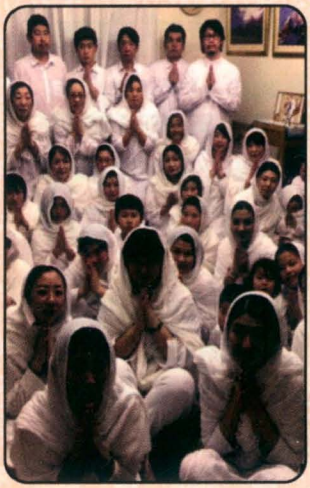
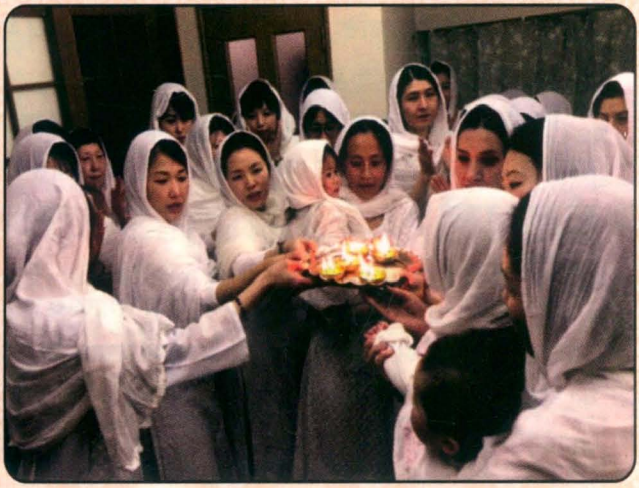

ગુર્જર જૈન જ્યોત

પ્રેરણાદાતા : પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્યદેવેશ શ્રીજયંતસેન સૂરીશ્વરજી. મ.સા.

સંપાદક : સુરેશ એચ. સંઘવી

ફ્લેટ નં. બી–૧૦૩, બોરસલ્લી એપાર્ટમેન્ટ,
ત્રીજો માળ, ખાનપુર જી.પી.ઓ. નજીક,
ખાનપુર – અમદાવાદ–૧.
મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

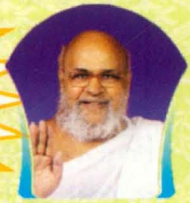

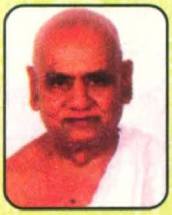

પૂજ્ય દાદા ગુરુદેવની પુણ્યભૂમિ શ્રી મોહન ખેડા તીર્થ મધ્યે....

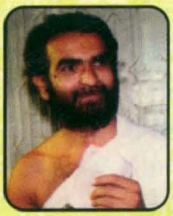

શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમના પાવન પરિસરમાં ચૈત્ર માસની શ્રીનવપદજી આરાધના સ્વરૂપ આયંબિલ ઓળીનું ભવ્ય આયોજન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક શ્રીમદ્વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ વિશાળ સંખ્યામાં શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી નિશ્રામાં પૂજ્ય દાદા ગુરુદેવની પુણ્યભૂમિ શ્રી મોહનખેડા તીર્થ મધ્યે શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમના પાવન પરિસરમાં ચૈત્ર માસની શ્રીનવપદજી આરાધના સ્વરૂપ આયંબિલ ઓળીનું ભવ્ય આયોજન કરાયેલ છે. સંવત ૨૦૭૫ના ચૈત્ર સુદ ૬ ને ગુરુવાર તા. ૧૧-૪-૨૦૧૯ના રોજથી સંવત ૨૦૭૫ના ચૈત્ર સુદ ૧૫ ને શુક્રવાર તા. ૧૯-૪-૨૦૧૯ દરમ્યન આયંબિલ ઓળી કરવા માગતા આરાધકોને તેમનું નામ લખાવવા આયોજક - નિમંત્રક શ્રી રાજરાજેન્દ્ર જૈન શ્વે. તીર્થદર્શન પબ્લિક ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ દ્વારા અનુરોધ કરાયો છે. ઓળી આરાધનામાં જોડાવા માગતા આરાધકો શ્રી રાહુલભાઈ - ૯૮૨૬૦ ૪૮૫૧૨ તથા શ્રી અનિલભાઈ ૦૯૪૨૫૯ ૧૪૨૪૬નો સંપર્ક કરી નામ નોંધાવી શકશે.

સિયાણા નગરે...
શ્રી કેસરિયાનાથ - રાજેન્દ્રસૂરિ પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા એકાદશાન્હિકા મહામહોત્સવ સંપન્ન

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક સંઘ શ્રી સુવિધિનાથ જૈન પેઢી સિયાણા અને શ્રી કેસરિયાનાથ રાજેન્દ્રસૂરિ પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા મહામહોત્સવ સમિતિના તત્વાધાનમાં શ્રી અભિધાન રાજેન્દ્ર વિશ્વકોષ ઉદ્‌ભવ સ્થળી અને પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની દીક્ષા ભૂમિ, પ્રાચીન ઐતિહાસિક મરૂધર મુગટ શિરોમણી સિયાણાનગરે શ્રી કેસરિયાનાથ ઋષભદેવ, પાર્શ્વનાથ, વિહરમાન શ્રી સિમંધર સ્વામી, શ્રી અભિનંદન સ્વામી આદિ જિનબિંબ તથા ગુરુગૌતમસ્વામી - રાજેન્દ્રસૂરિ આદિ ગુરુબિંબના પ્રતિષ્ઠા અંજનશલાકા નિમિત્તે એકાદશાન્હિકા મહામહોત્સવનું આયોજન કરાયું હતું.

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા પરમપૂજ્ય યોગિરાજ, સંયમવયઃસ્થવીર શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા.ની દિવ્યકૃપાથી સિયાણાનગરે ઉજવવા જઇ રહેલા મહામહોત્સવમાં નિશ્રા પ્રદાન કરવા પધારતા પરમ પૂજ્ય ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્ વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., પ્રતિષ્ઠા માર્ગદર્શક ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદનો સિયણાનગરે ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયા સાથે પ્રવેશ થયો હતો.

આ મહામહોત્સવના દરેક દિવસે મહાપૂજન, જિનાલયનો શણગાર, ભવ્યાતિભવ્ય અંગરચના, સુપ્રસિદ્ધ સંગીતકારો દ્વારા ભક્તિભાવના, અદકેરા આકર્ષણ સાથેની શોભાયાત્રા, ત્રણેય ટાઈમની સાધર્મિક ભક્તિ અને અલબેલા ધર્મપ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા.

અહો આશ્ચર્યમ્.... સિયાણાનગરના પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા એકાદશાન્હિકા મહામહોત્સવ તો દીપી ઉઠ્યો હતો પણ તે સાથે સિયાણાનગરની પાવનભૂમિ પર એક નવો ઇતિહાસ રચાયો હતો. પ્રતિષ્ઠાચાર્ય ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., પ્રતિષ્ઠા માર્ગદર્શક, ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયજયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પાવનકારી નિશ્રા તથા મારવાડ કેસરી આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય નરેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા., કોંકણ કેસરી આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય લેખેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પ્રત્યક્ષ સાનિધ્ય અને ક્રિયાદક્ષ આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયાનંદ સૂરિશ્વરજી મ.સા., જ્યોતિષ સમ્રાટ આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયઋષભચંદ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સંદેશ સાનિધ્યથી સમસ્ત શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોમાં હર્ષની

હેલી વરસી ગઇ હતી. તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય પ્રાતઃ સ્મરણીય દાદા ગુરુદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ગચ્છનો તેજસ્વી પ્રભાવ કેવો છે તેનો છએ છ આચાર્ય ભગવંતોએ ચારેય ફિરકાઓના સંઘોને અખંડ એકતાનો પ્રચંડ પરિચય અપાવ્યો હતો. અત્યારે પૂજ્ય દાદા ગુરુદેવના લાખો ભક્તો ઇચ્છી રહ્યા છે કે સમસ્ત શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘો પરિષદ પરિવાર એક મોટા સ્તરે ધર્મપ્રભાવક કાર્યક્રમનું આયોજન કરી પૂજ્ય દાદાગુરુદેવના ગચ્છના છએ આચાર્ય ભગવંતો એક મંચ પર બિરાજે અને ગચ્છની ગરિમા છે તેના કરતાં પણ વધુ ઉંચાઇ પર લઇ જઇ પૂજ્ય દાદા ગુરુદેવની પ્રભાવકતાનો પરચો બતાવે.

લાખો ભક્તોની પ્રબળ ઇચ્છા આગામી સમયમાં શ્રી ભાંડવપુર તીર્થે યોજાનાર પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવમાં પૂર્ણ થશે તેવું દેખાઇ રહ્યું છે.

પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા

સંવત ૨૦૭૫ના મહા સુદ ૬ ને સોમવાર તા. ૧૧-૨-૨૦૧૯

તા. ૧૦ની મોડી રાત્રિએ અંજનવિધિ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. તા. ૧૧-૨-૨૦૧૯ સિયાણાવાસીઓના હૈયાં હરખાવતો દિલડાને ડોલાવતો મહામહોત્સવનો મુખ્ય પ્રતિષ્ઠાનો શુભદિવસ અને દેવવિમાન જેવા જિનાલયમાં શ્રી કેસરિયા ઋષભનાથ, પાર્શ્વનાથ, આદિજિનબિંબ, ગણધરબિંબ - ગુરુબિંબની પ્રતિષ્ઠા થવાની હોઇ સિયાણાનગરમાં મહોત્સવની ઉજવણીનો આનંદ ચરમસીમાએ હતો. શુભઘડી નજીક આવી પહોંચતા ગચ્છાધિપતિ સહિત ઉક્ત આચાર્ય ભગવંતો અને વિશાળ સંખ્યામાં શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદે હીંકાર મુહૂર્તમાં જિનાલયમાં પ્રવેશ કર્યો હતો. જ્યાં જય જયકારના નારા સાથે પરિસર ગુંજી ઉઠ્યું હતું. જિનાલયમાં લાભાર્થી પરિવારના સભ્યો પૂજાના વસ્ત્રોમાં પહેલેથી જ ઉપસ્થિત હતા. પ્રતિષ્ઠા વિધિ આચાર્ય ભગવંતો દ્વારા સંપન્ન હતી અને એ જ શુભમુહૂર્તમાં ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્ વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., પૂજ્ય આચાર્ય ભગવંતો અને શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના સાનિધ્યમાં ઓમ પુષ્પહ, રક્ષમ સ્વાહા... પુણ્યાહામ્..પુણ્યાહામ્... આદિ વિભિન્ન મંત્રોચ્ચાર સાથે શ્રી કેસરિયા ઋષભનાથ પાર્શ્વનાથ આદિ જિનબિંબ, ગણધરબિંબ અને ગુરુબિંબની પ્રતિષ્ઠા કરવામાં આવી હતી. પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન થયા બાદ આચાર્ય ભગવંતો અને શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદે જિનાલયમાં પ્રતિષ્ઠિત પ્રતિમાઓ પર વાસક્ષેપ કર્યો હતો. સાથે-સાથે એ જ સમયે ધજા અને કળશ ચઢાવવામાં આવ્યા હતા. પરમાત્મા બિરાજમાન થતાં જ સંપૂર્ણ પસિરમાં બેન્ડ, શરણાઇ, ઢોલની ગગનભેદી ગુંજ સાથે સંપૂર્ણ વાતાવરણ પ્રભુમય બની ગયું હતું. પ્રભુજી અને ગુરુવર્યો જિનાલયમાં ગાદીનશીન થતાં પરિસરમાં હકડેઠઠ જમા થયેલ ભક્ત મેદનીએ ચોખા (અક્ષત)ની છોળો ઉડાડી વધાઇ આપી હતી. સંગીતકારો અને બેન્ડ દ્વારા પીરસાતા સંગીત સાથે અબાલવૃદ્ધ સૌ મન મૂકીને નાચવા લાગ્યા હતા. દરેકે દરેક વ્યક્તિના હૃદય

આનંદ ઉલ્લાસથી ઉછાળા મારતા હતા. સૌ એકબીજા પર અક્ષત વરસાવી ભગવાન અને ગુરુવર્યોના બિરાજમાન થવાનો આનંદ માણતા હતા. તા. ૧૧-૨-૨૦૧૯ના આ સોનેરી દિવસે સિયાણા નગરની પાવનભૂમિ હસી ઉઠી હતી.

ઉલ્લેખનીય છે કે, આ મહામહોત્સવ દરમ્યાન ગુરુભક્તો અને અતિથિઓનું આવાગમન ચાલુ રહ્યું હતું. જાલોર વિધાયક શ્રી જોગેશ્વરજી ગર્ગ, અનેક પદાધિકારીઓ, સિરોહી વિધાયક શ્રી સંયમજી લોઢા અને પૂર્વ ભાજપા પશુપાલન કલ્યાણ બોર્ડ ઉપાધ્યક્ષ શ્રી ભૂપેન્દ્રજી દેવાસી પધાર્યા હતા. અને તેમને સિયાણા સંઘ તરફથી બનાવેલ વેબસાઈટની જાણકારી પણ મેળવી હતી. આ મહામહોત્સવ દરમ્યાન રાજકીય અધિકારીઓ, પદાધિકારીઓ, અતિથિઓ લાભાર્થી પરિવારોએ આચાર્ય ભગવંતોના દર્શન - વંદન કરી આશીર્વાદ મેળવ્યા હતા. સહુનું શ્રી સિયાણા જૈન સંઘ તથા શ્રી કેસરિયાનાથ રાજેન્દ્રસૂરિ પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા મહામહોત્સવ સમિતિ દ્વારા સાફા-તિલક, શાલ અને પ્રતિક ચિન્હ અર્પણ કરી બહુમાન કરાયું હતું. મહામહોત્સવમાં દાદા ગુરુદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ની અભિધાન રાજેન્દ્ર કષનું લેખન કરતી પ્રતિમા આકર્ષણનું કેન્દ્ર બની હતી. આવી પ્રતિમા સિયાણાનગરે પ્રથમવાર સ્થાપિત થઈ હતી.

આ કાર્યક્રમને સફળ બનાવવા સંઘ - સમિતિ અને કર્તવ્યનિષ્ઠ કાર્યકરોએ ભારે જહેમત ઉઠાવી હતી. જેથી આ પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા મહામહોત્સવ સોળે કળાએ ખીલી ઉઠ્યો હતો.

પુણ્ય સમ્રાટના ૩૬માં આચાર્ય પાટ મહોત્સવની સંઘ-પરિષદ પરિવાર દ્વારા ઉજવણી

૩૬ ગુણોના ધારક પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ૩૬માં આચાર્ય પાટ મહોત્સવની સંઘ - પરિષદ દ્વારા ગામોગામ - નગરોનગર ઉજવણી કરવા અનુરોધ કરાયો હતો.

આ ઉજવણીમાં સામુહિક સામાયિક, ગુરુગુણાનુવાદ, તપમાં આયંબિલ, એકાસણા, બિયાસણા ઉપવાસ વિગેરે અનુકંપાદાનમાં વસ્ત્ર વિતરણ, ભિક્ષુક ભોજન, દવા વિતરણ, ફળ વિતરણ વિગેરે માનવસેવાના કાર્યો કરવા યોગ્ય છે. આ કાર્યક્રમ તા. ૧૭-૨-૨૦૧૯ના રવિવારના રોજ યોજાયો હોય અથવા આઠ દિવસ પછીના રવિવારે યોજાયો હોય તે સંઘો અને પરિષદોએ આ કાર્યક્રમના સમાચાર અખબારો તથા શાશ્વતધર્મમાં પ્રકાશિત કરવા અવશ્ય મોકલાવવા અને ૧ કોપી પરિષદ મહામંત્રી કાર્યાલય શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલ, ૭૩ દ્રવિડનગર - ઈન્દોર (મ.પ્ર.) મો. ૯૪૨૫૦ ૫૪૩૨૨ પર મોકલાવવા વિનંતી કરાઈ હતી.

અમદાવાદ (રાજનગર)માં યોજાનાર આત્મોદ્ધારના ઉપલક્ષ્યમાં ત્રિદિવસીય આત્મોદ્ધાર વાચનાનો ક્રમાનુસાર અદ્‌ભૂત કાર્યક્રમ સંપન્ન

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ની વિનંતીથી અમદાવાદ (રાજનગર)માં આગામી તા. ૨૩-૫-૨૦૧૯ના રોજ યોજાનાર આત્મોદ્ધાર-૩ના ઉપલક્ષ્યમાં પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની દિવ્ય કૃપા તથા ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્ વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. અને શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના મંગલ આશીર્વાદથી મુનિરાજ શ્રી જિનાગમ વિજયજી મ.સા.ની નિશ્રામાં શાશ્વત ફ્લેટ, મીઠાખળી અમદાવાદ ખાતે તા. ૧૨-૧૩-૧૪ ફેબ્રુઆરી ૨૦૧૯ દરમ્યાન ક્રમાનુસાર સવારે ૯ કલાકથી આત્મોદ્ધાર વાંચનનો અદ્‌ભુત કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ) અને અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ અમદાવાદના તત્વાધાનમાં યોજાયેલ આ ત્રિદિવસ વાચનાનો લાભ થરાદ નિવાસી અમદાવાદ સ્થિત પરીખ વસંતભાઈ શાંતિલાલ પરિવારે લીધો હતો.

ઉમ્મેદાબાદ (ગોલ) ખાતે શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ ગુરુમંદિરનો પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ સંપન્ન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિઠાણાની પાવન નિશ્રામાં રાજસ્થાનના ઉમ્મેદાબાદ (ગોલ) ખાતે શેઠ કુંદમલજી રીખબચંદજી મુન્નીલાલ લુંકડ ચેરિટેબલ ટ્રસ્ટ દ્વારા નિર્મિત શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ ગુરુમંદિરની પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ સાથે સંપન્ન થઈ હતી. તા. ૧૧-૨-૨૦૧૯ના રોજથી પ્રારંભાયેલ મહોત્સવ દરમ્યાન ઉમ્મેદાબાદ (ગોલ)ને સુંદર રીતે શણગારવામાં આવ્યું હતું. વિશાળકાય ભરતપુર નગરી અને અન્ય મંડપોનું નિર્માણ કરાયું હતું. ગામના મુખે તોતીંગ પ્રવેશદ્વારનું નિર્માણ કરાયું હતું. પ્રાણ પ્રતિષ્ઠામાં નિશ્રા પ્રદાન કરવા પધરામણી કરતા પૂજ્ય શ્રીમદ્ વિજયજયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિઠાણાનો સકળ સંઘ અને શેઠ પરિવાર દ્વારા ભવ્ય સામૈયા દ્વારા પ્રવેશ કરાવાયો હતો. તા. ૧૪-૨-૧૯ના રોજ ભવ્યાતિભવ્ય વરઘોડાનું આયોજન કરાયું હતું. વરઘોડામાં કળશધારી બાલિકાઓ, સાફામાં સજ્જ ગુરુભક્તો, રંગબેરંગી વસ્ત્રોમાં સજ્જ સન્નારીઓ, રથ, ઘોડા, હાથી, બેન્ડ વિગેરે આકર્ષણનું કેન્દ્ર બન્યા હતા. તા. ૧૫-૨-૧૯ના મંગલમય દિવસે શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ ગુરુમંદિરનો પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ રંગેચંગે સંપન્ન થયો હતો.

બેંગ્લોર ખાતે અનુકંપાદ દિવસ ઋથી પુણ્ય સમ્રાટના ૩૬મા પાટોત્સવની ઉજવણી

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ અને મહિલા પરિષદના સંયુક્ત તત્વાધાનમાં તા. ૧૭-૨-૧૯ને રવિવારના રોજ પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ૩૬મા પાટોત્સવની ઉજવણી અનુકંપા દિવસરૂપથી કરવામાં આવી હતી. બેંગ્લોર સરજાપુર રોડ સ્થિત ડોમનસંદરાની માધ્યમ ગૌશાળામાં નવયુવક પરિષદ અને મહિલા પરિષદના સભ્યોએ સર્વપ્રથમ ગાયમાતાની પૂજા કરી ગાયોને ફળાહાર કરાવ્યો હતો.

પરિષદ અધ્યક્ષ શ્રી ડુંગરમલ ચોપડાએ જણાવ્યું હતું કે, મામુલપેટ બેંગ્લોરના નેમીચંદ જવાનમલજી સંઘવી પરિવારના સૌજન્યથી આયોજિત કાર્યક્રમની અધ્યક્ષતા પરિષદના પ્રાંતીય અધ્યક્ષ શ્રી બાબુલાલ સિવાનીએ કરી હતી. ગૌપૂજન બાદ બે દિવસ પૂર્વે પુલવામાના આતંકી હુમલામાં શહીદ થયેલ જવાનોની સ્મૃતિમાં મૌન સભા રાખી ૧૩-૧૩ નવકાર મંત્રના સામુહિક જાપ કરાવાયા હતા. પરિષદના પૂર્વ પ્રાંતીય અધ્યક્ષશ્રી ભેરુલાલ શેઠએ વિનય અને વિવેકપૂર્વક સમાજમાં પરિષદના માધ્યમથી પરસ્પર સૌહાર્દ વધારવા આવા આયોજનો સમયની જરુર છે તેમ જણાવ્યું હતું.

પરિષદના રાષ્ટ્રીય મંત્રીશ્રી પ્રકાશજી હીરાણીએ આચાર્યશ્રીના મહાન સંતત્વ જીવન પર વિસ્તારથી પ્રકાશ પાથર્યો હતો. વધુમાં કહ્યું હતું કે, ભારતભરની પરિષદની લગભગ ૩૫૦ શાખાઓ દ્વારા પાટોત્સવ દિવસ તપ-ત્યાગ, દાન અને ધર્મ-કર્મ સાથે મનાવવામાં આવી રહ્યો છે. મહિલા પરિષદના અધ્યક્ષ પ્રેમાબાઈ મુથાએ સ્વાગત કર્યું હતુ. શ્રી ડુંગરમલજી ચોપડા અને પ્રેમાબાઈ મુથાના સંયોજનમાં આયોજિત ધાર્મિક પ્રશ્નોત્તરી અને હાઉસી પ્રતિયોગિતાને પ્રથમ ૩-૩ વિજેતાઓને પુરસ્કૃત પણ કરાયા હતા. શ્રી નેમીચંદ સંઘવી પરિવારનું સન્માન કરાયું હતુ. ઉપાધ્યક્ષ શ્રી હેમરાજ જૈને જણાવ્યું કે, શ્રી પ્રકાશ બાલર, શ્રી દેવીચંદ ગાંધી મુથા, ગૌશાળાના શ્રી ગૌરવ શર્મા સહિત મોટી સંખ્યામાં નવયુવક પરિષદ સદસ્યો અને મહિલા પરિષદ સદસ્યોએ આ કાર્યક્રમમાં ભાગ લઈ કાર્યક્રમને સફળ બનાવ્યો હતો.

અંતમાં નવયુવક પરિષદ સચિવ શ્રી નેમીચંદ સંઘવી અને મહિલા પરિષદના મંત્રી મધુબેને આભારવિધિ કરી હતી.

૩૭ વર્ષથી સમાજ સેવા સાથે અબોલ જીવોની સેવા કરતા.... ડીસાના જાણીતા જીવદયાપ્રેમી હસમુખભાઈ વેદલિયાના સેવાકાર્યોની કદર : મુખ્યમંત્રીના હસ્તે વિશેષ બહુમાન

મહા મહિમ રાજ્યપાલશ્રી ઓ.પી. કોહલીજી અને મુખ્યમંત્રી શ્રી વિજયભાઈ રૂપાણીના હસ્તે જીવદયા પ્રેમી હસમુખભાઈ વેદલીયાનું સન્માન [illegible]. (તા.૨૫-૧-૨૦૧૯,પાલનપુર)

બનાસકાંઠામાં જીવદયા કાર્યો ઉપરાંત વિવિધ પડતર પ્રશ્નોના ઉકેલ માટે હરહંમેશ પ્રયાસરત રહેતા હસમુખભાઈ વેદલિયાનું ૭૦માં પ્રજાસત્તાક દિનની ઉજવણી અંતર્ગત રાજ્ય સરકાર દ્વારા તાજેતરમાં વિશેષ બહુમાન કરાયું હતું.

બનાસકાંઠાના મુખ્ય મથક પાલનપુર શહેરના આંગણે યોજાયેલા રાજ્યકક્ષાના ધ્વજવંદન સમારોહની પૂર્વ સંધ્યાએ પાલનપુર ખાતે મહામહિમ રાજ્યપાલ ઓ.પી. કોહલીજીની ગરીમામયી ઉપસ્થિતિમાં યોજાયેલા સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ વખતે છેલ્લા ૩૭ વર્ષથી સમાજ સેવા ઉપરાંત પશુ પ્રાણી રક્ષા જેવી સેવાકીય પ્રવૃત્તિઓની કદરરુપે રાજ્યપાલ ઓ.પી.કોહલી અને મુખ્યમંત્રી વિજયભાઈ રૂપાણીના હસ્તે ડીસાના જાણીતા જીવદયા પ્રેમી હસમુખભાઈ વેદલિયાનું શાલ ઓઢાડી પ્રશસ્તિપત્ર અને મોમેન્ટો આપી વિશેષ બહુમાન કરાયું હતું. કેન્દ્રીય મંત્રી હરિભાઈ ચૌધરી, રાજ્ય સરકારના મંત્રી પરબતભાઈ પટેલ, પૂર્વ મંત્રી અને બનાસ ડેરીના ચેરમેન શંકરભાઈ ચૌધરી, ડીસા ધારાસભ્ય શશીકાંતભાઈ પંડ્યા સહિત અન્ય મહાનુભાવો પણ હસમુખભાઈ વેદલિયાના આ વિશેષ બહુમાનના સાક્ષી બન્યા હતા. ઉલ્લેખનીય છે કે હસમુખભાઈ વેદલિયા વર્ષોથી ડીસાની રાજપુર પાંજરાપોળ તેમજ થરાદ પાંજરાપોળના ટ્રસ્ટી તરીકે સેવારત છે. તદુઉપરાંત શાંતિનગર જૈન યુવક મંડળ, બનાસકાંઠા પાંજરાપોળ અને ગૌશાળા ફેડરેશન, અખિલ ભારતીય નવયુવક પરિષદની ડીસા શાખા, ડીસા હાઈવે અકસ્માત નિવારણ સમિતિ અને આદિનાથ રાજેન્દ્ર સેવા ટ્રસ્ટના સ્થાપક માનદ્‌મંત્રી, ડીસા ચેમ્બરર્સ ઓફ કોમર્સ એન્ડ ઈન્ડસ્ટ્રીઝના માનદ્‌મંત્રી, સમસ્ત મહાજન - અમદાવાદના સ્થાપક ટ્રસ્ટી, ભારત સરકાર હસ્તકના એનિમલ વેલ્ફેર બોર્ડ ઓફ ઈન્ડિયાના માનદ્ પશુ સુરક્ષા અધિકારી, પ્રાણી અત્યાચાર નિવારણ સમિતિ, બનાસકાંઠા (એસ.પી.સી.એ.)ના બોર્ડ મેમ્બર લીઓ ક્લબ ઓફ ડીસાના પૂર્વ માનદ્‌મંત્રી, વિશ્વ હિન્દુ પરિષદના ગૌરક્ષા વિભાગના પૂર્વ જિલ્લા સંયોજક, ડીસા શ્વેતાંબર મૂર્તિ પૂજક જૈન સંઘ, અમદાવાદ ખાતે કાર્યરત અખિલ ભારતીય હિંસા નિવારણ સંઘ અને ડીસાની આદર્શ હાઈસ્કૂલના વાલી મંડળના ટ્રસ્ટી તેમજ ડીસા શહેર વિશ્વ હિન્દુ પરિષદના સહમંત્રી તરીકે સરાહનીય સેવાઓ આપી ચૂક્યા છે. ત્યારે રાજ્ય સરકાર દ્વારા હસમુખભાઈ વેદલિયાનું બહુમાન કરતા ઉપરોક્ત તમામ સંસ્થાઓ, જૈન સમાજ તેમજ શુભેચ્છો અને મિત્રવૃંદમાં પણ આનંદની લાગણી ફેલાઈ છે. અને આ સન્માનને વ્યાપક આવકાર સાંપડ્યો છે.

ઠરીઠામનો અર્થ એક જ વ્યાખ્યામાં વ્યકત કરે એને મોં માગ્યું ઈનામ...!

આપણને સૌને ક્યાંકને ક્યાંય અને કોઈપણ રીતે ઠરીઠામ થવું છે, પણ એ ઠરીઠામ થવાની અંતિમ હદ ક્યાં છે એ કોઈ જાણતું નથી ને એ વિશે ચોક્કસ કોઈ નીતિ આપણે ઘડી શક્યા નથી ! ઠામ એટલે સ્થાન ! અને જ્યાં કશાય ઉચાટ કે ઝુરાયા વગર જંપીને ઠરીને જીવી શકાય એ ઠામ એટલે ઠરીઠામ ! પણ આ ઠરીઠામની હદ ક્યાંથી શરૂ થાય છે અને ક્યાં પૂરી થાય છે એ કોઈ જાણતું નથી. ઠરીઠામની કોઈ એકાદ ચોક્કસ વ્યાખ્યા શું છે, એ પણ કોઈ નક્કી કરી શક્યું નથી ! ઠરીઠામનો અર્થ કોઈ એક જ વ્યાખ્યામાં વ્યક્ત કરી શકે તેને મોં માગ્યું ઈનામ જાહેર કરો તો પણ ઠરીઠામને કોઈ એક જ વ્યાખ્યામાં બાંધી શકે તેમ નથી ! કારણ કે આપણે સૌ વિરોધાભાસી સ્થિતિમાં જીવી રહ્યાં છીએ ! આ વૈચારિક અનુભૂતિ છે. આમ જુઓ તો બધા જ ઠરીઠામ છે ને આમ જુઓ તો કોઈ ઠરીઠામ નથી. આ સ્થિતિ આપણા વિચારોમાંથી ઉદ્‌ભવે છે. કોઈ નાના ગામડામાંથી રોજીરોટી માટે આવેલા ગરીબ માણસને ક્યાંક ફૂટપાથ પર પણ કશી ગોદિયાળી વગર નિરાંતે સૂવાની જગ્યા મળી જાય અને આવતામાં જ બાંધકામ ક્ષેત્રે કડિયાકામે એને ઈંટો કે તગારા ઊંચકવાનું કામ મળી જાય તો એ પોતાની જાતને ઠરીઠામ સમજવા લાગે છે. કારણ કે એ ગામડેથી આવ્યો ત્યારે આમાનું કશું જ એની પાસે નહોતું ને ક્યાં કેવી રીતે મળશે એ અંગે પણ એની સ્થિતિ નિશ્ચિત નહોતી. પત્ની અને બાળકો સાથે હોય તો નાનું અમથુ પણ એક ઘર હોવું જોઈએ, એવું બધા જ માનતા હોઈએ છીએ. પરંતુ ગામમાં કોઈના આધારે પત્ની અને બાળકોને છોડી દેવાની જોગવાઈ ન હોય તો એ ફૂટપાથ નિવાસી પોતાની પત્ની અને નાના એક બે બાળકને પણ સાથે લઈ આવે છે અને એ આખો પરિવાર ફૂટપાથ પર વસવાટ કરવા લાગે છે. આપણે એ સ્થિતિને ઠરીઠામ કહી શકીએ ખરા ? તો આપણે કોને ઠરીઠામ કહીશું ?

પાંચ પંદર કરોડ રૂપિયાના બંગલામાં રહેતા અને મોંઘી કારોમાં ફરતાં અને અઢળક કમાણી કરી લીધા પછી ઠરીને, બેસવાને બદલે પોતાનો ધંધો છોડતો નથી, ધંધો વધુને વધુ વિસ્તારતો અને વિકસાવતો રહે છે. આ સ્થિતિને ઠરીઠામ સ્થિતિ કઈ રીતે કહી શકાય ? આ માણસ પાસે બધું જ છે. એણે ઘણું બધું મેળવી લીધું છે છતાં વધુને વધુ મેળવવાના પ્રલોભનો એને પજવતા રહે છે. આરામદાયી ગાદલા અને રજાઈ વચ્ચે સુવે છે. પરંતુ ટેન્ડર પાસ કરાવવાની ચિંતામાં એને ઉંઘ આવતી નથી. કામદારો તરફથી થતી પગાર વધારાની માંગ એને ચેનથી ઊંઘવા દેતી નથી ! કામદારો હડતાળ પર ઉતરી જવાની એને નિરંતર બીક રહ્યા કરે છે. તે એ કારણે એને ઉંઘ નથી આવતી. એ સામે પેલો ફૂટપાથ નિવાસી આખા દિવસની મહેનત મજૂરી કરીને થાકી

ગયો હોવાથી ફૂટપાથ પર પણ એને ઉંઘ આવી જાય છે અને રગડા જેવી ઉંઘ માણે છે. આ બે વિરોધાભાસી સ્થિતિમાંથી કઇ સ્થિતિને આપણે ઠરીઠામ સ્થિતિ કહીશું ?

ફૂટપાથ પર પત્ની સાથે વસવાટ કરનાર ગામમાં હતા ત્યારે પતિ-પત્ની બંને બેકાર હતા. શહેરમાં આવ્યા પછી પતિને કડીયાકામ અથવા કોઇ દુકાન પર પોટલાં ઉંચકવાનું કામ મળી જાય છે અને પત્નીને લોકોનાં ઘરોમાં ઝાડુપોતાને વાસણ કપડાં ધોવાનું કામ મળી જાય છે. અને બંને કમાતા થઇ જાય છે તે એ રીતે ગામમાં જે સ્થિતિ હતી તેના કરતાં સારી સ્થિતિ ભોગવે છે. ગામમાં જોવા ન મળતો રૂપિયાને એના હાથમાં ફરતો થઇ જાય છે. ને એમાંથી એ પેટ ભરીને ખાઇ પણ શકે છે અને બે પૈસાની બચત પણ થઇ શકે છે અને જતે દા'ડે એ બચતમાંથી એ ઝુંપડું ખરીદી લે છે અને ઉઘાડા આકાશ નીચે સુવાને બદલે ઝુંપડું તો ઝુંપડું પણ ચાર ભીતો છે. ભીંતોને બારણું પણ છે અને માથે છાપરું - છત છે. એવા ઝુપડામાં જઇને બેસે છે ત્યારે એના મોંઢામાંથી જે હાશ... જેવો ઉદ્‌ગાર સરે છે એનું જ નામ જિંદગી એનું જ નામ સુખ ! આ હાશકારો જ હવે લોકો ભૂલી ગયા છે એટલે સુખમાં પણ દુઃખની અનુભૂતિથી પીડાય છે.

જેની પાસે નથી એનેય કશું જોઇએ છે અને જેની પાસે અઢળક છે તેને ય કશું જોઇએ છે એને ય સંતોષ નથી, અને નથી એને ય ઉપરથી નીચે સુધીના દરેકને કંઇ ને કંઇ જોઇએ છે! ના, હવે મારે કંઇ જ ન જોઇએ. મારી પાસે બધું જ છે ! એવું કહેનાર વર્તમાન સમયમાં કોઇ નથી આ ઝંખના અને ઝુરાયાનો સમય છે અપેક્ષા અને અભરખાનો સમય છે. મોહના અનેક ચહેરા છે અને અનેક નામ છે ! કોઇને સંતાનની ઝંખના છે અને કોઇને દોલતની ઝંખના છે. કોઇને પૈસાનો મોહ છે, તો કોઇને સત્તા અને પાવરનો મોહ છે. કોઇને ઉચ્ચ હોદ્દાનો મોહ છે અને કોઇને નામનાનો મોહ છે ! કોઇને પોતાની ઓળખ ઊભી કરવી છે. કોઇને ખ્યાતનામ થવું છે, મશહુર થવું છે ! અને એ માટે ઘણી બધી દિશાઓ હાથવગી છે. જેને જે દિશા હાથ લાગી એ દિશાએ એણે દોડવા માંડ્યું છે ! ટૂંકમાં આ જગતમાં કોઇ ઠરીઠામ નથી !

(સા. ગુ.સ. ખલીલ ધનતેજવી)

ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની નિશ્રામાં શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમ મોહન ખેડા ખાતે સન ૨૦૧૯ના ચાતુર્માસની ઘોષણા

ચૈત્ર સુદ ૧૫ ને શુક્રવાર તા. ૧૯-૪-૨૦૧૯.

પૈસા વગર જિન્દગી માણી શકાય પણ જિન્દગી વગર પૈસા વાપરી શકાય નહીં !

આ દુ:ખ અને આ રૂદન શેનું છે ? શેના માટે છે ? મૃત્યુ નિશ્ચિત છે અને દરેકને મૃત્યુ આવે છે. મૃત્યુની આપણને નવાઈ નથી ! તો આઘાત શા માટે ? જે આવ્યો છે એ જવાનો જ છે એવું જાણતા હોવા છતાં એના ચાલ્યા જવાનો આઘાત શા માટે લાગતો હશે ? તન મન સાથેનો વર્ષો જૂનો ઘરોબો તૂટે તો વેદના તો થાય જ ને ? આપણા પરિવારમાંથી, આપણા ઘરમાંથી આપણું કોઈ સ્વજન ચાલ્યું જાય તો વિખૂટા પડવાની વેદના ન થાય ? એ વેદના સ્વાર્થની પણ હોઈ શકે ને મોહબ્બતની પણ હોઈ શકે ! અથવા એમ પણ હોય કે એના જવાથી પરિવાર નિરાધાર થઈ જતો હોય તેવી સ્થિતિમાં આધાર ગુમાવી દેવાનું દુ:ખ પણ હોઈ શકે ! હવે ગુજરાન કેવી રીતે ચાલશે, એવી ચિંતા પણ દુ:ખી કરી જતી હોય છે !

આપણામાં દરેક એમ માને છે કે હું જ ઘર ચલાવું છું ! અથવા મારા પર જ ઘર ચાલે છે ! આ અંગે આપણે બીજાના ઘરની પણ વાત કરતા હોઈએ છીએ કે,એના ઘરની અમુક વ્યક્તિ પર જ ઘર ચાલે છે. આ કેવળ માન્યતા જ નહિ, એ અંગેની ચિંતા પણ આપણને પજવતી હોય છે કે હું નહિ હોઉં તો મારા પરિવારનું શું થશે ? મારા પર જ ઘર ચાલે છે, એવું માની લીધું હોય અથવા ખરેખર એના ઉપર જ ઘર ચાલતું હોય ત્યારે, હું નહીં હોઉં તો શું થશેની ચિંતા થવી સ્વાભાવિક છે ! બસ સ્વાભાવિક ! કારણકે શક્યતા કંઈ જુદી જ હોઈ શકે છે ! દરેક માણસ પોતાનું નસીબ લઈને જ પેદા થતો હોય છે અને પોતાના નસીબનું જ ખાતો હોય છે. કદાચ આપણે પણ એના નસીબનું જ નહિ ખતા હોઈએ એની શી ખાતરી ? કહેવતમાં કહ્યું છે કે, નિશ્ચિત સમયથી પહેલાં અને નસીબથી વધારે કોઈને કશું મળતું નથી. જેને આપણે ઘરનો આધાર માનતા હોઈએ, એના ગુજરી ગયા પછી એ ઘર બરબાદ થવાને બદલે વધુ આબાદ થયું હોવાનાં ઘણા બધા કિસ્સા આપણને જોવા અને જાણવા મળે છે ! ગરીબ ઘરના સંતાનોને અઢળક સંપત્તિમાં આળોટતા આપણે જોયા છે ! કાપડની ફેરી કરીને પોતાનું અને પોતાના પરિવારનું ગુજરાન ચલાવનાર ફેરિયાનો દીકરો કાપડ મિલનો માલિકબન્યો હોવાનાં ઘણાં જીવંત ઉદાહરણો આપણી પાસે મોજુદ છે. ભાંગી પડીને પુનઃ ઉભા થનાર સ્વાવલંબીઓ પણ આપણા સમાજમાં ઘણાં છે.

માત્ર પૈસા કે સંપત્તિ જ માનવજીવનની કર્તવ્ય પારાયણ નથી. પૈસા કે સંપત્તિ

માટે મહેનત કરવી પડે છે. જાઈઝ કે નાજાઈઝ કામો કરવા પડે છે. એટલે જ પૈસા અને સંપત્તિનું મહત્વ આપણને સમજાય છે. જિંદગી મેળવવા માટે આપણને કશી મહેનત કે કશા પ્રયાસો કરવા પડ્યા નથી. જિંદગી આપણને મહેનત વગર અને માગ્યા વગર અનાયાસે જ મળી ગઈ છે. એટલે આપણે જિંદગીનું મહત્વ સમજી શક્યા નથી. પૈસો અને સંપત્તિ માણસ પાસે હોવી જરૂરી છે, પણ એ જિંદગીના ભોગે ન હોવી જોઈએ. જિંદગી પાછળ સંપત્તિ ખર્ચાય ત્યાં સુધી બરાબર છે. પણ સંપત્તિ માટે જિંદગી ખર્ચીનાંખવાની ના હોય હમણાં કહ્યું તેમ જિંદગી આપણને અનાયાસે જ મળી ગઈ છે. પણ જિંદગી આપણી પાસેથી શું મેળવ્યું ? જિંદગી આપણને જીવવા માટે મળી છે. પણ પૈસા પાછળ આપણે જીવવાનું જ ભૂલી ગયા છીએ ! પૈસા કમાવા માટેની જે ઉંમર હોય છે એ જ ઉંમર જિંદગી માણવા માટેની હોય છે. પાછલી ઉંમરમાં તમે કદાચ પૈસા તો કમાઈ શકતા હશો પણ જિંદગી માણવાની ઓકાત ગુમાવી ચૂક્યા હશો ! પૈસા કમાવા માટે દસ વર્ષની ઉંમરથી સો વર્ષની ઉંમર સુધીનો લાંબો સમય તમને મળે છે. જિંદગી માણવા માટે એટલો લાંબો સમય તમારી પાસે નથી. જિંદગીની ખરી મોસમ, જુવાનીમાં જ ખીલતી હોય છે. અને જુવાની માત્ર ચાર દિવસની હોય છે. દુનિયાભરના ધખારામાં જુવાની ક્યારે આવી અને ક્યારે ચાલી ગઈ, એનો જ ઘણા લોકોને ખ્યાલ હોતો નથી. એમાં તો ભરી મોસમમાં લીલુંછમ પાંદડું પીળું પડી જતું હશે. પીળું પાંદડું મોસમને લાયક નથી હોતું એ તો પાનખરને લાયક હોય છે.

હંમેશા સમયનું મૂલ્ય રહ્યું છે અને રહેશે. પૈસા કમાવા માટે અને જિંદગી માણવા માટેની ઉંમર એક જ હોય ત્યારે એ પ્રમાણે લાઈફ મેન્યુપ્લેટ કરાવી પડે ! તો જ બંને બાબતને તમે પૂરેપૂરો ન્યાય આપી શકો છો. પૈસા ખાતર જિંદગી માણવાનું ન ચૂકી જવાય અને માત્ર જિંદગી માણવામાં જ કમાવાનું ચૂકી જવાય એ પણ યોગ્ય નથી ! કારણ કે પૈસા હશે અને છૂટથી વાપરી શકાતા હશે. ત્યારે તો જિંદગી માણવામાં ઓર જ મઝા આવે. એટલે પૈસા કમાવા પણ જરૂરી છે. અને જીવન જીવવું પણ જરૂરી છે. છતાં એક વાત ચોક્કસ છે કે જિંદગી માણવાની અનેક રીતો છે. એટલે કે ઓછા પૈસે પણ જિંદગી માણી શકાય છે. પૈસા જરૂરી છે, પણ જિંદગીનું મહત્વ વધારે છે ! પૈસા વગર જિંદગી માણી શકાશે પરંતુ જિંદગી વગર પૈસા વાપરી શકાશે નહીં ! પૈસા છે તો જિંદગી છે, એવું નથી. જિંદગી છે તો પૈસો છે !

પૈસો હાથનો મેલ છે તો જિંદગી શું છે ? પૈસા ગુમાવેલા પાછા મેળવી શકાય છે. જિંદગી ગુમાવેલી પાછી મળતી નથી ! તમે જન્મને અટકાવી શકો છો, મરણને અટકાવી શકાય નહિ ! દુનિયામાં આવનારને ગર્ભપાત દ્વારા આવતાં અટકાવી શકો છો, પણ દુનિયામાંથી જનારને રોકવાની કોઈ જડીબુટ્ટી આપણને હાથ લાગી નથી !

(સા. ગુ.સ. ખલીલ ધનતેજવી)

ધર્મ સંસ્કૃતિને ઉજાગર કરતો અદ્‌ભૂત લગ્ન સમારંભ

થરાદ નિવાસી શ્રી ચંદુલાલ વીરચંદભાઈ સંઘવીના સુપુત્ર ચિ. યોગેશભાઈની સુપુત્રી ચિ. સીમોનીના શુભ લગ્ન થરાદ નિવાસી શ્રી લલ્લુભાઈ હંસરાજભાઈ શેઠના સુપુત્ર ચિ. દિનેશભાઈના સુપુત્ર ચિ. સૂજલભાઈ સાથે સંવત ૨૦૭૫ના મહા સુદ ૧૦ને શુક્રવાર તા. ૧૫-૨-૨૦૧૯ના રોજ અમદાવાદ ખાતે સંપન્ન થયા હતા. આજના સમયમાં ડી.જે. નાચ-ગાન ભપકાદાર રીસેપ્શન અને ભૌતિકતાની ભરમાર વચ્ચે યોજાઈ રહેલા લગ્નો ઘણા જોયા હશે, પણ ઉક્ત બંને વેવાઈ પક્ષ અને નવદંપતિની સંમતિથી ધર્મ સંસ્કૃતિને ઉજાગર કરતો અદ્‌ભૂત લગ્ન સમારંભ સમાજમાં ચર્ચાનો અનુમોદનીય વિષય બન્યો હતો.

લગ્નના આગળના દિવસે ભવ્યાતિભવ્ય સ્નાત્ર મહોત્સવ તેમજ 'પ્રભુ સંગ પ્રીત'ના કાર્યક્રમનું આયોજન સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રામાં કરાયું હતું. સમસ્ત આમંત્રિત મહેમાનોને બંને દિવસ જયણાપૂર્વક આસનપર બેસાડીને જયણાપૂર્વક સાત્વિક ભોજન તૈયાર કરાવી ભોજન કરાવાયું હતું. લગ્નના દિવસે વર અને વધુએ આયંબિલની તપશ્ચર્યા કરી હતી. લગ્નવિધિ સંપન્ન થયા બાદ નવદંપતિએ વડીલોને પગે લાગી આશીર્વાદ મેળવી આયંબિલ કર્યું હતું. સાંજે વરરાજા સુજલભાઈએ સાધુ ભગવંતના ઉપાશ્રયમાં અને નવી લાડી સીમોનીએ સાધ્વીજી ભગવંતોના ઉપાશ્રયમાં રાત્રિ પોષધ લીધો હતો. મધુરજની - સુહાગરાત - હનીમૂન જેવા શબ્દોને જડમૂળથી છેદ કરી આજના આ કલિયુગ સમયમાં પ્રભુ મહાવીરના શાસનમાં આ નવયુગલે ધર્મ સંસ્કૃતિના રાહે ચાલી એક નવું અનુમોદનીય આશ્ચર્ય જન્માવ્યું છે. આ નવદંપતિની ધર્મ ભાવનાને બિરદાવી આપણે સહુ ભૂરી ભૂરી અનુમોદના કરીએ....

શાશ્વતધર્મ ગુજરાત પ્રતિનિધિ વિપુલભાઈ દોશી (જેતડાવાળા)

પાટણ નગરે શિક્ષણના વિભિન્ન સંકુલનો લોકાર્પણ અને પુણ્ય સમ્રાટના ૩૬માં પાટોત્સવની ઉજવણી

ગુજરાતના પાટણ નગરમાં જૈન મંડળ સંચાલિત કોલેજ ઓફ કોમર્સ, કોલેજ ઓફ સાયન્સ, કોલેજ ઓફ આર્ટસનો લોકાર્પણ સમારોહ પાટણ જૈન સંઘના અગ્રણી શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ અને સ્થાનિક હજારો નાગરિકોની ઉપસ્થિતિમાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈનાચાર્ય પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્યરત્ન મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા.ની પાવન નિશ્રામાં સંપન્ન થયો હતો. લોકાર્પણ સમારોહ મુનિરાજશ્રીના મંગલાચરણથી પ્રારંભ થયો હતો. મુનિરાજશ્રીએ સંસ્કાર, સંસ્કૃતિ અને શિક્ષણ વિષય પર પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. આ પ્રસંગે શ્રી હેમચન્દ્રાચાર્ય યુનિવર્સિટીના કુલપતિ બી.ડી. પ્રજાપતિ, નગરપાલિકા અધ્યક્ષ મહેન્દ્ર જી. પટેલ, પાટણ જૈન મંડળના અધ્યક્ષ દિનેશભાઈ, મંત્રી રાજેન્દ્રભાઈ અને અનેક રાજકીય, સામાજિક અગ્રણીઓ લાભાર્થી પરિવાર તથા પાટણ સંઘના મુંબઈ સ્થિત વિશાળ સંખ્યામાં અગ્રણીઓ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. આ પ્રસંગે પુલવામામાં શહીદ થયેલા જવાનોને શ્રદ્ધાંજલિ આપવામાં આવી હતી. શ્રી ત્રિસ્તુતિક સંઘ પાટણ દ્વારા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આચાર્યપદના ૩૬માં વર્ષ નિમિત્તે અનેક આયોજન થયાં, જેમાં પંચાસરા જિનાલયમાં પરમાત્માની ભવ્ય અંગરચના અને જીવદયાના કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. આ લાભ થરાદ નિવાસી સુરત-મુંબઈ સ્થિત દેસાઈ હીરાલાલ રાજમલભાઈ પરિવારે લીધો હતો. જ્યારે પુણ્ય સમ્રાટની આરતીનો લાભ શ્રી સંઘ પાટણે લીધો હતો.

कुमकुम सने पगलिये

सियाणा में सम्पन्न प्रतिष्ठाजनशलाका महोत्सव

सियाणा (जि. जालोर, राजस्थान)। प्राचीन जैन नगर सियाणा में नवनिर्मित श्री केशरीयाजी तीर्थ पर प्रतिष्ठाजनशलाका महोत्सव तथा प्राचीन तीर्थ मंदिर पर गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. के गुरु मंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव शानदार रूप में सम्पन्न हुआ। महोत्सव को निश्रा गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने प्रदान की तथा मार्गदर्शन जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. का प्राप्त हुआ। प्रतिष्ठोत्सव को सान्निध्य जैनाचार्य श्रीमद् विजय नरेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. तथा जैनाचार्य श्रीमद् विजय लेखेन्द्रशेखरसूरीश्वरजी म.सा. ने प्रदान किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम निर्विघ्न, अपूर्व भक्तिभाव तथा उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। समाज में खूब उत्साह रहा तथा पूरे क्षेत्र से हजारों गुरुभक्तों ने भाग लेकर आयोजन सफल बनाया। व्यवस्थाएँ ऐतिहासिक रहीं। नवकारसी में हजारों श्रद्धालुओं ने प्रतिदिन उपस्थिति दी। प्रतिष्ठा के दिन फलेचुन्दड़ी के नवकारसी में भारी संख्या में भक्तों ने लाभ लिया। इस प्रतिष्ठोत्सव आयोजन को पूरे क्षेत्र में अभूतपूर्व माना गया।

रमेशभाई बने मुनि राजविजयजी

बड़नगर। सौधर्म बृहतपोगच्छीय त्रिस्तुतिक संघ परम्परा में आचार्यश्री जयन्तसूरिजी म.सा. के वरद् हस्तों से 7 फरवरी की शुभबेला में रमेशभाई ओरा को भागवती प्रवज्या प्रदान की जाकर नूतन मुनि का नामकरण राजविजयजी म.सा. घोषित किया गया। स्मरण रहे श्री रमेशभाई की 3 पुत्रियाँ व श्राविका ने पूर्व में आचार्य जयंतसेनसूरिजी समुदाय में संयम ग्रहणकर स्व पर कल्याण करती हुई विचरण कर रही हैं।

11 उपवास की तप आराधना

रतलाम। जिले की आलोट तहसील के छोटे गाँव शेरपुर खुर्द में महिदपुर वर्षावास हेतु विराजमान विद्वव गुणाश्रीजी म.सा. व श्री रश्मिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा सुशिष्या की पावन प्रेरणा से बाबुलाल माण्डोत की

पुत्रवधु श्रीमती रेखा-सुनील कुमार माण्डोत ने 11 उपवास की भव्य तप आराधना की। जिसके उपरान्त माण्डोत परिवार द्वारा ग्राम शेरपुर खुर्द में दिनांक 5 सितम्बर 2018 को भव्य वरघोड़ा आयोजित किया गया जिसमें रथ में भगवान श्री आदिनाथ दादा, राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की तस्वीर स्थापित की एवं तपस्वी को रथ में बैठाकर नगर में शोभायात्रा निकाली गई। रथ के आगे बेण्ड-बाजों व ढोल की थाप पर युवक-युवतियाँ नाचते-गाते एवं भगवान एवं जय-जयकार जयकार तपस्वी की जय-जयकार जैसी जयघोष लगाते नजर आये। तत्पश्चात् शोभायात्रा एक धर्म सभा में परिवर्तित हुई जहाँ तपस्वी बहन रेखा माण्डोत की तप आराधना अनुमोदना के उपलक्ष में आयोजन किया गया। मंगलाचरण के साथ बहनों ने गितीका आदि की रंगा-रंग प्रस्तुति के माध्यम से श्रीमती रेखा बहन की कुशलक्षेम पूछी। परिवार की भानजी, बेटी, ननंद ने 3 उपवास की धारणा की। श्रीसंघ प्रमुखों, आलोट जनपद सदस्य कालुसिंह परिहार, जनपद उपाध्यक्ष रामलाल धाकड़ का बाबुलालजी माण्डोत, प्रकाशजी बरडीया ने शाल-श्रीफल भेंट कर बहुमान किया। उसी क्रम में श्री राजेन्द्र महिला मण्डल आलोट व श्री राजेन्द्र बहु मण्डल आलोट का बाबुलाल माण्डोत परिवार की महिलाओं ने बहुमान किया। जिसके बाद स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र परिषद् शाखा झकनावदा के अध्यक्ष मनीष कुमट ने किया।

दीक्षा महोत्सव मना

भांडवपुरतीर्थ । गुरु सप्तमी महापर्व एवं आचार्यदेवेश्री जयरत्नसूरिजी म.सा. के 45 वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में श्री भाण्डवपुर महातीर्थ में दो दिवसीय विविध आयोजन दिनांक 12 व 13 जनवरी 2019 को आयोजित किए गये।

दिनांक 12 जनवरी 2019 को मध्यप्रदेश के पूर्वमंत्री एवं वर्तमान विधायक श्री पारसजी जैन के मुख्यातिथ्य में गुरु गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। विधायक श्री पारस जैन ने आचार्यदेवेशश्री द्वारा जिनशासन प्रभावना के अनेक कार्य करने के लिए मंगल भावना व्यक्त करते हुए स्वस्थ, निरोगी व दीर्घायु होने की मंगलकामना की। मुनिराज श्री आनन्दविजयजी म.सा. ने गुरु की महिमा बताते हुए कहा कि गुरु होगा तब ही ज्ञान प्राप्त होगा । गुरु ज्ञान प्रदाता होने के साथ ही सद्मार्ग का दिशानिर्देशक

होता है और शिष्य उस मार्ग का अनुसरण कर स्व पर का कल्याण कर सकता है। उदयपुर से आए गीतकार कुलदीप 'प्रियदर्शी' ने सस्वर काव्यपाठ करते हुए गुरुदेव श्री जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा. के जीवन पर प्रकाश डाला। संगीतकार त्रिलोक मोदी ने संगीतबद्ध गुरु महिमा का बखान किया। सभा के अन्त में आचार्यदेवेशश्री ने सभी को आशीर्वाद प्रदान करते हुए माँगलिक श्रवण कराया।

सायला में पंचान्हिका महोत्सव

सायला। शाह मोड़मलजी जोईलाजी बाफना के विविध तप अनुमोदनार्थ उद्यापन सहित जीवित जिनेन्द्र भक्ति पंचान्हिका महोत्सव एवं स्वर्ण सीढ़ी समर्पण समारोह जैनाचार्य श्री जयरत्नसूरिश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

महोत्सव के अन्तर्गत नित्य विविध अनुष्ठानों का आयोजन हुआ। प्रवचन प्रदान करते हुए आचार्यदेव श्री ने कहा कि जीवन में मनुष्य की सभी क्रियाएं व प्रवृत्ति सुख प्राप्ति के लिए है, जबकि वह सुख क्षणिक है। शाश्वत सुख इच्छाओं के त्याग में है। पिछले जन्मों में किए गए सुकृतों के फलस्वरूप प्राप्त पुण्य से जीवन में सन्तों की निश्रा में जीवित महोत्सव के आयोजन का अवसर प्राप्त होता है। मनुष्य का पुण्य सदा प्रबल रहता है। जो समय-समय पर पुण्यशाली आत्मा को बल प्रदान करता रहता है। इस अवसर पर मुनिराजश्री अशोकविजयजी म.सा., मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म.सा., मुनिराजश्री जिनरत्नविजयजी म.सा. के साथ शाह मोड़मलजी बाफना, भँवरलालजी, लखमीचन्दजी, माँगीलालजी, जयन्ती लालजी बाफना, अशोककमारजी, महावीरकुमारजी, प्रकाश कुमारजी, हितेशकुमारजी, प्रकाशजी भण्डारी, विक्रमजी फोलामुथा आदि विशाल संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे। प्रतिदिन विभिन्न संगीतकारों ने भक्ति की मधुर धुनों से वातावरण को भक्तिमय बनाते हुए भक्तों का मन मोह लिया वहीं लाफ्टर कलाकारों ने स्वस्थ मनोरंजन करते हुए हास्य के माध्यम से वाहवाही लूटी। अन्तिम दिन आचार्यदेवेश श्री जयरत्नसूरिजी म.सा. एवं साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणिवृन्द की शुभमय निश्रा में भव्य शोभायात्रा सकल श्रीसंघ के साथ बाफना परिवार के निवास स्थान से प्रारम्भ होकर नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई श्री पार्श्वनाथ जैन मन्दिर पहुँची जहाँ आयोजक परिवार के शाह मोड़मलजी बाफना ने स्वर्ण सीढ़ी का समर्पण किया।

14 दीक्षायें 13 मार्च को ठाणे में

ठाणे। आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय जयानंदसूरीश्वरजी के वरद हस्ते 14 मुमुक्षुओं का भव्य दीक्षा महोत्सव 13 मार्च फाल्गुन सुदी 7, बुधवार को संयम वाटिका श्री मोहनखेड़ा तीर्थ, राजगढ़ (जि. धार) म.प्र. में सम्पन्न होगा। जिसमें दो पूरे परिवार दीक्षित हो रहे हैं।

10 मार्च को गुरु भगवंतों का मंगल प्रवेश एवं गुरुपद महापूजन होगा। 11 मार्च को मुमुक्षुओं के कपड़े रंगना, छाव भराई व विदाई समारोह होगा। 12 मार्च को वर्षीदान वरघोड़ा, उपकरण वोहराना एवं मुमुक्षुओं द्वारा मातृ-पितृ वंदना का कार्यक्रम होगा। 13 मार्च को शुभ मुहूर्त में 14 मुमुक्षु दीक्षा ग्रहण करेंगे एवं 14 मार्च को नूतन दीक्षितों का भव्य प्रवेश कार्यक्रम होगा।

पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में चैत्री मास की शाश्वती नवपद की ओली की आराधना महीदपुर सिटी में श्रीसंघ की आज्ञा से मेहता परिवार द्वारा करवायी जायेगी।

बड़ावदा। आचार्य विजयजयानन्द सूरिश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का नगर में बेंड बाजों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। दादावाड़ी से एक चल समारोह निकला। समाजजनों ने आचार्यश्री की गहुली की। श्री महावीर मंगल परिसर में आचार्यश्री जयानंदसूरीजी ने मार्मिक प्रवचन देते हुए कहा कि आज समाज में लड़कियों की संख्या लड़कों की तुलना में कम हो रही है जो चिंतनीय है।

चैन्नई। श्री वर्धमान जैन तत्त्वज्ञान केन्द्र श्री जैन धार्मिक पाठशाला द्वारा ऑल इण्डिया में श्री जैन श्वेताम्बर एज्युकेशन बोर्ड मुंबई की परीक्षा में 50% से ऊपर मार्क्स लाने वालों को लाभार्थियों के सहयोग से निःशुल्क एवं कम मार्क्स लाने वालों को रियायती दर से यह 13 वीं यात्रा चैन्नई से राजगृही आदि तीर्थों की यात्रा 325 बालक-बालिकाओं एवं कार्यकर्ताओं के साथ निर्विघ्न सुसम्पन्न हुई। पाठशाला के ही बालक-बालिकाओं ने ही पूरी व्यवस्था संभाली। बालक-बालिकाओं को दर्शन, पूजा, अभिषेक, संध्या भक्ति, अनुकम्पा दान आदि कार्यक्रम में काफी दिलचस्पी रही।

।। ॐ अर्हं नमः ।।

परम पूज्य श्रीमद् विजय राजेन्द्र-धनचंद्र-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचन्द्र-जयन्तसेनसूरि गुरुभ्यो नमः

पवित्र सुरसरिता गंगा किनारे हरिद्वार नगरे
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय मध्ये

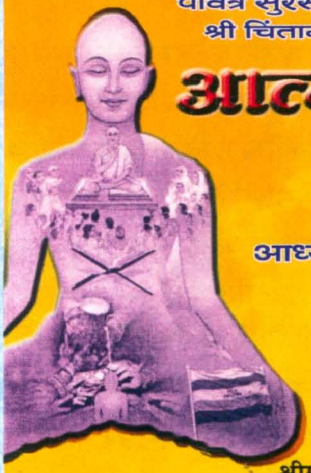

आत्मरंजन ज्ञानगुंजन

(भाग-3)

आध्यात्मिक ध्यान योग युवा-युवती जागृति शिविर भावभरा

आत्मीय आमंत्रण

* दिव्याशीष * श्री गुरुराज प्रस्तुति

विश्व पूज्य प्रातः स्मरणीय प्रभु
श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.
पुण्य सम्राट, युग प्रभावकाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरज म.सा.'मधुकर'

* शुभाज्ञा - शुभाशीष *

सुविशाल गच्छाधिपति प.पू. आचार्य प्रवर श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.
प.पू. आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.

* शुभ निश्रा *

मुनिराज श्री संयमरत्नविजयजी म.सा. 'प्रवासी'
मुनिराज श्री भुवनरत्नविजयजी म.सा.

शिविर शुभारंभ-दि. 23.05.2019, गुरुवार से 30.-05.2019 गुरुवार तक
उम्र सीमा-15 से 45 वर्ष तक

शिविर की विशेषताएँ

* मंगल प्रार्थना * सामूहिक स्नात्र पूजा * ध्यान- योग-प्राणायाम * जिनवाणी श्रवण
* मेमोरी गेम * सूत्र-अर्थ व तत्त्व ज्ञान * भाषण-लेखन प्रतियोगिता * एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण
* मुद्रा-ध्यान का प्रयोग * संध्या भक्ति इत्यादि अनेक प्रकार की

:: आयोजक ::
श्री गुरुराज परिवार

फॉर्म प्राप्ति हेतु संपर्क

रमेशजी	अजितजी	अशोक सोलंकी	हितेश बाफना
विशाखापट्टनम	काकीनाडा	विजयवाड़ा	नैल्लोर
9849561893	9398999479	9440173238	9849617010
भरत गुरुजी	मुकेश गोलेच्छा	विक्रमजी	नितेश नाहटा
चेन्नई	मदुरै	कोच्चिन	उज्जैन
9884153331	9443925702	9995632916	9826786223

शिविर स्थल

Shri Chintamani Parshvnath
Jain Swetamber Mandir
Bhoopatwala Road, Opp. Shanti Kunj,
Haridwar, Uttarakhand- 249401
Ph. : 01334-260073

स्वीकृति मिलने पर ही आपको शिविर में पधारना है ।

नोट – शिविर फॉर्म भरकर स्पीड पोस्ट द्वारा 10/04/2019 तक जमा कराना होगा ।

श्री संघ सौरभ

* **पारा** में मेरू तेरस पर प्रातः वरघोड़ा निकला। महिलाएँ सिर पर थाल में घी से निर्मित मेरूशिखर लिये हुए थीं। मंदिर में आकर सभी ने चैत्यवंदन किया।

* **बोथरा का निधन–** महिदपुर रोड जैन श्रीसंघ के अध्यक्ष पारस जैन बोथरा का आकस्मिक निधन 31.1.2019 को हो गया आप के निधन से जैन समाज के साथ –साथ पूरे क्षेत्र में आकस्मिक क्षति हुई। पूरे क्षेत्र में शोक की लहर है आप धार्मिक गतिविधियों में सामाजिक गतिविधियों में एवं राजनीति में अपना एक विशिष्ट स्थान रखते थे। आप हंसमुख मिलनसार सरल स्वभावी व्यक्तित्व के धनी थे।

* श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन विद्यापीठ खाचरौद में गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री राज राजेन्द्र शिक्षण समिति के सभी सदस्यगण मौजूद थे। बच्चों ने देशभक्ति गायन की प्रस्तुति दी एवं अत्यंत सुंदर ढंग से परेड के द्वारा झंडे को सलामी दी गई।

* **राणापुर।** महाविदेह सीमंधर स्वामी मंदिर दादावाड़ी पर वार्षिक ध्वजारोहण लाभार्थी सुजानमल सज्जनलाल, रखबचन्द कटारिया परिवार की ओर से हुआ। सुबह ध्वजा को बेंड बाजों के साथ धूमधाम से पूरे नगर में जुलूस के रूप में निकालते हुए महाविदेह धाम लाया गया जहाँ विधिकारक त्रिलोक कांकरिया ने विधि पूर्वक ध्वजा को मन्दिर के शिखर पर ले गए। वहाँ पर लाभार्थी परिवार ने ध्वजा चढ़ाई। तत्पश्चात् आरती हुई प्रसादी वितरीत की। इस अवसर पर कटारिया परिवार ने स्वामीवात्सल्य का लाभ भी लिया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से दिलीप सकलेचा, सोहन सेठ, चन्द्रसेन कटारिया, सज्जनलाल कटारिया, रमणलाल कटारिया, रमेशचन्द्र नाहर, मोतीलाल सालेचा, मदनलाल नाहर सहित अनेक समाजजन उपस्थित थे।

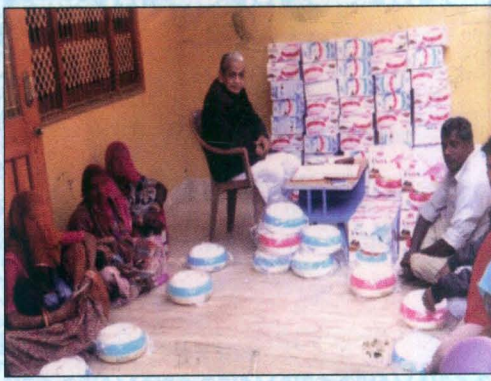

* **सायला।** सेवा केन्द्र द्वारा प्रतिवर्ष जरूरतमंद गरीबों के निःशुल्क वितरण कार्यक्रम के अन्तर्गत इस वर्ष सायला क्षेत्र के 20 गाँवों के जरूरतमन्द 500 परिवारों को गरम रोटी के डिब्बे वितरित किये गये।

संस्था के संस्थापक एवं संचालक श्री अचलचन्द जैन द्वारा किये जा रहे मानवीय सेवा के कार्य अनुकरणीय हैं।

* **बड़ावदा।** में मेरूतेरस के पर्व पर घी से बने मेरू के साथ महिलाओं ने चल समारोह निकाला। इस दौरान महिला परिषद अध्यक्ष संगीता सकलेचा, सचिव शालिनी बाफना, मिनल सकलेचा, सुनीता मेहता, मीना सकलेचा, ललिता सकलेचा, मधुबाला सकलेचा, संध्या सकलेचा, मनीषा ओरा, ममता सकलेचा, सुनीता सकलेचा, रीना सकलेचा, पदमा सकलेचा आदि मौजूद थीं।

हर नगर में गुरु सप्तमी शानदार मनी

नागपुर। गुरु सप्तमी पर श्री गुरु भक्त सेवा समिति द्वारा भव्य पूजन व गौतम प्रसादी का आयोजन, रामदास पेठ सुमति नाथ जैन मंदिर में किया गया। भक्तों ने अष्टप्रकारी पूजा मधुर संगीत द्वारा पढ़ाई गई। नयनाभि राम आकर्षक पुष्प सज्जा/ चावल की गवली की भव्य रचना की गई। साक्षात मोहन खेड़ा का जीवंत माहौल सुमति नाथ उपाश्रय में जीवंत हुआ। पूजा संचालन नलीन संघवी, अरविंद-सुनिता भंसाली, संजय डोसी, सुदर्शन बाठीयाँ, चिराग संघवी, संगीता संघवी, मधु भाचावत, स्हनेलता दोषी ने सुमधुर भजनों व मंत्रों से किया।

सजावट गौतम बेद, सुशीला बोथरा, पूर्णिमा सुराना, शशि पटेल, पूजन सामग्री हंसाबेन पारेख, हंसाबेन डोसी, शैलेन्द्र भावना मनावत महादेव राज सिंघवी, माणकचंद सेठीया, सुरेश बाफना, संजय पीपाड़ा, दिलीप पंचोली, सुन्दरलालजी सेठ, मंजु चौधरी, धीरज भाई शाह, निलेश भाई शाह, सुनील धाडीवाल, विनोद सिंघी, हंसा सिघटवाडीया, राजेन्द्र संचेती का सहयोग प्राप्त हुआ पूजा पश्चात् गौतम प्रसादी दाल-बाटी-चूरमा का आनंद भक्तों ने लिया।

* **बड़नगर** गुरु सप्तमी महोत्सव समिति द्वारा गुरु सप्तमी पर्व 2 दिन से विभिन्न आयोजनों के साथ हर्षोल्लास के साथ मनाया गया यह कार्यक्रम सकल श्री संघ के सहयोग से आयोजित किया गया। इस अवसर पर सभी मंदिरों पर आकर्षक साज-सज्जा की गई गुरु एवं प्रभु अंग रचना आकर्षण का केन्द्र रहे। दो दिवसीय आयोजन के तहत दिनांक 12 को रात्रि में प्रभु भक्ति की गई रंगारंग भक्ति को स्थानीय कलाकारों द्वारा आवाज दी

गई इसी क्रम में दिनांक 13 तारीख को गुरु सातम के दिन प्रातः भक्तांबर पाठ तथा एक विशाल वर घोड़ा ज्ञान मंदिर से निकाला गया जिसमें पूज्य गुरुदेव का आकर्षक डोला निकाला गया। जिसमें गुरुदेवश्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज की चल प्रतिमा आकर्षण का केन्द्र थी। सुसज्जित बग्गी में पुण्य सम्राट जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराज साहब की तस्वीर विराजमान थी। इस विशाल वर घोड़े में सकल जैन समाज के समाजजन उपस्थित थे। जगह-जगह गहुली की गई। एक धर्मसभा भी सम्पन्न हुई जिसका प्रारंभ मंगलाचरण से हुआ। स्वागत गीत की प्रस्तुति श्रद्धा नाहर, मोनाली नाहर, प्रेरणा खाबिया ने दी। संघ की ओर से स्वागत उद्‌बोधन शांतिलाल गोखरू ने दिया। समिति की ओर से वीरेन्द्र राठौड़ एवं परिषद की ओर से साकेत गामा ने उद्‌बोधन दिया। इस अवसर पर बालोदा कोरन के सेवाभावी श्रावक सबलसिंहजी का बहुमान श्रीसंघ एवं समिति द्वारा किया गया।

पूज्य गुरुदेव का जीवन धर्ममय साधना जो गुरु को समर्पित रहता है उसके जीवन में कभी संकट नहीं आते हैं श्रद्धा है तो गुरुदेव है जिसके जीवन की साधना श्रेष्ठ है उसका मुकाम ऊंचा होता है हमें कभी भी देवधर और धर्म की निंदा नहीं करना चाहिए। हम महावीर के बताए मार्ग पर चलें क्योंकि हम महावीर की संतान हैं उपरोक्त उद्‌गार परम पूज्य साध्वी तत्व दर्शनाश्रीजी महाराज साहब ने विशाल जन मेदनी सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। आपने अनेक - अनेक रोचक गुरुदेव के संस्मरण भी सुनाए। समिति के नरेन्द्र चोपड़ा ने प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन राजकुमार नाहर ने किया। अंत में समिति द्वारा सभी सहयोगियों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया गया। इस कार्यक्रम में प्रकाशजी चोपड़ा, नरेन्द्रजी चोपड़ा, वीरेन्द्र राठौड़, धनुष खाबिया, साकेत गिरिया, शेखर मोदी, राकेश गोलेछा, अर्चित गोखरू, प्रकाश श्रीश्रीमाल आदि सभी गुरु भक्तों का सहयोग सराहनीय रहा।

*** प्राचीन तीर्थ श्री पेदमीरम (भीमावरम)**

में गुरु सप्तमी पर्व श्री राजेन्द्रसूरी जैन दादावाड़ी के प्रांगण में भव्यातिभव्य रूप से मनाया गया। इस अवसर पर अच्छी संख्या में गुरुभक्तों ने पधारकर दर्शन, सेवा, पूजा, नवकारशी, आयंबिल, एकासणा का लाभ लिया। चढ़ावे भी काफी अच्छे हुए। गुरुदेव का वार्षिक अखण्ड दीपक चढ़ावा का लाभ शा. विमलकुमारजी नथमलजी खुमाजी परिवार, नरसापुर राज. में बागरा वालों ने व शाम की आरती का लाभ में गुरु राजेन्द्र होम एपलायन्स विजयवाड़ा राज. में दासपा वालों ने अच्छी बोली लगाकर लिया।

महोत्सव की सम्पूर्ण व्यवस्था में श्री जैन युवा संगठन गुण्टुर मण्डल एवं श्री राजेन्द्रसूरि जैन सेवा मण्डल राजमंडी वालों का योगदान सराहनीय रहा।

* आलोट । गुरु सप्तमी के उपलक्ष्य में वासुपूज्य मंदिर पर तीन दिवसीय धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस अवसर पर प्रथम दिवस प्रातः स्नात्र पूजन एवं दोपहर में पार्श्वनाथ पंचकल्याणक गुरुपद पूजन पढ़ाई गई। सायं काल बहू परिषद द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत चौबीसी प्रतियोगिता व मेहंदी वितरण का भी आयोजन किया गया। द्वितीय दिवस दोपहर में गुरुदेव की पूजन पढ़ाई गई।

गुरु सप्तमी के दिन सुबह गुरु मंत्र के जाप का आयोजन किया गया। दोपहर में गुरुपद महापूजन विमल कुमारजी, सचिन कुमारजी जैन परिवार की ओर से पढ़ाई गई। राजेन्द्र महिला परिषद, राजेन्द्र बहू परिषद, पार्श्व महिला मंडल व नवरत्न मंडल द्वारा पढ़ाई गई।

इसके पश्चात भव्य वरघोड़ा निकाला गया। शाम को स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया गया। रात्रि में भक्ति आरती की गई। गुरुदेव की आरती का लाभ अनिल कुमारजी पारीक परिवार ने लिया। पूरा मंदिर गुरुदेव के जयकारों से गूंज उठा। – नीता पारीख

काया– उदयपुर । श्री राजेन्द्र सूरि जैन सेवा संस्थान के तत्वावधान में गुरु सप्तमी दिवस राजेन्द्र शांति विहार काया में धूमधाम से मनाया गया। गुरुदेवश्री की अष्टप्रकारी पूजा के पश्चात् गुरुगुण इक्कीसा का पाठ किया। मुख्य अतिथि श्री सोहनलालजी यति, कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री चांदमलजी विराणी ने गुरुदेव के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला। संस्थान के अध्यक्ष श्री जीवनसिंह मेहता ने गुरुदेव के जीवन की चमत्कारिक घटनाओं का वर्णन करते हुए गुरुदेव के संदेश 'क्षणिक लाभ के लिए पुरुषार्थ का त्याग मत करना' का विवेचन किया।

इस अवसर पर उदयपुर (सुन्दरवास) के श्री यशपाल मेहता का दिल्ली मेट्रो रेल कार्पोरेशन के (मुख्य प्रबन्धक) पद पर पदोन्नत होने पर संस्थान द्वारा अभिनंदन किया गया।

स्वास्थ्यवार्ता के अंतर्गत प्राकृतिक एवं योग चिकित्सक डॉ. सी.बी. शर्मा द्वारा कमर एवं घुटना दर्द–कारण एवं निवारण पर मार्गदर्शन दिया गया। स्वामीवात्सल्य का आयोजन संस्थान की तरफ से किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम का सफल संचालन महामंत्री अरुण कुमार बड़ाला ने किया।

मैसूर। यहाँ गुरु सप्तमी बड़े ही धूमधाम से सम्पन्न हुई। सुबह भक्ताम्बर स्तोत्र पाठ उसके बाद में चढ़ावे की जाजम हुई जिसका मुनिमजी लाभ शा. महावीर कुमारजी भवुतमलजी गादिया आठोर को प्राप्त हुआ। सुबह भव्य वरघोड़ा गुरु मंदिरजी से प्रस्थान कर महावीर भवन में धर्मसभा हुई जिसमें गुरु गुणानुवाद सभा तथा मंच का संचालन शा. प्रकाशचंद वाणीगोता (आठोर) ने किया। रात्रि भक्ति में सभी मंडलों का बहुमान ट्रस्ट के अध्यक्ष शा. शान्तिलालजी हरण ने किया।

* पेटलावद । श्री केसरीयानाथ जैन मंदिर झकनावदा में मेरू तेरस के सुअवसर पर साध्वीश्री अनेकान्तलताश्रीजी म.सा.,

साध्वीश्री यशोलताश्रीजी म.सा., साध्वीश्री अतिसय लताश्रीजी म.सा., श्रेयस लताश्रीजी म.सा. साध्वीश्री परमेष्ठीलताश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में झकनावदा श्रीसंघ ने मेरू तेरस भगवान आदिनाथजी का मोक्ष कल्याणक दिवस मनाया जिसमें प्रातः में 9.30 बजे साध्वीश्रीजी के व्याख्यान के माध्यम से समाजजनों को मेरू तेरस का महत्व बताया। तत्पश्चात् महिलाओं द्वारा घी का मेरू पर्वत बनाया गया व स्थानीय शीतला माताजी मंदिर प्रांगण से बहनों ने मेरू पर्वत को अपने सिर पर उठाकर नगर भ्रमण करवाया।

प्रतिष्ठा निमित बिछाई जाजम-* झकनावदा स्थित अति प्राचीन श्री केशरीयाजी जैन मंदिर में विराजित मूल नायक भगवान श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिष्ठा महोत्सव निमित्ते झकनावदा श्री केसरीयानाथ मंदिर जीर्णोद्धारक राष्ट्र संत आचार्यश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज सा. के पट्टधर आचार्यद्वय श्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. व आचार्य श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के शुभ हस्ते झकनावदा प्रतिष्ठा के पूर्व जाजम बिछाने हेतु श्रीसंघ को 30 जनवरी का शुभ मुर्हूत प्रदान किया था। झकनावदा में विराजित साध्वीश्री अनेकान्ताश्रीजी म.सा. आदि की पावन निश्रा में 30 जनवरी को जाजम बिछाई गई। जाजम का शुभारम्भ विधि कारकश्री तिलकजी पारा द्वारा देवाधिदेव आदिनाथ भगवान प्रातः स्मरणीय श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. व पुण्य सम्राट श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के फोटो पर पुष्प माला अर्पित कर धूप दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इसके साथ ही जाजम के पूर्व साध्वीश्री जी ने प्रवचन के माध्यम से समाजजनों को जाजम का महत्व समझाते हुए जाजम में बडचढ़ कर हिस्सा लेने को प्रेरित किया। जाजम में पंचानिह्नका प्रतिष्ठा महोत्सव के चढ़ावे लगाये गये जिसमें झकनावदा नगर के समाजजनों एवं बाहर से पधारे अतिथियों ने समस्त चढ़ावे बढ़चढ़ कर लिये। जाजम के समापन में पूरा परिसर दादा आदिनाथ, दादा गुरुदेव व जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के जयकारों से गूंज उठा। पूरे समाज में हर्ष का माहौल व्याप्त है।

*** निम्बाहेड़ा ।** प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर

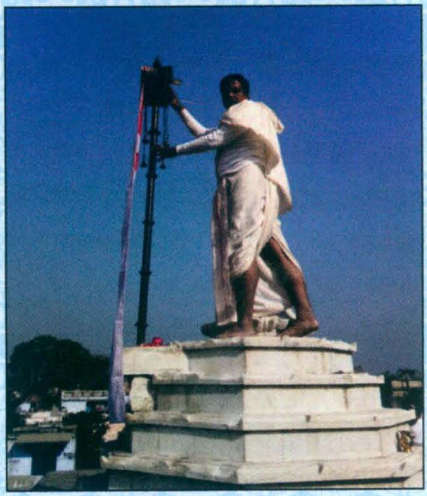

(यतिजी का) पर 'विरानी परिवार' द्वारा ध्वजा चढ़ाई गई। जहाँ पर समाज के सभी वरिष्ठजनों ने हर्षोल्लास के साथ विधि-

विधान सहित ध्वजारोहण कार्यक्रम में भाग लिया। समारोह के दौरान संघ के श्री रतनसिंह पारक, समरथमलजी संघवी, नरेन्द्रजी सिरोहिया, मनोहरलालजी वीरानी, चांदमलजी वीरानी, मनोज कुमार मोदी, सुनील कुमार मोदी, सागरमल विरानी, वर्धमान जैन, पारसमल वीरानी, सुरेशजी बोडाना, मनोजजी चपलोत, पारसजी सिसोदिया, महावीरजी वीरानी गौतमजी विरानी, भेरूसिंह बोडाना, संजय मोदी एवं संघ के अनेक सदस्य एवं महिलाएँ उपस्थित थी ध्वजारोहण में पूजा एवं ध्वजा चढ़ाने का कार्य रीखब कुमार विरानी द्वारा किया गया। विरानी परिवार द्वारा लगातार 20 वर्षों से इस मंदिर पर ध्वजा चढ़ाई गई।

* खाचरौद । श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन विद्यापीठ में बसन्त पंचमी के उपलक्ष्य में माँ शारदे की पूजा-अर्चना की गई। छात्र-छात्राओं ने भी माँ- शारदा का आशीर्वाद प्राप्त किया एवं पुष्प अर्पित किये।

* पाटन में श्री नेमीसूरि समुदाय के पूज्य आचार्य देवश्री शीलचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की त्रिस्तुतिक उपाश्रय में मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म. के सान्निध्य में पधरावणी की गई। आपने आत्महितकारी वाचना प्रदान की तथा पुण्य सम्राट गुरुदेवश्री के साथ अपने मिलन के प्रसंगों का स्मरण किया। वहां मुनिमण्डल द्वारा स्वाध्याय के लिए की जा रही स्थिरता की अनुमोदना की।

* मुनिराजश्री संयमरत्न विजयजी महाराज तथा मुनिराज श्री भुवनरत्नविजयजी महाराज अपना चैन्नई चातुर्मास पूर्णकर श्री सम्मेदशिखर तीर्थ यात्रा के लिए विहार कर रहे हैं। मार्ग में श्री संघों को उपदेश भी प्रदान कर रहे हैं। जमशेदपुर (उड़ीसा) में उनकी धर्म सभा हुई।

राजेन्द्र परिषद् ने जताया गुजरात सरकार का आभार

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के मंत्री संजय सेठ ने गुजरात सरकार द्वारा बजट में जैन साधु संतो के विहार हेतु अहमदाबाद से शंखेश्वर तीर्थ तक पगडंडी बनाने के लिए 20 करोड़ रूपये का अनुदान स्वीकृत करने के लिए आभार जताया।

सेठ ने बताया की जैन संत पैदल विहार करते हैं और पगडंडी (फुटपाथ) की व्यवस्था न होने से कई बार दुर्घटना में संतो को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है। साथ ही मुख्यमंत्री से अनुरोध किया कि जैन संतो के विहार के दौरान पुलिस सुरक्षा दी जाये।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने प्रबल बनाया पाठशालाओं को

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

पारा। परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू, शिक्षा मंत्री संजयजी मेहता, संगठन मंत्री, सहमंत्री, महिला परिषद की प्रांतीय शिक्षा मंत्री संगीता पोरवाल पारा पधारे।

मुख्य रूप से बच्चों में धार्मिक ज्ञानार्जन हो इस उद्देश्य को लेकर भारतभर की सभी शाखाओं में जाकर पाठशाला के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। गुरुमन्दिर में पाठशाला के गुरुजी राजेन्द्र कोठारी ने बच्चों को अध्ययन की जानकारी अतिथियों को दी। एक-एक बच्चों से याद किये सूत्रों को रमेशजी धरू ने सुना और कहा कि सूत्रों को याद करने के बाद बच्चों को पुरस्कृत किया। इस अवसर पर परिषद की चारों ईकाई की ओर से सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन परिषद के उपाध्यक्ष विनीत नाहटा ने किया। आभार व्यक्त परिषद अध्यक्ष दिलीप कोठारी ने किया।

राणापुरा। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने राणापुर के यतीन्द्र ज्ञान मन्दिर पहुँच कर यहाँ नवपल्लवित यतीन्द्र जयन्त पाठशाला का अवलोकन किया। संध्या में पाठशाला समय पर पहुंचे पदाधिकारियों में परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश धरू मुंबई, राष्ट्रीय सहशिक्षा मंत्री संजय मेहता झाबुआ, पर्यावरण मंत्री विनोद पोरवाल, सहमंत्री राजेश वागरेचा, महिला परिषद की राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती पद्मा सेठ, शिक्षा मंत्री श्रीमती संगीता पोरवाल उपस्थित हुए। राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश धरू ने पाठशाला में उपस्थित बच्चों से चर्चा की। शिक्षिका कु. सुदर्शना नाहर से भी बच्चों की जानकारी ली तथा उन्हें जूरी टिप्स दिए। साथ ही मध्यप्रदेश स्तर पर चलाई जा रही छात्र प्रोत्साहन कूपन योजना को समझाया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि जितना पढ़ोगे उतना बढ़ोगे। आज की नई पीढ़ी धार्मिक शिक्षा से दूर हो रही है जिसे हमें पाठशाला के माध्यम से पास लाना होगा। धार्मिक शिक्षा के साथ हमें विनय को अपनाना होगा। यतीन्द्र ज्ञान मन्दिर में पहुँचे सभी अतिथियों का समाज के वरिष्ठ इंदरमल कटारिया, सोहनलाल कटारिया, रमणलाल कटारिया, ज्ञान मन्दिर के अध्यक्ष चन्द्रसेन कटारिया, रमेश सालेचा, दिनेश नाहर, दिलीप सालेचा, सुदर्शना नाहर आदि ने स्वागत किया। स्वागत उद्बोधन चन्द्रसेन कटारिया ने दिया। शिक्षा मंत्री संजय मेहता ने राष्ट्रीय पदाधिकारियों के दौरे के बारे में उपस्थित समाजजनों को जानकारी दी।

अभा श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का गठन कर शपथ दिलाई – इस अवसर पर यतीन्द्र ज्ञान मन्दिर में बहुप्रतीक्षित श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की नई इकाई का गठन भी राष्ट्रीय अध्यक्ष की निश्रा में सम्पन्न हुआ। उनके द्वारा ही अध्यक्ष के रूप में पवन नाहर, उपाध्यक्ष विनय कटारिया, महामंत्री ललित सालेचा तथा कोषाध्यक्ष रजनीश नाहर के नाम घोषित कर नवीन पदाधिकारियों को शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम का संचालन ललित सालेचा ने किया। इस अवसर पर सभी पाठशाला के बच्चों को प्रभावना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश धरू और विनय कटारिया की ओर से वितरित की गई। सभी पदाधिकारियों ने संध्या आरती का लाभ लिया। कार्यक्रम में प्रवीण कटारिया, कल्पेश जैन, नरेन्द्र जैन, पंकज कटारिया, प्रकाश सालेचा, विनोद सालेचा, शैलेन्द्र कटारिया, धर्मेश कटारिया, जितेन्द्र नाहर, कमलेश कटारिया, प्रियंक कटारिया आदि उपस्थित थे।

बड़ावदा (शिरीष सकलेचा)। वर्तमान समय में इंटरनेट, मोबाइल, टेलीविजन ने युवा पीढ़ी को विचलित कर संस्कारों से विमुख कर दिया है। जैन समाज के बच्चों को आज धार्मिक शिक्षा देने की बेहद आवश्यकता है। समाज के बच्चे ही हमारी धरोहर हैं। बच्चों को स्कूली शिक्षा के साथ ही धार्मिक शिक्षा देना वर्तमान समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। समाज के लोगों को अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने हेतु प्रोत्साहित करना जरूरी है। पुण्य सम्राट की श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी की प्रेरणा से अ.भा. नवयुवक परिषद पूरे देश में धार्मिक पाठशालाओं को संचालित कर रहा है. आज मुझे बड़ी खुशी है कि बड़ावदा में समाज के बच्चों व महिलाओं में धार्मिक शिक्षा के प्रति अपार उत्साह है। यहाँ नियमित पाठशाला में बच्चे धार्मिक शिक्षा ग्रहण कर सुंसस्कारों की ओर बढ़ रहे हैं।

उक्त उद्गार परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश भाई धरू ने यहाँ शनिवार को जैन उपाश्रय में यतीन्द्र ज्ञानपीठ परीक्षा परिणाम एवं पाठशाला अवलोकन अवसर पर कहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ साध्वि मुक्ति प्रियाश्रीजी व अर्हम् प्रियाश्रीजी के मंगलाचरण से हुआ। मीडिया प्रभारी शिरिष सकलेचा ने बताया कि इस अवसर पर रमेश धरू, महामंत्री अशोकश्रीश्रीमाल, राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी ब्रजेश बोहरा, संगीता पोरवाल आदि का श्रीसंघ अध्यक्ष मानमल सकलेचा परिषद, महिला परिषद, तरुण परिषद आदि ने बहुमान किया। स्वागत गीत श्रीमती संगीता सकलेचा, ममता सकलेचा ने प्रस्तुत किया। संचालन अध्यक्ष सुशील एवम् सकलेचा व आभार हर्षित चत्तर ने माना।

यतीन्द्र ज्ञानपीठ के विभिन्न पाठ्यक्रम की परीक्षा में 35 परीक्षार्थियों ने भाग लिया था श्राविका साधना बाफना ने प्रावीण्य सूचि में स्थान प्राप्त किया। वे प्रदेश में तृतीय स्थान पर रही। समाजजनों ने उन्हें बधाईयाँ दी।

नागदा जं.। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन

नवयुवक परिषद का पारिवारिक मिलन समारोह में अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर व प्रतिभाजी कुंवर ने स्वागत गीत के बाद कार्यक्रम की शुरुआत की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि किडनी दानदाता श्री रमेशचंदजी मुनीमजी थे, मिलन समारोह में नागदा शाखा परिषद के नवीन अध्यक्ष हेतु सर्वानुमति से श्री मनोज वागरेचा को परिषद का पुनः अध्यक्ष मनोनीत किया गया व नागदा महिला परिषद में भी सर्वानुमति से चयन अध्यक्ष श्रीमती निरंजना बोहरा व सचिव श्रीमती रचनाजी चोपड़ा को नियुक्त किया गया। कार्यक्रम में किडनी दानदाता श्री रमेशजी मुनीमजी का प्रशस्ति पत्र देकर बहुमान किया गया। दोपहर में बच्चों व कपल गेम का आयोजन व बाद में पुरस्कार वितरण किया गया।

कार्यक्रम में श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी ब्रजेशजी बोहरा, परिषद के राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य मनोजजी ओरा, रंजना लुणावत, सुरेशजी भारतीय, विरेन्द्रजी सकलेचा, अभयजी ओरा, सुभाषजी गेलडा व मनिषजी ओरा मंच पर उपस्थित थे। कार्यक्रम में परिषद के सभी सदस्य मौजूद थे। संचालन अभिषेकजी कोलन ने किया व आभार मुकेशजी बोहरा ने माना।

राणापुर। श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की शाखा ने 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के अवसर पर राणापुर हाट बाजार से कमजोर और दुर्बल गायें जो गौ मालिक कम दाम में गलत लोगों को बेच देते हैं उन गायों को विभिन्न लाभार्थियों के माध्यम से खरीद कर उन गायों को गलत हाथों से बचाने की मुहिम प्रारम्भ की। इस क्रम में 5 गायों को उचित दामों में खरीद कर नगर की श्री राज राजेन्द्र गोपाल गौशाला में भेजा गया जहाँ उनका पालन होगा। श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद के अध्यक्ष पवन नाहर, प्रकाश सालेचा, रजनीश नाहर, प्रवीण नाहर, जितेश राठौड़, विकास कटारिया, जितेन्द्र नाहर आदि ने गुजरी पहुँचकर इस पुनीत कार्य की शुरुआत की।

राणापुर। श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद राणापुर द्वारा 26 जनवरी को श्री यतीन्द्र जयंत पाठशाला के बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन यतीन्द्र ज्ञान मन्दिर में किया गया। आयोजन में बच्चों ने जैन धार्मिक गीतों पर नृत्य किया और अपने द्वारा कण्ठस्थ सूत्रों को मंच से बोलते हुए प्रस्तुति दी। कुल 30 बच्चों की नवपल्लवित इस पाठशाला के बच्चों को उनकी प्रस्तुतियों पर खूब प्रशंसा मिली। आदि नाहर ने सिद्धाणं सूत्र, प्रक्षा कटारिया ने उवसहगरम सूत्र, नेहा कटारिया ने नमुत्थाणम सूत्र तथा नन्ही बालिका कृतिका नाहर ने पंचीयदीय सूत्र बोला। कार्यक्रम की शुरुआत में अतिथियों ने श्री राजेन्द्रसूरीजी की तस्वीर के समक्ष दीप प्रज्वलन किया। नवकार मंत्र पर सुंदर प्रस्तुति दिव्या जैन ने दी। जिसके बाद धार्मिक गीतों पर नृत्य पाठशाला के बच्चों ने प्रस्तुत किये। जिनमें प्रक्षा एंड पार्टी प्रथम, जैनम एंड पार्टी द्वितीय तथा निधि एंड पार्टी तृतीय रहे।

इस अवसर पर चन्द्रसेन कटारिया, सज्जनलाल कटारिया, रमेश सालेचा परिषद अध्यक्ष पवन नाहर, रजनीश नाहर तथा विनय कटारिया ने उद्‌बोधन दिया। कार्यक्रम का संचालन जितेन्द्र सालेचा ने किया। आभार ललित सालेचा ने माना। यतीन्द्र ज्ञान मन्दिर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सज्जनलाल कटारिया थे, विशेष अतिथि रमेशचन्द्र सालेचा और अध्यक्ष चन्द्रसेन कटारिया थे। गणतंत्र दिवस पर श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के सान्निध्य में प्रातः यतीन्द्र ज्ञान मन्दिर पर संघ अध्यक्ष चन्द्रसेन कटारिया, वरिष्ठ सोहनलाल कटारिया, मोतीलाल सालेचा तथा मनोहरलालन नाहर के आतिथ्य में झंडा वन्दन किया। प्रभावना विरेन्द्र रतनलाल नाहर की ओर से वितरित की गई। संचालन पवन नाहर ने किया।

इंदौर में त्रिदिवसीय नैत्र शिविर

इंदौर। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद गुमास्ता नगर इंदौर द्वारा पूज्य यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के स्वर्गारोहण दिवस, पूज्य गुरुदेव मोहनविजयजी म.सा. के स्वर्गारोहण दिवस एवं दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के जन्म-स्वर्गारोहण दिवस के उपलक्ष्य में 9 से 11 जनवरी 2019 तक त्रिदिवसीय नैत्र परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय महामंत्री अशोकजी श्रीश्रीमाल, राष्ट्रीय महिला परिषद की उपाध्यक्ष गुणमालाजी नाहर एवं प्रांतीय परिषद की अध्यक्षा पुष्पाजी भण्डारी ने अपने उद्‌बोधन में परिषद का मार्गदर्शन किया एवं महिला परिषद इंदौर के पारमार्थिक कार्यों की अनुमोदना की।

किसी की आँखों में रोशनी देना मानव सेवा का श्रेष्ठकार्य है। इस अवसर पर रेटिना स्पारिलटी हास्पिटल के नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. पंकज बजाज ने नैत्र परीक्षण एवं उपचार के बारे में जानकारी दी। अतिथि स्वागत परिषद अध्यक्ष विनीता बांठिया, सचिव संगीता सेठिया, संस्थापक अध्यक्षा स्नेहलता डुंगरवाल ने किया। राखीजी रांका व इंदौर परिषद के अध्यक्ष तेजकुमार बम्बोरिया भी मौजूद थे। मंगलाचरण जया भंडारी ने प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन सोनल चंडालिया ने किया। शिविर संयोजिका एवं कार्यक्रम की लाभार्थी नीता विशाल जैन, विजया विपिनमोदी एवं सोनाली अन्तिम मोदी ने सब का आभार व्यक्त किया। श्री सुधीरजी सेठिया के सहयोग की सराहना की। तीन दिन चले इस शिविर में 180 लोगों का नैत्र परीक्षण एवं उपचार किया गया।

– विनिता बांठिया

पुण्य सम्राट का जन्मोत्सव अपूर्व उत्साह के साथ मना

* **महिदपुर।** त्रिस्तुतिक श्रीसंघ व अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के तत्वावधान में राजेन्द्र सूरी ज्ञान मंदिर में पुण्य सम्राट राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का जन्मोत्सव गुरुदेव के जयघोष के साथ भक्तिभाव से उल्लास व उत्साह के साथ श्रद्धापूर्वक मनाया गया। प्रातः नरेन्द्र कुमार मोतीलाल धाड़ीवाल परिवार की ओर से सामायिक मण्डल का आयोजन किया गया। दोपहर में जयंतसेन सूरी अष्टप्रकारी पूजन माणक लाल छाजेड़परिवार की ओर से महिला मण्डल ने पढ़ाई। पश्चात शास. चिकित्सालय में मरीजों को फलफ्रूट व चाय, बिस्किट का वितरण सुरेश छजलानी परिवार की ओर से किया गया। शाम को आकर्षक रांगोली बनाकर दीप प्रज्ज्वलित कर दादा गुरुदेव व जयंतसेनसूरी की आरती की गई। आरती में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं व पाठशाला के छात्रों ने भाग लिया।

- नरेन्द्र धाड़ीवाल

* पुण्य सम्राट लोकसंतश्री जयंत सेनसूरिजी के 83 वें जन्मोत्सव पर बदनावर राजेन्द्र महिला परिषद के द्वारा 83 दीपक व रंगोली बनाई गई, स्नात्र पूजा व श्री जयंतसेन सूरिजी महापूजन पढ़ाई गई लाभार्थी : श्री राजेन्द्र कुमारजी ललवानी परिवार शाम को जाप, गुरु इक्कीसा य आरती परिषद परिवार द्वारा की गई। लाभार्थीः श्री शांतिलालजी डूंगरवाल परिवार।

* **दसाई।** अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन बालिका परिषद की मीटिंग रखी गई। सभी की सहमती से बालिका परिषद का पुनःर्गठन किया गया। जिसमें अध्यक्ष याशिका मंडलेचा, उपाध्यक्ष नेहा मंडलेचा, कोषाध्यक्ष मुस्कान पावेचा, सचिव युक्ता मंडलेचा को मनोनीत किया गया व दो नए पद शामिल किए। पहला वैय्यावच्च जिसमें जेनम राठौड़ व परिधि पिपाड़ा। दूसरा सामायिक मंडल भी शुरू किया जिसमें पूजा मंडलेचा को मनोनीत किया गया।

साथ ही प्रति रविवार को सामूहिक सामायिक व स्नात्र पूजा रखने का नियम दिया गया। रविवार के दिन बालिका परिषद् द्वारा स्नात्र पूजा पढ़ाई गई। श्रीसंघ व परिषद परिवार द्वारा बालिका परिषद् की बहुत-बहुत अनुमोदना की गई।

- रेखा कमल राठौड़ दसाई

* **मंदसौर।** साध्वी पुण्य दर्शनाश्रीजी मसा. के सान्निध्य में प्रदेश महामंत्री हेमा हिंगड़ व

श्रीमती सुनिता खाबिया
अध्यक्ष

श्रीमती आशा दुग्गड़
सचिव

प्रदेश शिक्षामंत्री निर्मला लोढ़ा, शिक्षा मंत्री भारती पोरवाल, प्रचार मंत्री टीना हिंगड़, माधुरी खाबिया, संगठन मंत्री सुषमा

लोढ़ा, शकुंतला सोनगरा, सांस्कृतिक मंत्री अंशु बाफना, रंजीता संघवी, वैयावच्च समिति सुभद्रा चपड़ोद, लीला चपड़ोद, विनीता कर्नावट, सरेकुंवर डोसी, संध्या पोरवाल, केन्द्रीय कार्यकारिणी में निर्मला लोढ़ा, विजय लोढ़ा को नियुक्त किया गया। इस अवसर पर सीमा चंडावला, लीला खाबीया, राखी हिंगड़, वंदना हिंगड़, शीला लोढ़ा, सीमा बाफना, सुनीता चपडोद आदि उपस्थित थे।

गुरु सप्तमी मनाई

बदनावर। बदनावर में गुरु सप्तमी के उपलक्ष्य में बदनावर महिला परिषद् की बहनों ने लक्ष्मी गोशाला में जाकर गायों को चारा खिलाया और इसी पावन अवसर पर महिला परिषद की मीटिंग रखी गयी व श्रीमती सुनीता डूंगरवाल की अध्यक्षता में पुनर्गठन किया गया।

जिसमें अध्यक्ष श्रीमती संगीता ललवानी, उपाध्यक्ष- श्रीमती प्रीति चोरड़िया, सचिव- श्रीमती रानू लोढ़ा, सहसचिव- श्रीमती रानू ओरा, कोषाध्यक्ष- श्रीमती मोनिका डूंगरवाल, संरक्षक- श्रीमती धनसुखबाला डोसी, श्रीमती उर्मिला डूंगरवाल, शिक्षामंत्री- श्रीमती रंजना व्होरा, प्रचारमंत्री-श्रीमती सुनीता डूंगरवाल, संगठन मंत्री - श्रीमती मोनिका मूणत को ममता ललवानी, मधुजी डूंगरवाल, सोनिका डोसी, कुसुम राठोर, दीपिका बाफना, मिनाली चोरड़िया, दिप्ती चोरड़िया, शोभा सोनी, साधना लोढ़ा, संगीता मूणत, ऋतू चोरड़िया की सदस्यता में बनाया गया।

शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न

जावरा। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा जावरा का शपथ ग्रहण समारोह राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू की अध्यक्षता एवं श्रीसंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शांतिलालजी दसेड़ा, परिषद के राष्ट्रीय महासचिव श्री अशोक श्रीश्रीमाल, राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी श्री ब्रजेशजी बोहरा, राष्ट्रीय पर्यावरण मंत्री एवं जावरा नगर पालिका अध्यक्ष श्री अनिलजी दसेडा, श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री बाबूलालजी तान्तेड़ के आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। अतिथियों के साथ ही मंच पर परिषद के अध्यक्ष पारसजी सकलेचा, परिषद के महामंत्री धर्मेन्द्रजी का तातेड़, श्रीसंघ के प्रांतीय सहमंत्री श्री सुरेन्द्रजी पोखरना, श्री यशवंतजी चोरड़िया, श्री सुरेशजी चोरड़िया, श्री अनिलजी धारीवाल, श्री प्रवीणजी कोलन ने

मंच को सुशोभित किया। अतिथि द्वारा गुरुदेव के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। विकासजी वन्यक्या द्वारा मंगलाचरण पाठ किया गया। श्रीमती अंजू धर्मेन्द्रजी तातेड़ द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। उसके पश्चात अतिथियों का परिषद के सभी साथियों द्वारा मालाओं से स्वागत किया गया।

स्वागत् उद्बोधन पारस सकलेचा द्वारा किया गया। धर्मेन्द्र तातेड़ द्वारा वर्षभर की गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। उसके पश्चात सभी अतिथियों ने सभा को संबोधित किया एवं अपना अमूल्य मार्गदर्शन प्रदान किया। परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू ने बच्चों की धार्मिक शिक्षा एवं संस्कार पर जोर दिया। राष्ट्रीय महासचिव ने नवीन पदाधिकारियों को शपथ दिलाई। अशोकजी नौलक्खा, संजय धारीवाल, संजय तातेड़, अमिल चोरड़िया, जितेन्द्र मेहता, अरविंदजी जैन, पंकज मोदी, हितेश मेहता, आशीष चोरड़िया एवं विकास वन्याक्या, यतीन्द्र ज्ञानपीठ परीक्षा केन्द्र अध्यक्ष प्रदीप सिसोदिया ने शपथ ली। साथ ही परिषद की नवीन कार्यकारिणी सदस्यों ने भी शपथ ग्रहण की। उसके पश्चात् अध्यक्ष पारसजी सकलेचा द्वारा अपने 2 वर्ष के कार्यकाल में जिन सदस्यों का अमूल्य सहयोग मिला उनका बहुमान किया। अध्यक्षीय अवॉर्ड से सम्मानित किया। प्रकाशजी मोदी, संदीपजी जागीदार, विजयीज तान्तेड़ का विशिष्ट सहयोग के लिए बहुमान किया गया। उसके पश्चात् परिषद के नवीन अध्यक्ष श्री अशोकजी नवलक्खा ने परिषद को नई ऊंचाइयां प्रदान करने की अपनी योजनाओं से अवगत कराया। परिषद को आक्सीजन मशीन हेतु 7777 की राशि दान की। आभार परिषद के सचिव श्री रविजी चोरड़िया ने माना। कार्यक्रम का संचालन संजय धारीवाल एवं ज्योति संजयजी काठेड़ द्वारा किया गया।

– संजय तांतेड़

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा इंदौर जयन्त द्वारा

पुण्य सम्राट के पाटोत्सव पर कार्यक्रम आयोजित

इंदौर। गुमाश्ता नगर क्षेत्र की परिषद् अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा इंदौर जयन्त द्वारा पुण्य सम्राट परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा के पाटोत्सव के पावन प्रसंग पर श्री सीमंधर स्वामी जिनालय में श्री शांति स्नात्र महोत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें अनेक श्रद्धालुओं ने अत्यन्त उत्साह, हर्ष, उमंग के साथ प्रभु का जन्म कल्याणक महोत्सव रूप स्नात्र महोत्सव मनाया।

श्री गुमाश्ता नगर श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री धर्मचंदजी बोहरा के अलावा श्रीसंघ के अनेक सदस्य एवं महिला परिषद् सदस्य, श्री राजेन्द्र जयन्त धार्मिक पाठशाला के बच्चे, पाठशाला शिक्षिका श्रीमती सोनल जैन, विजया मोदी, सुधर्मा जैन आदि इस अवसर पर उपस्थित थे। कार्यक्रम के संपूर्ण लाभार्थी श्री सुधीरजी-संगीताजी सेठिया (महामंत्री, महिला परिषद् गुमाश्ता नगर) थे।

कार्यक्रम के अंत में नवकारशी का आयोजन किया गया। महोत्सव में पधारे समस्त महानुभावों का स्वागत परिषद् अध्यक्ष अनूप बोहरा एवं अंत में आभार महामंत्री पीयुष रूनवाल द्वारा व्यक्त किया गया।

ज्ञान पीठ परीक्षार्थियों का सम्मान

रतलाम। परम पूज्य राष्ट्र संत ज्ञानवारिधी श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरिजी म.सा. के 35 वें पाटोत्सव एवं अ.भा. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार के शपथ विधि समारोह 16 फरवरी रविवार को श्री सुधीरजी लोढ़ा के आतिथ्य एवं श्री सुशील भाई छाजेड़ (अ.भा. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद जन कल्याण मंत्री) के सान्निध्य में श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ परीक्षा के परिक्षार्थी का पुरस्कार वितरण किया गया।

इस वर्ष 2018 में रतलाम से 28

परीक्षार्थियों ने भाग 1 से 6 तक की परीक्षा दी जिसमें अ.भा. स्तर पर (47 केन्द्रों) रतलाम के 5 विद्यार्थी प्रावीण्य सूची में आए। श्रीमती सारीका लोढ़ा, श्रीमती रीना कोठारी, श्रीमती रमिला बरबोटा, कु. मानसी मेहता एवं श्री प्रवीणजी बरबोटा को विशेष पुरस्कार दिए गए।

28 में से 13 विद्यार्थी प्रावीण्य सूची में एवं 12 प्रथम स्थान पर 3 द्वितीय स्थान पर आए। ज्ञानपीठ द्वारा श्री रमेश भाई धरू द्वारा सम्यक ज्ञान अभिवृद्धी योजना से सभी पास हुए परीक्षार्थियों को 100 से लगाकर 1000 रु. तक की पुरस्कार राशी प्राप्त हुई जिसमें रतलाम परिषद पाठशाला द्वारा भी 100/- से 501/- तक की राशी पुरस्कार में दी गई। श्री विजयजी सुराना नवीन अध्यक्ष एवं श्री गेंदालालजी सकलेचा, श्री कांतिलालजी ओरा, श्री संजय भाई कोठारी व सुरेन्द्र गंग पाठशाला संचालकों द्वारा पुरस्कार वितरण में सहयोग किया गया एवं आगामी वर्ष होने वाली परीक्षा में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने हेतु विशेष निवेदन किया गया।

- सुरेन्द्र गंग

श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद का शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न

रतलाम। श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, महिला परिषद, तरूण परिषद और बालिका परिषद के अध्यक्ष, सचिव और कोषाध्यक्ष का संयुक्त शपथ ग्रहण समारोह रविवार को जयंतसेन धाम पर आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुधीर लोढ़ा ने कहा कि परिषद अपने उद्देश्यों को लेकर कार्य करने को सदैव तत्पर रहती है और नित नये सेवा प्रकल्पों को पूरा करने का प्रयास करती है। मानव सेवा ही सबसे बड़ी सेवा है। अध्यक्षीय उद्बोधन में राजेश खाबिया ने कहा कि परिषद एकजुट होकर कार्य करे और सबका साथ सबका विकास वाली बात को परिभाषित करते हुए समाज सुधार में सहायक बने। संघ

के अध्यक्ष डॉ. ओसी जैन ने भी चारों परिषद के पदाधिकारियों को आशीर्वचन दिए।

श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद अध्यक्ष विनय सुराना, सचिव प्रवीण संघवी एवं कोषाध्यक्ष विपिन भंडारी, महिला परिषद अध्यक्ष मंजू मेहता, सचिव चंदा चौरड़िया, कोषाध्यक्ष श्रद्धा लुणावत, तरूण परिषद अध्यक्ष रोमित खेड़ावाला, सचिव विनायक मूणत, बालिका परिषद शालिनी ओरा, रिंकी लोढ़ा को शपथ अधिकारी सुशील छाजेड़ ने शपथ ग्रहण कराई एवं चारों परिषद के संचालक मंडल की घोषणा की।

कार्यक्रम में पुण्य सम्राट आचार्य विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी के 36वें आचार्य पाट महोत्सव पर गुणानुवाद सभा एवं अष्टप्रकारी पूजन का आयोजन भी किया गया। परिषद की सेवा गतिविधि के अन्तर्गत काटजू नगर स्थित शासकीय स्कूल के बच्चों को पाठ्य सामग्री वितरित की गई। यतीन्द्र ज्ञानपीठ परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में राजेन्द्र लुणावत, मुकेशओरा, रमीला सकलेचा, प्रांजल कांठी, पंकज राठौर, प्रदीप श्रीमाल, धर्मेन्द्र रांका, सतीश खेड़ावाला, विनोद पोरवाल, नीलेश तलेरा, अंकित भटेवरा सहित चारों परिषद के सदस्यगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन राजकमल दुग्गड़ ने किया और आभार प्रवीण संघवी ने माना।

नवीन कार्यकारिणी का गठन

विनायक मूणत

विनायक मूणत

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद् की नवीन कार्यकारिणी का गठन एवं शपथ विधि समारोह 17 फरवरी 2019, रविवार को सागोद रोड स्थित जयंत सेन धाम पर सम्पन्न हुआ, जिसके अंतर्गत अध्यक्ष रोमित जैन, सचिव विनायक मूणत, उपाध्यक्ष मेहूल कोठारी, कोषाध्यक्ष भूपेश कटारिया के साथ पदाधिकारीगण के रूप में यश रुणवाल, हर्ष खाबिया, अक्षत जैन, सुयश सुराना, यश जैन, आनंद जैन को मनोनित किया गया। प्रचारमंत्री सुयश सुराना ने बताया कि इस अवसर पर मुख्य अतिथी श्री सुधीर लोढ़ा, श्री संघ समाज के अध्यक्ष ओ.सी. जैन, सुशील छाजेड. विनय सुराना, राजेश खाबिया, राजकमल जैन, अर्पित आंचलिया, प्रांजल काठी आदि उपस्थित थे।

जैन विश्व

* सांगली (महाराष्ट्र)। सुश्राविका 66 वर्षीय श्रीमती ज्योतिबहन रणजीत कुमार शाह ने 17 जनवरी 2019 को 180 उपवास का सानन्द पारणा किया। अब उनकी भावना आजीवन एकातरा करने की है।

* हैदराबाद में श्री हींकार तीर्थ ट्रस्ट द्वारा श्री जसराजजी श्रीश्रीमाल को 'जैन रत्न' उपाधि से विभूषित किया गया।

* मुंबई (भिवण्डी)। स्थित गोकुल नगर के श्री राकेश कोठारी ने पूरे परिवार वे स्वयं पत्नी सीमा, बेटा मीत तथा बेटी शैली ने दीक्षा ग्रहण की है। कार्यक्रम श्री शंखेश्वर पर हुआ।

* पेटा इंडिया द्वारा हॉटेस्ट वेजिटेरियन सेलेब्रिटीज प्रतियोगिता में इस वर्ष श्री शाहिद कपूर तथा श्री सोनम कपूर को पुरस्कृत किया गया। दोनों के चयन का आधार शाकाहारी होना है।

* गुरु श्री प्रेम शताब्दी समारोह मुंबई में 20 से 24 मार्च तक आयोजित किया जायेगा।

* उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने प्रदेश सरकार को अवैध बुचड़खानों को लेकर की गई कार्यवाही पर विस्तृत रिपोर्ट देने का आदेश दिया है।

* नगर रामजी का गोल स्थित श्री आर्यगुण गुरुकृपा जैन तीर्थ के अधिनायक श्री मेरुतुंग पार्श्वनाथ जिनालय व दादावाड़ी के ध्वजारोहण दिवस पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

* बैंगलोर - श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ बैंगलोर एवं श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ शांतिनगर बैंगलोर के संयुक्त तत्वावधान में इतिहास मार्तण्ड आचार्य भगवंत श्री हस्तीमलजी म.सा. का 109 वां पावन जन्म दिवस व मरूधर केसरी प्रवर्तक श्री मिश्रीमलजी म.सा. का 35 वां पावन स्मृति दिवस 'दो-दो सामूहिक सामायिक साधना' से अपार श्रद्धा भक्ति व गुण गरिमा-महिमा वर्णन के साथ मनाया गया।

* पालीताना में पन्यास श्री वैराग्यरत्नविजयजी म.सा. की निश्रा में भी शत्रुंजय महातीर्थ की अध्यक्ष नवाणुयात्रा का आयोजन किया गया जिसमें 200 आराधकों ने भाग लिया।

* रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलोजी (आरएफजे) के मानद् अध्यक्ष सुश्रावक सुरेन्द्रभाई मणिलालभाई का स्वर्गवास हो गया। 1923 में पालनपुर (गुजरात) में जन्मे मेहता 1983 में आरएफजे के अध्यक्ष बने और उसके बाद जीवनपर्यन्त अध्यक्ष रहे।

कवर पृष्ठ 4 का शेष

* चैत्र शुक्ला 15 को श्रीं जयंतसेन म्युजियम मोहनखेड़ा तीर्थ पर चातुर्मास की उद्घोषणा।
* 25 अप्रेल 2019 को ग्राम झकनावदा में श्री केसरिया नाथजी प्रभु, गणधर और गुरुदेव श्री की प्रतिष्ठा।
* दिनांक 26 अप्रेल को श्री जयंतसेन म्युजियम मोहनखेड़ा तीर्थ पर पूज्य पुण्य सम्राट गुरुदेव श्री की वार्षिक द्वितीय तिथि का महोत्सव।
* दिनांक 23 मई को अहमदाबाद में आत्मोद्धार- तीन का आयोजन जिसमें सामूहिक दीक्षाएँ सम्पन्न होंगी।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी देहरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि. मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ, निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

उम्मेदाबाद में गुरु मंदिर प्रतिष्ठोत्सव सम्पन्न

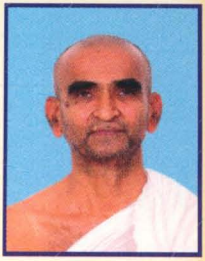

उम्मेदाबाद में सेठ कुन्दनमल रिखबचन्द मुन्नीलाल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा निर्मित गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरि गुरु मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा जैनाचार्य विजय जयरत्नसूरीश्वरजी महाराज की शुभ निश्रा में धूमधाम से सम्पन्न हुई। प्रतिष्ठा कार्यक्रम को लेकर सवेरे से ही लाभार्थी परिवार व समाज बन्धुओं का सजधज कर प्रतिष्ठा स्थल पर आना प्रारंभ हो गया था।

लाभार्थी परिवार द्वारा गुरुदेव राजेन्द्रसूरि की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा कर विराजमान किया गया। इसी तरह शिखर पर स्वर्ण कलश व ध्वजारोहण किया गया। वहीं श्रद्धालुओं ने गुरुदेव के जयघोष लगाने शुरू किये तथा बैंडबाजों की सुमधुर स्वर लहरियों पर युवक-युवतियां झूमने लगे जिससे पूरा वातावरण धर्ममय हो गया। दोपहर में वृहद अष्टोत्तरी शांतिस्नात्र महापूजन का आयोजन किया गया। जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि उम्मेदाबाद में तपागच्छ, खरतरगच्छ एवं त्रिस्तुतिक आम्नाय के सभी गुरु मन्दिरों का निर्माण एवं प्राण प्रतिष्ठा से पूरे जिले में सामाजिक एकता व समरसता की अनूठी पहचान स्थापित की है।

सेठ परिवार की ओर से आचार्य भगवन्त मुनि और साध्वीवृन्द को कामली अर्पण की गई। वहीं विधायक श्री जोगेश्वर गर्ग का भी बहुमान किया गया। श्री चम्पालाल रांका ने उम्मेदाबाद संघ की ओर से आभार व्यक्त करते हुए उम्मेदाबाद संघ द्वारा हर संभव सेवा एवं समर्पण करने की बात कही। मंच संचालन श्री किशोर लुंकड ने किया। सेठ श्री हीराचन्दजी ने सभी अतिथियों एवं सहयोगियों का आभार प्रकट किया।

काश्यपजी की अपूर्व घोषणा

अ.भा. श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीत त्रिस्तुतिक जैन संघ के राष्ट्रीय परामर्शदाता तथा रतलाम शहर के विधायक (भाजपा) श्री चेतन्यजी काश्यप ने राज्य विधानसभा में भाषण देते हुए वेतन, भत्ता तथा पेंशन नहीं लेने की घोषणा की जिसका सभी विधायकों ने मेजे थप थपाकर स्वागत किया।

अ.भा.श्री सौधर्म बृहत त्रिस्तुतिक जैन संघ तथा अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा इस हेतु श्री चेतन्य काश्यप का हार्दिक अभिनन्दन ।

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/18-20
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- वर्ष-66, अंक-3 कुल पृष्ठ कवर सहित - 88

सियाणा, अमरसर, रानी में प्रतिष्ठोत्सव शान से

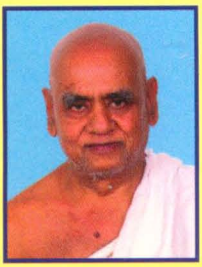

सायला। अमरसर ग्राम में वासुस्वामी जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ एवं श्री राजराजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर गुरु मंदिर ट्रस्ट के तत्वावधान में व गच्छाधिपति आचार्य प्रद्युम्न विमलसूरीश्वर महाराज एवं गच्छाधिपति आचार्य नित्यसेनसूरीश्वर महाराज की निश्रा में श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा धूमधाम से सम्पन्न हुई। शुभ मुहूर्त में मंत्रोच्चार के साथ मंदिर के गर्भगृह में लाभार्थी परिवार द्वारा गुरुदेव राजेन्द्रसूरिजी की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा कर विराजमान किया गया। इसी तरह शिखर पर स्वर्ण कलश व ध्वजारोहण किया गया। इस दौरान आकाश से हेलिकॉप्टर द्वारा पुष्प वर्षा की गई। आचार्य भगवन्त, मुनि एवं साध्वीवृन्द को कामली अर्पण की गई। फलेचुन्दड़ी का आयोजन भी हुआ।

* गच्छाधिपति धर्म दिवाकर श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी एवं जैनाचार्य श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि आचार्यगण, मुनिमण्डल, साध्वी समुदाय की निश्रा में सियाणा नगर में भव्यातिभव्य अंजनशलाका-प्रतिष्ठा सम्पन्न कर दोनों आचार्यगण विहार करते हुए (सरत) अमरसर नगर पधारे जहाँ गुरु मंदिर की प्रतिष्ठा करवाकर वहाँ से रानी स्टेशन की ओर विहार किया। रानी में 1 मार्च को प्रतिष्ठा सम्पन्न कराकर अगले कार्यक्रम हेतु विहार कर दिया।

आगामी कार्यक्रम

* दिनांक 9 मार्च को सिरोही-पावापुरी हाइवे रोड़ पर मीरपुर तीर्थ से 1 कि.मी. पहले सिरोही से 8 कि.मी. पर श्री शंखेश्वर राजेन्द्र धाम में प्रवेश तथा 13 मार्च को भव्य अंजन शलाका प्रतिष्ठा महोत्सव। वहाँ से मध्यप्रदेश की ओर विहार।
* चैत्र मास/ अप्रेल में मोहनखेड़ा पहुँचना। जहाँ पर पूज्य दोनों आचार्यों की निश्रा में श्री नवपद ओली आराधना श्री जयंतसेन म्यूजियम पर।
* चैत्र शुक्ला 13 महावीर जयंती के दिन राजगढ़ में श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा की अंजन शलाका तथा प्रतिष्ठा।

शेष पृष्ठ 82 पर

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001